रहस्य गीताञ्जली...धारा...39...

-आध्यात्मिक रहस्यवादी आचार्यश्री कनकनन्दी जी

पुण्य-स्मरण

नन्दौड़ग्राम के एक घर में निराडम्बर
चातुर्मास के उपलक्ष्य में

अर्थ सौजन्य

1. श्रीमती सुलोचना नरेन्द्र पाल जी
   पुत्र-पुत्रवधु - श्री विजयेश-श्रीमती पूनम, श्री महावीर-श्रीमती झरना
   श्री चन्द्रेश-श्रीमती वैशाली
   पौत्र-पौत्री - हिमांशु, गौरवी, भव्य, विश्वा कोटड़िया परिवार, से. 11, उदयपुर
2. श्री भरत कुमार शाह एवं श्रीमती प्रेमलता, माण्डव

ग्रंथांक-243 प्रतियाँ-500
संस्करण-2015 मूल्य-51/-

सम्पर्क सूत्र व प्राप्ति स्थान

आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव द्वारा आशीर्वाद प्राप्त
(1) धर्म-दर्शन सेवा संस्थान
द्वारा-श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा
चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर, आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास,
उदयपुर (राज.)-313001/मो. 097832-16418

(2) डॉ. नारायणलाल कछारा
सचिव-धर्म-दर्शन सेवा संस्थान
55, रवीन्द्रनगर, उदयपुर (राज.)-313001
फोन नं. 0294-2491422/मो. 092144-60622
E-mail:nlkachhara@yahoo.com

आद्य प्रवर्तक आदिनाथ स्तवन

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : शान्तिनाथ स्तवन....., शिव ताण्डव स्तोत्रम्.....)

अनादि कर्म नाशकः...अनंत गुण धारकम्...
आदि तीर्थ प्रवर्तकः...नमामि आदि तीर्थेशम्...(1)
आदि शिक्षा दायकः...आदि न्याय दायकः...
आदि प्रजा पालकः...लोक-नीति दायकः...(2)
आदि दीक्षा धारकः...ऋद्धि सम्पन्न साधकः...
घाति कर्म नाशकः...आदि धर्म प्रवर्तकः...(3)
अनंत ज्ञान धारकः...विश्व गुरु तीर्थेशः...
सर्व तत्त्व प्रकाशकः...मोक्षमार्ग प्रदर्शकः...(4)
परम सत्य बोधकः...पर तत्त्व द्योतकः...
आत्म तत्त्व ज्ञायकः...भेद-ज्ञान दायकः...(5)
अघाति कर्म नाशकः...सिद्ध-बुद्ध ज्ञायकः...
चिदानन्द धारकः...प्रभुः विभुः लोकेशः...(6)
अनंत गुण धारकः...ज्ञायक आत्मस्थः...
लोकालोक ज्ञायकः...निर्लिप्त निरञ्जनः...(7)
भव्य जीव सेवितम्...श्रमण वृन्द पूजितम्...
आदर्श गुण मण्डितम्...'कनक' तव पूजकः...(8)

पाड़वा, दिनांक 12.07.2015, मध्याह्न 3.05

(यह कविता श्रमण मुनि सुविज्ञसागर जी की भावना से बनी।)

आध्यात्म योगी-स्वाध्याय तपस्वी गुरुवर

-श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

(चाल : इस जमाने में-इस मुहब्बत में.....)

इस जमाने मेंऽऽऽ विश्वधरा मेंऽऽऽ कितने सहज हैंऽऽऽ कितने सरल हैंऽऽऽ
आध्यात्म योगी ऋषिवर...कनकनन्दी हैं...
स्वाध्याय तपस्वी गुरुवर...सहजानन्दी हैं...आध्यात्म योगी...(स्थायी)...
बच्चों के जैसे हैं...निश्छल निर्विकारी...

बचपन से अध्ययन में...किया पुरुषार्थ है भारी...

वैज्ञानिक-संत...आध्यात्म नायक हो...
कल्पनाशील-अन्वेषी...सत्य-गुणग्राही हो...

महान् लेखक हैं...महाकवि हैं वे...अभीक्ष्ण ज्ञान के उपयोगी हैं...
मनन चिन्तन में निरंतर रमा करते हैं...आध्यात्म योगी...(1)

प्राचीन गुरुकुल के...आचार्यवर हैं...
आधुनिक विज्ञान के...आप प्रवक्ता हैं...

आध्यात्म-दर्शन का...होता समन्वय है...
धर्म-विज्ञान का...योग मणिकाञ्चन है...

नवाचार है...नवोन्मेष है...युगाचार है...तात्कालिक ज्ञान का...
आधुनिक विज्ञान परे तथ्य शोध करते हैं...आध्यात्म योगी...(2)

स्वाध्याय तप करते...साहित्य सृजन करते...
द्विशताधिक ग्रंथ...वैश्विक दृष्टि से रचे...

विश्वविद्यालय से...विश्व धर्म सभा तक...
सनम्र शोधार्थी जन...पी.एच.डी. करते...

यू.जी.सी. मान्य...उच्च साहित्य...देश-विदेशों मे...कक्ष स्थापन...
'सुविज्ञ' जन अनुमोदन सदा करते है...आध्यात्म योगी...(3)

गुरुकुल है महान्

-श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

(चाल : भारत देश महान्.....)

गुरुकुल है महान्ऽऽऽ...2
आचार्यवर/(कुलाधिपति) कनक ऋषि/(गुरु)
शिष्य है भाग्यवान्/(सौख्यवान्/ज्ञानवान्/योग्यवान्)...गुरुकुल है महान्...(ध्रुवपद)...

धर्म-दर्शन-आध्यात्म/(प्राचीन से आधुनिक तक) का...जोड़ रूप है ज्ञान...
आधुनिक विज्ञान से...परे है जिनका मान/(ज्ञान)...गुरुकुल...(1)

साधु-साध्वी-वैज्ञानिक जन...कुलपति पढ़ते...
न्यायविद् शिक्षाशास्त्री...'सुविज्ञ' जन पढ़ते...गुरुकुल...(2)

देश-विदेश से आते है...प्रगतिशील ज्ञानी...
शोध-बोध-अध्ययन करके...बने अग्रगामी/(पुरोगामी)...बने गुणी-ज्ञानी...गुरुकुल...(3)
ज्ञान का झरना झरता है...हर गतिविधियों में...
वैज्ञानिक-संगोष्ठी-शिविर...चर्चा-वार्ता में...गुरुकुल...(4)
राजा-चक्री को जो आनंद...मिला न महलों में...
ज्ञान-विज्ञान का सहजानन्द...इस गुरुकुल में...गुरुकुल...(5)
वैश्विक दृष्टि ज्ञानी परिषद्...हम सब शिष्यों की...
सनम्र सत्यग्राही बने...शिक्षा गुरुकुल की...गुरुकुल...(6)

समा है स्वाध्याय का

आचार्यश्री कनकनन्दी जी श्रीसंघ की अनूठी स्वाध्याय पद्धति

सृजन-श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

(चाल : ये समा...समा है ये प्यार का.....)
ये समा...समा है स्वाध्याय का...आत्म/(तत्त्व) चिन्तन का...
अंतरंग तप है आला...पञ्चम काल का...ये समा...(ध्रुवपद)...
धर्म-दर्शन-विज्ञान...समन्वय होता...2
जोड़ रूप ज्ञान होता...विविध विधा का...2...ये समा...समा है नवाचार का...(1)
साधु-साध्वी-वैज्ञानिक...कुलपति पढ़ते...2
न्यायविद् शिक्षाशास्त्री...विज्ञजन पढ़ते...2...ये समा...समा है गुरुकुल का...(2)
देश-विदेश से आते...प्रगतिशील ज्ञानी...2
शोध-बोध-अध्ययन करके...बने पुरोगामी...2...ये समा...समा है शोध-बोध का...(3)
ब्रह्माण्डीय-विज्ञान-कला...अलौकिक गणित...2
न्याय-राजनीति-भाषा...बहुआयामी शिक्षा...2...ये समा...समा विविध ज्ञान का...(4)
पीएच.डी. एम.फिल....डी.लिट् कर रहे...2
विश्व विद्यालयों में...साहित्य द्वारा...2...ये समा...समा है शोध केन्द्रों का...(5)
होता अपूर्व अनुभव...अपने स्वरूप का...2
'सुविज्ञ' जन मन में...सुखानंद होता...2...ये समा...समा है आनंद का...(6)

मैं हूँ (आ. कनकनन्दी) प्राथमिक विद्यार्थी क्योंकि
(सर्वज्ञ ही है स्नातक अन्य सभी प्राथमिक विद्यार्थी)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : चलो दिलदार चलो.....)

चलो! सत्यकामी चलो! ज्ञान अर्जन/(आराधना) करो!
संकीर्ण भाव छोड़ो! आध्यात्मिक भाव धरो!

संकीर्ण स्वार्थ छोड़ो! परमार्थ भाव धरो!
क्रोध-मान-माया छोड़ो! लोभ-मोह दूर करो!।। (1)

दुराग्रह सर्व छोड़ो! हठाग्रह नहीं करो!
वाद-विवाद छोड़ो! कुतर्क नहीं करो!

सत्यग्राही-नम्र बनो! जिज्ञासु ग्राही बनो!
तोता-रटन्त छोड़ो! अनुभव ज्ञानी बनो!।। (2)

इन्द्रियातीत बनो! यांत्रिक परे बनो!
मन से परे चलो! अमूर्तिक ज्ञान करो!

सर्वज्ञ आज्ञा पालो! प्रज्ञा को तीक्ष्ण करो!
सदाचार सदा पालो! स्वाध्याय सदा करो!।। (3)

मूढ़ता नहीं पालो! शठता नहीं करो।
प्रमाद दूर करो! आलस्य नहीं धरो!

पावन भाव करो! महान् लक्ष्य धरो!
संशय-भ्रम छोड़ो! सत्य-तथ्य ज्ञान करो!।। (4)

सर्वज्ञ बिना सभी होते अल्पज्ञ जीव,
लेखक दार्शनिक आचार्य वैज्ञानिक/(कवि) (जन)।

अधिवक्ता/(वकील) न्यायाधीश मंत्री व राष्ट्राधीश
अतः इनके ज्ञान नहीं है पूर्ण सत्य।। (5)

इनसे परे जानो! सत्य का होगा ज्ञान,
विद्यार्थी निज को मानो! सर्वज्ञ हेतु बढ़ो!

अज्ञान मोह हनो! राग-द्वेष को नाशो!

सर्वज्ञ तभी बनो! अन्यथा शिष्य बनो!।। (6)

सुमतिश्रुतज्ञान परोक्ष ज्ञान मानो,
केवलज्ञान ही है सर्व-प्रत्यक्ष-ज्ञान।

केवलज्ञानी ही है, यथार्थ से स्नातक,
स्नातक हेतु ही है, 'कनक' बना छात्र।। (7)

(कवि (आचार्य कनकनन्दी) स्वयं को छोटा-भोला छात्र मानने का रहस्य इस कविता में वर्णित है।)

त्याग एवं ग्रहण की मेरी साधना

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : छोटी-छोटी गैया.....)

वाद-विवाद व विसंवाद छोड़कर, साम्यवादी मुझे बनना है।
संकीर्ण पंथ-मत व दुराग्रह छोड़, अनेकांतवादी बनना है।। (1)

संकल्प विकल्प संक्लेश छोड़कर, 'शांति से साधना' करना है।
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि त्यागकर, 'सिद्धि हेतु स्वाध्याय' करना है।। (2)

'तेरा मेरा भेदभाव' त्यागकर, 'निस्पृह वीतरागी' बनना है।
'ज्ञानमद का प्रदर्शन' छोड़कर, 'आत्म उपदेशी' बनना है।। (3)

'कौन क्या बोलेंगे' का भाव छोड़कर, 'सत्य के मार्ग' पर ही चलना है।
'प्रशंसा' के लिए कुछ न करके, 'प्रशस्त काम' ही करना है।। (4)

'ढोंग पाखण्ड व प्रदर्शन' त्यागकर, 'आत्म दर्शन' ही करना है।
लन्द-फन्द व द्वन्द्व वैर छोड़कर, 'सरल सहज' ही बनना है।। (5)

'परोपदेशी' पंडित न बनकर, 'हित-मित-प्रिय' ही बोलना है।
'आदर्श बनो' कहने के पहले, 'स्वयं को आदर्श' बनाना है।। (6)

'धर्म प्रभावना' करने के पहले, 'आत्म प्रभावना' करनी है।
नाम बड़ाई प्रसिद्धि छोड़कर, 'आत्मा की सिद्धि' करनी है।। (7)

शक्ति अनुसार बाह्य तप/(त्याग) करूँ, 'अंतरंग साधना' सतत करूँ।
भौतिक निर्माण कार्य छोड़कर, 'आत्मिक निर्माण' का कार्य करूँ।। (8)

आकर्षण-विकर्षण (वैर) विरोध त्यागकर, 'आत्मानुशासन' मैं सदा करूँ।
पर निमित्तक तनाव छोड़कर, 'आत्मानुसंधान' मैं सतत करूँ।। (9)

अन्य के कर्तृत्व भाव त्यागकर, 'आकिंचन्य' बन सुखी बनूँ।
पर अहितकर भाव-व्यवहार छोड़कर, 'कनकनन्दी' 'आत्मानुभवी' बनूँ।। (10)

मेरी उपलब्धियों का मैं संवर्द्धन करूँ

(मेरी उपलब्धियों का उपयोग व दुरुपयोग बिन संवर्द्धन करूँ)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : तेरे प्यार का आसरा.....)

मेरी उपलब्धियों का मैं संवर्द्धन करूँगा, दुरुपयोग कभी नहीं करूँगा।
अति आवश्यकतानुसार सदुपयोग करूँगा, अनावश्यक उपयोग नहीं करूँगा।।

तीर्थंकरों के समान मैं यह करूँगा, उनसे शिक्षा लेकर यह करूँगा।
परम आदर्श मेरे तीर्थंकर है, अनुकरण करूँ मैं स्व-शक्ति अनुसार है।।

तीर्थंकर देव जब दीक्षा लेते हैं, चौसठ ऋद्धियाँ उन्हें प्राप्त होती हैं।
मनःपर्यय ज्ञान के हो जाते स्वामी, तथापि साम्यभाव से बनते ध्यानी।।

निस्पृह मौन से वे साधना करते, आत्म विशुद्धि को सतत बढ़ाते।
स्व-उपलब्धियों का दुरुपयोग न करते, दुरुपयोग बिन संवर्द्धन ही करते।।

ख्याति पूजा लाभ को भी वे नहीं चाहते, उपदेश धर्म का भी वे नहीं करते।
भक्त प्रति राग भी वे नहीं करते, शत्रु/(दुष्ट) प्रति द्वेष भी वे नहीं करते।।

भौतिक निर्माण हेतु भी नहीं कहते, धन-जन संग्रह भी नहीं करते।
परनिन्दा अपमान भी नहीं करते, आकर्षण-विकर्षण से विरक्त रहते।।

सर्वज्ञ बनने पर उपदेश भी करते, समवशरण का निर्माण देव करते।
वीतराग सहित उनकी प्रवृत्ति, राग द्वेष मोह से होती निवृत्ति।।

भावना भी मेरी ऐसी ही होती, द्रव्य क्षेत्र कालानुसार साधना होती।
द्रव्य क्षेत्र काल जब सुयोग्य पाऊँगा, 'तीर्थंकर सम ही' प्रवृत्ति करूँगा।।

भावना से भावी का निर्माण होता, द्रव्यादि निमित्त भी सहयोगी बनता।
वर्तमान से ही भविष्य निर्माण होता, 'कनक' इसी हेतु ही प्रयत्न करता।।

प्रशस्त काम व भाव सदा करूँगा, प्रशंसा हेतु मैं नहीं करूँगा।
पावन भावना से मिलता है मोक्ष, निदान भावना से बंधता है पाप।।

(वैज्ञानिक अग्रवाल, साधु आदि से मेरी प्रशंसा सुनकर इस कविता की रचना हुई।)

मुझे विश्व की सर्वोच्च उपलब्धि पाना है

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : सुनो-सुनो ऐ दुनिया वालों.....)

पाना है मुझे आध्यात्मिक महान् उपलब्धि है पाना।
जिसके समक्ष तुच्छ सभी है, इन्द्र-चक्रीत्व भी पाना।।

अनंत बार देव में उपजा, बना है राजा-महाराजा।
सेठ साहूकार धनपति बना, बना है सामान्य प्रजा।।

सत्ता-संपत्ति प्रसिद्धि पाया, चखा है अनेक मजा।
ख्याति पूजा लाभ व भोग किया, नहीं चखा है आत्मिक मजा।।

आत्म उपलब्धि ही है महान् उपलब्धि इसी से परे न कोई उपलब्धि।
इसी हेतु शांति-कुंथु-अरहनाथ, त्यागे हैं तीन-तीन भी पदवी।।

साधु बनते ही ऋद्धि प्राप्त हुई, चौसठ ऋद्धियों के बने वे स्वामी।
इन्द्र-चक्रियों से अधिक उपलब्धि, तो भी उससे हुए वैरागी।।

इन सबसे न मिले अनंत वैभव, जो है सच्चिदानन्द भाव।
अनंत ज्ञान दर्शन सुखवीर्य, जो है अक्षय अव्यय भाव।।

यदि वे पदवी या ऋद्धि से होते, आसक्त न मिलता अनंत वैभव।
संकल्प-विकल्प व संक्लेश युक्त, होते न पाते आत्म वैभव।।

बहुआरंभ-परिग्रह युक्त से, मिलता है नरक दुःख।
राजेश्वर सो नरकेश्वर, जहाँ मिलते है बहुविध दुःख।।

मुझे भी तीर्थंकर सम आत्मोपलब्धि, करना है एकमेव लक्ष्य।
इसके अनुकूल काम करना है, 'कनक' का अन्य कोई नहीं लक्ष्य।।

ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि द्वारा, मुझे न बढ़ाना है संसार।
इनके त्याग सह सर्व विभाव, त्यागना मेरा दृढ़ विचार।।

इन सबको त्यागकर साधु बना, पुनः क्यों करूँ इसे ग्रहण।
त्याग कर पुनः ग्रहण करना, यह है सभी मल ग्रहण।।

(दूसरों के ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि धन-जन-संस्थान-मठ-मंदिर आदि से अप्रभावी रहूँ। इसी उद्देश्य से यह कविता बनी।)

स्व-रहस्य ज्ञाता मैं बनूँ

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे तू काहे न धीर धरे....., सायोनारा....., मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे.....)

जिया रे! स्व-रहस्य जान ले तूऽऽऽ
स्व को जानो तो सर्वज्ञ बनोगेऽऽऽ ज्ञात होगा विश्व-रहस्यऽऽऽ...(ध्रुव)...

सूर्य यथा स्वयं होता प्रकाशितऽऽऽ अन्य भी होते प्रकाशितऽऽऽ
तू तो सूर्य से भी अधिक तेजस्वीऽऽऽ ब्रह्माण्ड होगा प्रकाशितऽऽऽ
स्व-प्रकाशी बन रेऽऽऽ जिया रे...(1)...

कोई भी वैज्ञानिक-दार्शनिक-कविऽऽऽ न जानते विश्व (सर्व) रहस्यऽऽऽ
आत्मज्ञ-सर्वज्ञ-केवली होतेऽऽऽ जानते स्व-पर/(विश्व) रहस्यऽऽऽ
तथाहि तू सर्वज्ञ बनऽऽऽ जिया रे...(2)...

तेरे अंदर है अनंत गुण-गणऽऽऽ तथाहि अनंत पर्यायऽऽऽ
चित-चमत्कार पूर्ण सच्चिदानंदऽऽऽ अनंत शक्ति सुखवान्ऽऽऽ
स्वयं को करो उद्घाटनऽऽऽ जिया रे...(3)...

अन्य के रहस्य जानने हेतुऽऽऽ अनेक पाते हैं मरणऽऽऽ
जो मरण वरता स्व-ज्ञान हेतुऽऽऽ वह (तो) पाता अमृत धामऽऽऽ
स्वयं को पूर्ण जानऽऽऽ जिया रे...(4)...

स्व-ज्ञान हेतु भले पर को जानोऽऽऽ जिससे करो भेद-विज्ञानऽऽऽ
भेद-विज्ञान से सर्वज्ञ बनकरऽऽऽ विश्व का करो तू दर्शनऽऽऽ
'कनक' अनन्तदर्शी बनऽऽऽ जिया रे...(5)...

आसपुर, दिनांक 23.06.2015, रात्रि 11.07

सर्वज्ञ बनने के पूर्व तक मैं हूँ विद्यार्थी

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : छोटी-छोटी गैया....., शत-शत वंदन.....)

कितना भी करे बी.ए. अथवा सी.ए., अथवा करे पीएच.डी. अथवा एम.ए.।
तथापि कोई न हो जाते मास्टर, वैज्ञानिक दार्शनिक या गणधर।।

सर्वज्ञ ही होते स्नातक मास्टर, त्रिकालज्ञ सर्वदर्शी सभी प्रकार।
गणधर भी सर्वज्ञ से पढ़ते पाठ, प्रश्न करते सर्वज्ञ से हजार साठ।।

इसी से शिक्षा मुझे मिलती सदा, ज्ञानार्जन करने की प्रबल श्रद्धा।
सनम्र सत्यग्राही बनूँ विद्यार्थी, सर्वज्ञ बनने तक बनूँ विद्यार्थी।।

स्वज्ञान हेतु अनंत ज्ञान चाहिए, एक परमाणु हेतु (यह) ज्ञान चाहिए।
अनंत जीव परमाणु (है) इस विश्व में, इसे जानने हेतु (भी) (अनंत) ज्ञान चाहिए।।

इसी हेतु (ही) मैं पुरुषार्थरत हूँ, ध्या-अध्ययन में सदारत हूँ।
मौन एकांत रूप में कर रहा हूँ, समता-शांति से जी रहा हूँ।।

देशी-विदेशी साहित्य पढ़ रहा हूँ, हर जीव से (भी) शिक्षा ले रहा हूँ।
प्रकृति से भी शिक्षा ले रहा हूँ, आधुनिक विज्ञान को पढ़ रहा हूँ।।

नीति-नियम व कानून-संविधान, गणित मनोविज्ञान स्वास्थ्य विज्ञान।
भविष्य ज्ञान हेतु स्वप्न व शकुन, राजनीति इतिहास से भी लेता हूँ ज्ञान।।

सुगुणी-दुर्गुणी से भी शिक्षा मैं लहूँ, सफलता-असफलता से शिक्षा मैं लहूँ।
अनुभव प्रयोग से भी ज्ञान बढ़ाऊँ, सर्वज्ञ बनने हेतु मैं (कनक) प्रयास करूँ।।

आसपुर, दिनांक 13.06.2015, प्रातः 7.33

ध्यान से बहुआयामी लाभ

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : नगरी-नगरी.....)

बड़ा सुख पाता आनंद आता, जब आत्मा का ध्यान करता।
आत्मज्ञान होता अज्ञान नशता, आत्मविश्वास मम प्रबल होता।। (स्थायी)

भेदज्ञान होता भेदभाव नशता, समता भाव विस्तार होता।
राग-द्वेष नशते मोहभाव घटते, आत्मगौरव का भान होता।।

इन्द्रिय मनातीत ज्ञान भी होता, यंत्र अनुमान से परे भी होता।
पुस्तकीय ज्ञान से परे भासता, तर्क-वितर्क परे ये होता।।

संकल्प नशते विकल्प घटते, संक्लेश द्वंद्व भी नहीं होते।
ईर्ष्या-तृष्णा घटती निस्पृहता आती, आत्मिक संतुष्टि तृप्ति होती।।

एकाग्रता बढ़ती चंचलता घटती, बुद्धि लब्धि प्रज्ञा बढ़ती।
टेन्शन छूटते डिप्रेशन घटते, तन-मन आत्मा भी स्वस्थ होती।।

ख्याति पूजा न भाती भीड़ न सुहाती, आकर्षण-विकर्षण भी नहीं होते।
भौतिकता न लुभाती आकुलता न होती, अहंकार-ममकार भी नहीं होते।।

लक्ष्य स्पष्ट हो तो संशय न होता, आध्यात्मिक विकास प्रबल होता।
अनुभव बढ़ता आत्मा ही सुहाता, अतएव 'कनक' को ध्यान भाता।।

आसपुर, दिनांक 09.06.2015, मध्याह्न 2.25

स्वाध्याय एवं अध्यापन से लाभ

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : भातुकली....., नगरी-नगरी....., तुम दिल की धड़कन.....)

बड़ा सुख पाता आनंद आता, जब स्वाध्याय-अध्यापन होता।
ज्ञानार्जन होता-ज्ञानदान होता, स्व-पर विश्व कल्याण होता।।ध्रु.।।

भेदज्ञान होता, वैराग्य बढ़ता, नित-नित संवेग भाव बढ़ता।
तन-मन स्थिर (व) एकाग्र भाव होता, इन्द्रिय कषायों से विराम होता।।

रत्नत्रय ज्ञान होता स्वयं का भान, गुण-दोष विवेक प्रगट होता।
हिताहित ज्ञान होता, अहित त्याग होता, उपेक्षणीय में उपेक्षा भाव होता।।

ज्ञान का ज्ञान होता, अज्ञान भी भासता, राग द्वेष मोह का भी ज्ञान होता।
द्रव्यों का ज्ञान होता, विश्व का भान होता, संसारी, मुक्तों का ज्ञान होता।।

कर्मों का ज्ञान होता, मोक्ष का भान होता, मोक्षमार्ग का (भी) परिज्ञान होता।
चारित्र ज्ञान होता, समिति का भान होता, दशविध धर्म का भी ज्ञान होता।।

भौतिक से ब्रह्माण्ड का ज्ञान होता, स्व-पर मत का भी ज्ञान होता।
आत्मविश्वास-आत्मज्ञान भी बढ़ता, परम तपमय स्वाध्याय होता।।

विश्लेषण व समीक्षा शक्ति बढ़ती, अध्यापन कराने की योग्यता आती।
वाग्मिता शक्ति, प्रवचन की दक्षता, दूरदृष्टि समन्वय की शक्ति बढ़ती।।

सहिष्णुता आती व्यापकता बढ़ती, समता शांति की भी वृद्धि होती।
वीतरागता बढ़ती धैर्य शक्ति आती, निस्पृह-अनासक्ति (की) भावना होती।।

अध्यापन से लाभ होता ज्ञान दान भी होता, प्रभावना का भी कारण बनता।
वात्सल्य बढ़ता अज्ञान दूर होता, उपरोक्त गुणों को भी श्रोता पाता।।

कर्म की निर्जरा होती श्रद्धा प्रज्ञा बढ़ती, मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति होती।
सातिशय पुण्य बढ़े अंत में मोक्ष मिले, 'कनकनन्दी' की अतः इसमें मति।।

आसपुर, दिनांक 09.06.2015, रात्रि 12.22

वैज्ञानिकों से भी मुझे बनना आध्यात्मिकता में श्रेष्ठ

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे! तू काहे न धीर धरे....., मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे....., सायोनारा.....)

जिया रे! उदार-सहिष्णु बनऽऽऽ
उदार वैज्ञानिक जन सेऽऽऽ अधिक उदार तू बनऽऽऽ...(ध्रुव)...

वे तो भौतिक वैज्ञानिक हैऽऽऽ तू तो आध्यात्मिक संतऽऽऽ
उनसे तुमको अनंत गुणितऽऽऽ होना है उदार संतऽऽऽ
आध्यात्मिक होता अनंतऽऽऽ/(अनंत गुण युक्त बनऽऽऽ) जिया रे...(1)

संकीर्ण पंथ-मत परे वेऽऽऽ करते है सत्य का शोधऽऽऽ
उनसे अधिक रूप से तुझेऽऽऽ करना (है) परम सत्य-शोधऽऽऽ
तुम तो सर्वज्ञ उपासकऽऽऽ जिया रे...(2)...

हर जीवों की रक्षा हेतु वेऽऽऽ कर रहे सतत प्रयासऽऽऽ
उनसे अधिक तुमको भाना हैऽऽऽ व्यापक अहिंसा रूपऽऽऽ
तू तो समता उपासकऽऽऽ जिया रे...(3)...

पृथ्वी की रक्षा हेतु वे तोऽऽऽ पर्यावरण सुरक्षा हेतुऽऽऽ
कर रहे प्रयास तो तुम कोऽऽऽ भाना है (भावना) विश्व कल्याण हेतुऽऽऽ
विश्व मंगल कामनाऽऽऽ जिया रे...(4)...

सत्य/(भौतिक) शोध-बोध-प्रयोग हेतुऽऽऽ वे करते बहु यत्नऽऽऽ

परम सत्य/(आत्मा) के शोध/(बोध) हेतुऽऽऽ तू कर पूर्ण प्रयत्नऽऽऽ
आत्म शोधक बन रेऽऽऽ जिया रे...(5)...

वे तो इन्द्रिय-यंत्र-बुद्धि सेऽऽऽ करते उपरोक्त सभी कामऽऽऽ
आत्म-शक्ति के द्वारा तुमकोऽऽऽ करना है उक्त सभी कार्यऽऽऽ
अन्तः प्रज्ञा से कार्य करऽऽऽ जिया रे...(6)...

इहलोक हित हेतु करते वे कार्यऽऽऽ तुम तो सर्वलोक हेतुऽऽऽ
अतएव तुमको अनंत गुणितऽऽऽ करना है मोक्ष के हेतुऽऽऽ
'कनक' अनंत गुणी बनऽऽऽ जिया रे...(7)...

आसपुर, दिनांक 24.06.2015, मध्याह्न 12.25

(महान् उदार सत्यग्राही वैज्ञानिक फ्रित्जॉफ काप्रा की शोधपूर्ण कृति "The Tao of Physics-भौतिकी का सतपथ" पुस्तक से भी प्रेरित व प्रभावित यह कविता...)

भारतीय ग्रंथों से आध्यात्मिकता व पाश्चात्य से प्रायोगिकता सीखता हूँ!

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : आत्मशक्ति से ओतप्रोत.....)

आध्यात्मिक सीखूँ मैं भारतीय ग्रंथों से...प्रायोगिकता सीखता हूँ मैं पाश्चात्य से...
दोनों से ही लाभान्वित मैं हो रहा हूँ...सर्वांगीण विकास मैं कर रहा हूँ...(1)...

भारतीय ग्रंथों में है परम ज्ञान-विज्ञान...गणित-आयुर्वेद व नीति-नियम...
स्व-पर-विश्व कल्याण के समस्त सूत्र...मनोविज्ञान से लेकर आध्यात्म सूत्र...

अनेक शताब्दी तक भारत की परतंत्रता से...आलस्य प्रमाद व अकर्मण्यता से...
भ्रष्टाचार नकलची व फैशन मद से...भारतीय ज्ञान सुप्त है ग्रंथ मध्य में...(2)...

पाश्चात्य जगत् स्वतंत्र रहा पूर्व से...अन्य देशों को शासित किया बल से...
पाश्चात्य में विभिन्न क्रांतियाँ हुईं...राजनैतिक से लेकर विज्ञान की हुई...

स्वाभिमान स्वतंत्रता से वे जी रहे है...नये-नये शोध-बोध भी कर रहे है...
सहयोग समन्वय से वे जी रहे है...हर क्षेत्र में भी प्रयोग कर रहे है...(3)...

गुडमैनर-गुडबिहेवियर वे कर रहे है...प्रतिभा का सम्मान वे कर रहे है...

गुणग्रहण भी सभी से कर रहे है...नैतिक पूर्ण जीवन भी वे जी रहे है...
धन्यवाद व क्षमायाचना वे सदा करते...नियम-कानून को वे सभी पालते...
गंदगी व मिलावट वे नहीं करते...वातावरण परिसर की स्वच्छता रखते...(4)...
आत्म विश्लेषण-आत्म सम्बोधन वे करते...मनोविज्ञान को वे महत्व देते...
गलती से शिक्षा ले वे आगे बढ़ते...गुणग्राही स्वावलंबी वे बनते...
उपरोक्त गुण भारत में कम मिलते...ग्रंथों में भले वर्णन बहुत मिलते...
उक्त प्रायोगिक गुण मुझे अच्छे मिलते...आध्यात्मिक संस्कृति 'कनक' को अच्छे लगते...(5)...

आसपुर, दिनांक 10.06.2015, मध्याह्न 3.05

कनक तू क्यों साधु बना!? सिद्धि हेतु न की प्रसिद्धि हेतु!

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे! तू काहे न धीर धरे....., मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे....., सायोनारा.....)

जिया रे! तू काहे साधु बना!?ऽऽऽ
धन-जन त्यागा श्रमण बनाऽऽऽ मोक्ष के हेतु बनाऽऽऽ...(ध्रुव)...

मोक्ष होता है सर्व कर्म क्षय सेऽऽऽ शरीर-मन से भी परेऽऽऽ
राग-द्वेष-मोह-काम-क्रोध शून्यऽऽऽ ख्याति-पूजा-लाभ परेऽऽऽ
सच्चिदानंद पूरेऽऽऽ जिया रे...(1)...

''शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्''ऽऽऽ शरीर हेतु है भोजनम्ऽऽऽ
औषधि पानी वसतिका चाहिएऽऽऽ तीनों है उपकरणम्ऽऽऽ
साध्य हेतु साधनम्ऽऽऽ जिया रे...(2)...

इसके अतिरिक्त सत्ता-संपत्तिऽऽऽ प्रसिद्धि-पूजा-यश-कीर्तिऽऽऽ
माईक-मञ्च-पण्डाल-होर्डिंगऽऽऽ न चाहिए पत्रिका-विज्ञापनऽऽऽ
ये सब अनात्म कामऽऽऽ जिया रे...(3)...

नाम-बड़ाई हेतु प्रशस्ति व फोटोऽऽऽ भीड़ व टी.वी. प्रसारणऽऽऽ
बाजा व आडम्बर नहीं चाहिएऽऽऽ लंद-फंद-द्वंद्व-प्रदूषणऽऽऽ

ये सब बाह्य प्रपञ्चऽऽऽ जिया रे...(4)...

ये सब तूने अनंत बार कियाऽऽऽ त्यागा भी अनंत बारऽऽऽ
विसर्जित मल सम ये सब त्याज्यऽऽऽ जो है समता/(साधना) में बाधकऽऽऽ
समता-शांति भज रेऽऽऽ जिया रे...(5)...

भक्त-शिष्यजन जो कुछ करतेऽऽऽ दान-सेवा व व्यवस्थाऽऽऽ
उसमें संतोष होकर करना हैऽऽऽ निस्पृह से आत्म-साधनाऽऽऽ
निस्पृही-वीतरागी बनऽऽऽ जिया रे...(6)...

स्वेच्छा से भक्त-शिष्य देश-विदेश केऽऽऽ कर रहे धर्म-प्रभावनाऽऽऽ
उसमें भी अकिंचित्कर तुम्हें बननाऽऽऽ उसमें न हो अहं भावनाऽऽऽ
आकिञ्चन्य बन रेऽऽऽ जिया रे...(7)...

एकांत-मौन व समता-शांति सेऽऽऽ करना है ध्यान-अध्ययनऽऽऽ
शिष्य-भक्तों को भले ज्ञानदान दोऽऽऽ तुझे करना है मोक्ष साधनाऽऽऽ
'कनक' श्रमण की भावनाऽऽऽ जिया रे...(8)...

आसपुर, दिनांक 26.06.2015, रात्रि 9.52

स्व-अनुभवगम्य मेरे भाव एवं व्यवहार

(मेरे प्रशस्त-अप्रशस्त भाव-व्यवहार मुझे होते ज्ञात)
(हितकर तनाव एवं दर्द)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : तुम दिल की धड़कन....., भातुकलीच्या.....)

बड़ा सुख पाता आनंद आता, जब मेरा भाव/(व्यवहार) प्रशस्त होता।
संतुष्टि होती प्रसन्नता होती/(शांति मिलती), एकाग्रमन मेरा होता।।धृ.।।

बुद्धि बढ़ती क्षमता बढ़ती, चिन्तन मेरा अधिक होता।
अध्ययन होता अनुभव बढ़ता, लेखन काम भी खूब होता।। (1)

अच्छा सब लगता अध्यापन कराता, शोध-बोध भी खूब होता।
संकल्प न होते विकल्प घटते, संक्लेश भाव भी नहीं होता।। (2)

शरीर (भी) न थकता मन भी लगता, कार्य सम्पादन खूब होता।
चिन्तन होता विचार आता, अभूतपूर्व भी ज्ञान होता।। (3)

अप्रशस्त भाव जब मेरे होते, उपरोक्त गुण मेरे सुस्त होते।
तनाव होता सिर भी दुःखता, गर्दन-पीठ में दर्द होता।। (4)

अप्रशस्त भाव मेरे अतिकम होते, होने पर उसे दूर करता।
तनाव से लेकर दर्द के कारण, मुझे इसका शीघ्र ज्ञान होता।। (5)

इन कारणों से (मैं) अप्रशस्त, भाव व्यवहार से दूर रहता।
यह तनाव व दर्द मेरे हित हेतु, अतएव उपकारी होता।। (6)

इन कारणों से मैं लंद-फंद, द्वंद से सदा दूर रहाता।
एकांत मौन व समता शांति से, 'कनक' ध्यान-अध्ययन करता।। (7)

आसपुर, दिनांक 28.06.2015, अपराह्न 5.41

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र	विषय	पृ.क्र.
1.	आध्यात्मयोगी-स्वाध्याय तपस्वी गुरुवर	2
2.	गुरुकुल है महान्	3
3.	समा है स्वाध्याय का	4
4.	मैं हूँ (आ. कनकनन्दी) प्राथमिक विद्यार्थी क्योंकि-	5
5.	त्याग एवं ग्रहण की मेरी साधना	6
6.	मेरी उपलब्धियों का मैं संवर्द्धन करूँ	7
7.	मुझे विश्व की सर्वोच्च उपलब्धि पाना है	8
8.	स्व रहस्य ज्ञाता मैं बनूँ	9
9.	सर्वज्ञ बनने के पूर्व तक मैं हूँ विद्यार्थी	10
10.	ध्यान से बहुआयामी लाभ	10
11.	स्वाध्याय एवं अध्यापन से लाभ	11
12.	वैज्ञानिकों से भी मुझे बनना आध्यात्मिकता में श्रेष्ठ	12
13.	भारतीय ग्रंथों से आध्यात्मिकता व पाश्चात्य से प्रायोगिकता सीखता हूँ	13
14.	कनक तू क्यों साधु बना!? सिद्धि हेतु न कि प्रसिद्धि हेतु!	14
15.	स्व अनुभवगम्य मेरे भाव एवं व्यवहार	15
	परिच्छेद-I	
	(रहस्य)	
1.	आत्मविश्वास जगाने वाले होते है सर्वश्रेष्ठ उपकारी गुरु	21
2.	असत्य का नहीं है परम अस्तित्व	22
3.	आत्म संबोधन से मुझे प्राप्त शुभ व लाभ	23
4.	वैश्विक परम सत्य तथा मेरा परम सत्य	24
5.	अनंतों के मध्य में मेरा अनंत अस्तित्व	25
6.	हर जीव सुख क्यों चाहते हैं?	26
7.	मुझे अनुभव में आ रहा है ज्ञानज्ञेय अनंत	27

8.	तन-मन-आत्मा के स्वास्थ्य हेतु योग (ध्यान)	28
9.	शारीरिक श्रम न करना धुम्रपान से भी अधिक रोग व मृत्यु का कारण	29
10.	आकाश व कालद्रव्य की आत्मकथा	29
11.	धर्म-अधर्म द्रव्य की आत्मकथा	30
12.	जैन धर्म में गणित का प्रयोग सर्वत्र	31
13.	हर जीव है अहिंसक	33
14.	निगोदिया जीव की आत्मकथा व आत्मव्यथा	34
15.	परम सत्य-स्वरूप व उसके ज्ञाता	35
16.	परम सत्य की दृष्टि से बिग-बेंग व जीव उत्पत्तिवाद टाईम एवं स्पेस सिद्धांत भी असत्य	36

परिच्छेद-II

(आत्म सम्बोधन)

17.	स्वयं का मैं उद्धार करूँ-अन्य के हेतु पतन न करूँ	39
18.	तन-मन-इन्द्रियादि परे मेरा स्वरूप	40
19.	हे आत्मन्! मन व इन्द्रियों को दास बनाओ	41
20.	हे आत्मन्! मन व इन्द्रियों को दास बनाओ (रूपान्तरण)	42
21.	स्व-ज्ञान से बनूँ सर्वज्ञ	43
22.	मोही-रागी-द्वेषी-कामुक से माध्यस्थ भाव	44
23.	मन का प्रभु में लय/(तन्मय)	44
24.	मेरे निस्पृह समताधारी बनने के उपाय	45
25.	''कौन क्या कहेगा'' से परे आत्म-विकास मैं करूँ	46
26.	मुझे आत्मदर्शन करना है न कि प्रदर्शन	47
27.	परोपदेशी पाण्डित्य ही नहीं-स्व-उपदेशी मैं बनूँ	48
28.	कषाय शत्रु नाश से मुझे पाना है मुक्ति	49
29.	यथार्थ से शत्रु-मित्र	50
30.	जिया रे! अधर्म भाव को त्यज	51
31.	बाह्य निर्माण नहीं, अंतरंग निर्माण/(निर्वाण) मैं करूँ	52

32.	स्व-उपलब्धि ही सर्व-उपलब्धि	53
33.	आध्यात्म आराधना	54
34.	आध्यात्म एक लाभ अनेक	55
35.	''आत्म शक्ति से होता है सर्वोच्च विकास''	56
36.	वैभाविक ''मैं'' एवं स्वाभाविक ''मैं''	57
37.	प्रिय से श्रेय मार्ग क्लिष्ट परन्तु श्रेष्ठ	58
38.	मेरी भावी शुद्ध दशा का चिन्तन	58
39.	दुनिया के दबाव से परे	59
40.	मन (ध्यान-विचार) से परे है शुद्ध जीव	60
41.	''मैं'' और ''हम'' हम का आध्यात्मिक रहस्य	61
42.	धर्म के अभाव और सद्भाव की समस्याएँ	62
43.	चित्र-विचित्र परिणति व प्रवृत्ति	64
44.	कर्म सिद्धान्त (बंध के कारण)	66
45.	मन के अस्थिर एवं स्थिर होने के कारण	68
46.	आत्मबल बिना अन्य बल पराभूत	68
47.	निर्णय क्षमता (न्याय करना) के विविध कारण	69
48.	भोगासक्त गृहस्थ सुखी क्यों नहीं?	70
49.	चक्रवर्ती तक क्यों बनते...साधु!?	72
50.	सर्वज्ञ-वीतरागी होते है भगवान्	72
51.	जीव का शुद्ध स्वरूप या परम विकास	73
52.	समता परमोधर्म-ध्यान व शांति	74
53.	प्रवचन व प्रवचनसम के 48 रूप	75
54.	ज्ञात से अज्ञात का ज्ञान व गहन विषयों का अनुसंधान	77
55.	लोकअयं नाट्यशाला-रचित सुरचना-प्रेक्षकों विश्वनाथ	78
56.	शरीर रहित हो मेरी उपलब्धि	79
57.	मोक्षमार्गी ही सर्वश्रेष्ठ-सर्वज्येष्ठ	80
58.	पंचम काल में अधिकांश जन होते हैं अज्ञानी-मोही	82

59. स्वस्थ भाव से स्वस्थ तन व मन 83
60. आदर्श स्वस्थ सुखमय जीवन 84
61. मैं आडम्बर क्यों नहीं करता 85
62. आचार्य कनकनन्दी जी ससंघ के आदर्श 85
63. मैं पापी-दोषी की भी निन्दा न करूँ 86
64. श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव द्वारा सृजित ''बगिया की फुलवारी'' 87
65. श्रमण गुरुवर श्री कनकनन्दी जी की सत्य वाणी 88
66. कनक गुरुकुल की शिक्षा पद्धति 89
67. लघु ग्राम नन्दौड़ में एक परिवार द्वारा आचार्यश्री कनकनन्दी जी ससंघ के अपूर्व चातुर्मास की मंगल बेला में हार्दिक स्वागत/वंदन 90
68. वर्ष 2015 के चातुर्मास हेतु नन्दौड़ में मंगल प्रवेश एवं वर्ष 2016 के सीपुर चातुर्मास हेतु आशीर्वाद प्रदान 91
69. जैन श्रमण का त्याग होता है सांसारिक कुटुम्ब 92
70. निरडम्बर-चातुर्मास-छोटा गाँव के एक परिवार में 93

परिच्छेद-I

(रहस्य)

आत्मविश्वास जगाने वाले होते सर्वश्रेष्ठ उपकारी-गुरु

(चाल : तुम दिल की धड़कन....., धन्य गुरुवर धन्य हो तुम.....)

धन्य हे! सद्गुरु धन्य हो तुम!, आत्मविश्वास (जो) जगाते हो।
समस्त प्रकार के विकास हेतु, भावात्मक बीज (को) बोते हो।।धृ.।।
अंकुर विकास व फूल फल यथा, सुयोग्य बीज से ही होते है।
तथाहि समस्त विकास के लिए, आत्मविश्वास रूपी बीज बोते हो।।
आत्मविश्वास से ज्ञान सुज्ञान होता, तथाहि होता है सही आचरण।
जिससे सम्पूर्ण कार्य होते हैं, लौकिक से लेकर परिनिर्वाण।।
आत्मविश्वास बिना काम न करते, ज्ञान से लेकर शक्ति आचरण।
यथा बिन बीज काम न करते, वृक्ष हेतु मृदा वायु सूर्य किरण।।
आत्मविश्वास में होती अनंत शक्ति, जो आत्मा की है निज शक्ति।
जिससे अन्य शक्ति सक्रिय होती, आत्मविश्वास बिन निष्क्रिय होती।।
चारण ऋद्धिधारी मुनि के द्वारा, जगा सिंह का भी आत्मविश्वास।
वह सिंह बना महावीर भगवान्, ऐसा ही बना (था) गज पार्श्व भगवान्।।
पतित से पावन बने अनंत, भव्य से भगवान् बने अनंत।
आगे भी ऐसा ही होता रहेगा, इसके मूल में होता आत्मविश्वास।।
सच्चि श्रद्धा-रूचि या सम्यग्दर्शन, आत्मविश्वास के है विभिन्न नाम।
'सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि' ही, होता है मोक्ष का मार्ग नियम।।
मोक्ष में मिलता है अनंत सुख, जो है आत्मोत्थ व अविनाशी।
इसी के मूल में है आत्मविश्वास, जिस के अमृत फल है मोक्ष सुख।।
तीन लोक व तीनों काल में भी, मोक्ष समान नहीं है महान् काम।
आत्मविश्वास से जब मिलता है मोक्ष, आत्मविश्वास से क्यों न हो अन्य काम।।
अतः आप ही महान् उपकारी, तीनों काल व तीन लोक में।
आप ही दाता हो! रक्षक संवर्द्धक, आपको नमन करे 'आचार्य कनक'।।

लोगों को आत्मविश्वास देना ही अब तक का सबसे जरूरी काम है, जो मैं कर सकता हूँ। क्योंकि तब वो काम करेंगे-जैक वेल्व

आसपुर, दिनांक 13.06.2015, रात्रि 9.43

असत्य का नहीं है परम अस्तित्व

(झूठ, मायाचारी, ठगी, मिलावट, कमी, दोष आदि है असत्य)

(चाल : आत्मशक्ति से ओतप्रोत....., भातुकली (मराठी)....., सायोनारा.....)

असत्य की कोई सत्ता न होती...सत्ता बिन असत्य की नहीं है शक्ति/(स्थिति)...
सत्य ही सत्ता सम्पन्न अस्तित्ववान्...अनंत गुण पर्याय सह द्रव्य संपूर्ण...(स्थायी)...

सत्य ही अनंत गुण-पर्याय युक्त...अस्ति-नास्ति विरोधी गुण संयुक्त...
जीव-पुद्गल में होती अशुद्ध-अवस्था...इससे संभव है असत्य की व्यवस्था...

अशुद्ध अवस्था होती सापेक्ष सत्य...व्यवहार दृष्टि से होती है सत्य...
निश्चयनय से वही होती असत्य...अनेकांत से ही सिद्ध सत्य-असत्य...(1)...

यथा संसारी जीवों का होता अस्तित्व...द्रव्य-भाव-नोकर्म भी होते अस्तित्व...
व्यवहार से ये सभी होते हैं सत्य...परम निश्चय से ये न होते सत्य...

परम निश्चय से न होते जीव संसारी...जीव तो चैतन्य अमूर्तिक अविकारी...
द्रव्य-भाव-नोकर्म भी न होते है शुद्ध...शुद्ध जीव-पुद्गल में न होते अस्तित्व...(2)...

जीव-पुद्गल की ये मिश्र अवस्था...मिश्र अवस्था सभी अशुद्ध अवस्था...
अशुद्ध अवस्था निश्चय से न होती सत्य...अतः निश्चय से ये सभी असत्य...

व्यवहार से शुद्ध सोना होता है सत्य...निश्चय से शुद्ध सोना का न अस्तित्व...
अनंत परमाणुओं का स्कंध है सोना...शुद्ध परमाणु कभी न होता सोना...(3)...

वाचनिक सत्य सभी सापेक्ष सत्य...निरपेक्ष कथन सभी असत्य...
शुद्ध स्वभाव होता है परम सत्य...तदनुकूल भी अन्य सभी सत्य...

झूठ चोरी मिलावट जालसाजी ठगी...दोषारोपण-निन्दा-चुगली आदि...
क्रोध मान माया लोभ ईर्ष्या कामादि...ये सभी असत्य (क्योंकि) जीव शुद्ध स्वभावी...(4)...

व्यक्ति समाज कानून मान्य जो सत्य...न होते परम सत्य वे लौकिक सत्य...
रीति-रिवाज-परंपरा व वैज्ञानिक मान्य...परम सत्य न होते ये लौकिक मान्य...

अशुद्ध अवस्था अपेक्षा ये सभी सत्य...शुद्ध अवस्था अपेक्षा ये सब सत्य...
अतः पूर्ण असत्य का नहीं अस्तित्व...यह गूढ़ रहस्यपूर्ण सापेक्ष मत...(5)...

सत्य-असत्य उभय व अनुभय सापेक्ष...अनेकांत-स्याद्वाद-नय-निक्षेप...

द्रव्य गुण पर्याय व शुद्ध-अशुद्ध...इन सब दृष्टि से ज्ञान विशुद्ध...
अध्यात्म में ये सभी पूर्व ही मान्य...क्वांटम सिद्धांत इसे कर रहा सिद्ध...
यह है परम धर्म-दर्शन-विज्ञान...'कनक' का लक्ष्य है अनंत ज्ञान...(6)...

आसपुर, दिनांक 13.06.2015, मध्याह्न 3.08

(वैज्ञानिक-दार्शनिक फ्रित्जॉफ काप्रा की महान् कृति, "TAO OF PHYSICS" (भौतिक का सतपथ) से भी यह कविता प्रेरित व प्रभावित है।)

आत्म-सम्बोधन से मुझे प्राप्त शुभ व लाभ

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : अच्छा सिला.....)

सतत आत्म सम्बोधन मैं करूँ...गुण-दोष समीक्षा स्वयं की करूँ...
आत्मविश्लेषण से आत्मसुधार करूँ...समता-शांति से आत्म-विकास करूँ...(स्थायी)...

मैं हूँ सच्चिदानंद स्वरूप...द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित रूप...
राग-द्वेष-मोहादि मम विकार रूप...आत्म-सम्बोधन में होता यह स्वरूप...

मुझे इस से लाभ अनेक होते...स्व-मूल्यांकन से भी गुण बढ़ते...
दीन-हीन-अहंकार भाव न होते...प्रतिस्पर्द्धा-ईर्ष्या भाव नहीं जन्मते...(1)...

अन्य का अंधानुकरण कभी न करूँ...आदर्श अनुकरण मैं अवश्य करूँ...
दूसरों के दोषों से शिक्षा मैं लहूँ...दोषों से प्रभावित कभी न बनूँ...

अपेक्षा-उपेक्षा से निर्लिप्त रहूँ...प्रतीक्षा रहित मैं आगे ही बढ़ूँ...
संकल्प-विकल्प से मैं निवृत्त रहूँ...संक्लेश-द्वंद्व से विरक्त रहूँ...(2)...

श्रेष्ठता दिखावे का न प्रयत्न करूँ...स्वयं से छिपाने की न धृष्टता करूँ...
इसी हेतु मोल-तोल कभी न करूँ...स्वयं के व्यक्तित्व को ही आदर्श करूँ...

अन्य की निन्दा से मैं नीच न बनूँ...अन्य की श्रेष्ठता से ईर्ष्या न करूँ...
अन्य की नीचता से स्व को श्रेष्ठ न मानूँ...अन्य के दुःखों से सुखी न बनूँ...(3)...

अन्य से क्षमा भाव यथा मैं धरूँ...स्वयं को क्षमादान तथाहि करूँ...
परोपकार की भावना यथा मैं धरूँ...तथाहि स्व-उपकार सदा मैं करूँ...

स्वयं की वञ्चना-हिंसा तथा न करूँ...स्वयं को प्रताड़ना-अपमान न करूँ...
स्व-परमात्मा की पूजा-प्रशंसा करूँ...उसकी प्रसन्नता हेतु प्रयत्न करूँ...(4)...

स्वयं की रेखा को मैं बढ़ाता चलूँ...अन्य की रेखा को न विकृत करूँ...
स्वयं को प्रकाशित मैं करता चलूँ...अन्य के दीपकों को भी जलाता चलूँ...
अन्य जन तो परोपदेश ही करते...स्वयं को संबोधित भी नहीं करते...
आत्म-संबोधन मेरा न समझ पाते...आत्म-संबोधन को अहंकार मानते...(5)...
प्रसिद्धि/(आत्म प्रशंसा) हेतु धन-जन न लगता...समय शक्ति का दुरुपयोग न होता...
विज्ञान पत्रिका व होर्डिंग के बिना...आध्यात्मिक-संतोष होता फोटो के बिना...
इसी से अनुशासी-स्वावलंबी मैं बनूँ...चंदा-चिट्ठा-याचना किसी से न करूँ...
ध्यान-अध्ययन-चिंतन भी होता...आत्म-संबोधन 'कनक' अतः करता...(6)...

आसपुर, दिनांक 10.06.2015, रात्रि 10.30

(यह कविता ''खुद से करे गुफ्तगु'' (दै. नवज्योति) से भी प्रेरित है एवं आचार्यश्री गुप्तनंदी जी आदि की भावना से भी यह कविता बनी।)

वैश्विक परम सत्य तथा मेरा परम सत्य

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : तुम दिल की धड़कन.....)

सबसे प्यारा है सत्य हमारा, अनंत गुण पर्याय सहित वाला।
लोक-अलोक में व्याप्त वाला, अनादि अनिधन शाश्वतिक वाला।।धृ.।।

जीव पुद्गल व धर्म-अधर्म, आकाश व काल द्रव्य वाला।
जीव है चैतन्य गुण वाला, संसारी व मुक्त दो भेद वाला।।

शेष द्रव्य होते है अजीव द्रव्य, पुद्गल द्रव्य ही है मूर्तिक द्रव्य।
शेष (अन्य) द्रव्य होते अमूर्तिक द्रव्य, स्पर्श रस गंध वर्ण से रिक्त।।

जीव पुद्गल होते है शुद्ध-अशुद्ध, शेष द्रव्य होते शाश्वतिक शुद्ध।
कर्म सहित जीव होते अशुद्ध, कर्म रहित जीव होते है शुद्ध।।

अविभाज्य परमाणु है शुद्ध पुद्गल, द्वयाधिक परमाणु स्कंध अशुद्ध।
शुद्ध जीव पुनः अशुद्ध न होते, पुद्गल शुद्ध-अशुद्ध होते रहते।।

धर्म द्रव्य होता गति सहायक, अधर्म द्रव्य है स्थिति सहायक।
जीव पुद्गल हेतु (ये) होते सहायक, गति स्थिति परिणत होते जब दोनों।।

अवकाश देना आकाश का स्वभाव, परिणमन सहायक है काल-स्वभाव।

हर द्रव्य हेतु ये होते सहायक, छहों द्रव्य परस्पर होते सहायक।।

छहों द्रव्य ही है परम सत्य, जीव होते है उनमें भी श्रेष्ठ।
शुद्ध जीव होते है परम श्रेष्ठ, स्व-शुद्ध होता स्व-हेतु श्रेष्ठ।।

सत्य शिव सुंदर होते है शुद्ध, सच्चिदानन्दमय आत्मविशुद्ध।
संसार के सारभूत होते है शुद्ध, जन्म जरा मृत्यु से भी होते विमुक्त।।

मुझे तो प्यारा है मेरा ही सत्य, इसी सत्य हेतु मैं प्रयासरत।
लोक प्रचलित नहीं है परम सत्य, 'कनकनन्दी' चाहे स्व-परम सत्य।।

आसपुर, दिनांक 12.06.2015, अपराह्न 5.30

अनन्तों के मध्य में मेरा अनन्त अस्तित्व

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : छोटी-छोटी गैया.....)

अनंत है आकाश अनंत है काल, अनंत है जीव व अनंत है कर्म।
अनंत है पुद्गल अनंत है भाव, हर द्रव्य (व प्रदेश) में अनंत गुणों का सद्भाव।।धृ.।।

मैं भी एक द्रव्य मेरा नाम है जीव, अनंतानंत के मध्य मेरा भी सद्भाव।
मैं हूँ आकाश में मेरा काल ही अनंत, कर्म भी अनंत गुण-भाव/(शक्ति) भी अनंत।।

अनंत जीवों के साथ हुआ है संबंध, शत्रु-मित्र भाई-बंधु रूप में संबंध।
परस्पर भोगा-खाया-मारा भी अनंत, पुद्गलों से (मेरा) संबंध हुआ अनंत।।

जन्म-मरण मैंने किया अनंत ही बार, सुख-दुःख हानि-लाभ (भोगा) अनंत बार।
चौरासी लाख योनियों में भोगा ये सब, संसार के हर कार्य किया भी सब।।

ये सब किया मैंने अनात्मा हेतु, राग द्वेष काम क्रोध ईर्ष्यादि हेतु।
शरीर भोगोपभोग हेतु किया ये कर्म, धन-जन धर्म हेतु किया ये कर्म।।

तथापि मेरा विनाश भी न हो पाया, अनंत शक्ति (गुणों) के कारण अस्तित्व रहा।
अनंत गुणों/(शक्तियों) का सदुपयोग करूँ, कर्म नाशकर (आत्म) उपलब्धि मैं करूँ।।

जो भी किया अभी तक उसे मैं त्यागूँ आध्यात्मिक उपलब्धि हेतु काम मैं करूँ।
अनंत शक्ति व गुणों को प्रगट करूँ, 'कनक' स्व-स्वरूप में (ही) रमण करूँ।।

आसपुर, दिनांक 16.06.2015, रात्रि 10.30

हर जीव सुख क्यों चाहते हैं?

(अच्छे या बुरे भाव व व्यवहार जीव सुख के लिए ही करते हैं)

(चाल : क्या मिलिये ऐसे लोगों से....., छोटी-छोटी गैया.....)

जीवों में होते हैं अनंत गुण...उसमें प्रमुख है सुख गुण...
इसीलिये हर जीव सुख के लिए...होते हैं सतत प्रयत्नवान्...(स्थायी)...

अस्तित्व वस्तुत्व व द्रव्यत्व...अगुरुलघु व चेतन गुण...
सुख वीर्य आदि होते अनंत गुण...अव्याबाध-अमूर्तिक गुण...

चौरासी लाख योनि मध्य में...किसी भी अवस्था में होते हो जीव...
सुख ही उसका होता प्रमुख गुण...निगोदिया से लेकर हो सिद्ध जीव...(1)...

कोई धन चाहते कोई मान चाहते...कोई भाई बंधु व समाज जन...
भोगोपभोग व मकान चाहते...ये सब चाहे सुख प्राप्ति के कारण...

ज्ञानी वैरागी व संत श्रमण जन...उक्त सांसारिक वैभव न चाहते...
इसीलिये तो वे धनादि त्यागते...तथापि आध्यात्मिक सुख चाहते...(2)...

समस्त चाह के मूल होता है सुख...चाह त्याग के मूल में होता सुख...
फैशन-व्यसन भी है सुख हेतु...निर्व्यसन-सदाचार भी सुख हेतु...

दया दान सेवा भी है सुख के लिए...शोषण-मिलावट भी सुख के लिए...
भोग-उपभोग भी है सुख के लिए...ज्ञान-वैराग्य भी है सुख के लिए...(3)...

आत्महत्या भी करते सुख के लिए...समाधि भी लेते है सुख के लिए...
क्रोध मान माया लोभ भी सुख हेतु...समता शांति क्षमा भी सुख हेतु...

अज्ञानी मोही जीव सुख के लिए...चाहते धन आदि व करते भोग...
फैशन-व्यसनादि सुख हेतु सेवते...आत्महत्या से क्रोध मान लोभ...(4)...

यथा मद्यपायी नशा से मस्त होकर...नहीं जानता है हित-अहित...
तथाहि अज्ञानी मोही मूर्च्छित होकर...दुःख हेतु को मानते सुख व हित...

जिससे स्व-पर को सुख मिलता...मन भी होता है प्रसन्न-शांत...
समता आह्लाद व हल्का होता...उदार सहिष्णु होता भाव उन्नत...(5)...

संक्लेश द्वंद्व विक्षोभ न होता...किसी से न होता राग-द्वेष-द्रोह...
ईर्ष्या-तृष्णा वैर-विरोध न होता...वह ही सुख जो सहज व सरल...

सुख अर्थात् आत्मा का शुद्ध स्वभाव...जिसमें न होता है कल्मष भाव...
कल्मष भाव से सुख बन जाता दुःख...अतः दुःख से जीव होते संत्रस्त...(6)...
इसी हेतु चक्री भी बनते हैं साधु...अनंत सुख हेतु वे भी करते साधना...
मोक्ष प्राप्ति से बनते अनंत सुखी...सुख हेतु 'कनक' करे आत्म-साधना...(7)...

आसपुर, दिनांक 17.06.2015, अपराह्न 5.12

मुझे अनुभव में आ रहा है ज्ञानज्ञेय अनंत

(मेरे विद्यार्थी भाव के कारण व परिणाम)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : छोटी-छोटी गैया....., शत-शत वंदन.....)

अनंत है ज्ञेय तो अनंत है ज्ञान, सर्वज्ञदेव ने ऐसा किया है कथन।
विज्ञान में ऐसा ही हो रहा शोध, मेरे अनुभव में ऐसा हो रहा बोध।। (1)

अनेक ग्रंथ पढ़ रहा (मैं) देश-विदेश के, धर्म-दर्शन-विज्ञान व कला क्षेत्र के।
वैज्ञानिक चैनलों से पढ़ रहा हूँ, हर जीव, घटनाओं से सीख रहा हूँ।। (2)

गद्य-पद्य में भी लिख रहा हूँ, विद्यार्थी जीवन से भी पढ़ा रहा हूँ।
तो भी हर विषय का (मुझे) न पूर्ण ज्ञान, न ही लिखा न पढ़ाया संपूर्ण ज्ञान।। (3)

विशिष्ट विषयों का ज्ञान (तो) हुआ न पूर्ण, सामान्य विषयों का (भी) ज्ञान हुआ न पूर्ण।
भाषा से लेकर खान-पान-न आरोग्य, पूर्णतः न हो पाया कीट-पतंग ज्ञान।। (4)

जितना जानता हूँ उतना (मैं) न लिख पाया, जितना लिखा (भी) उतना पढ़ा न पाया।
जितना-जितना जानता व लिखता जाता, उतना ही नवीन ज्ञान होता जाता।। (5)

जितना-जितना ज्ञान बढ़ता जाता, अपनी अज्ञानता का भान बढ़ता जाता।
जिससे विद्यार्थी भाव (भी) बढ़ रहा है, ज्ञानानंद का रसपान (भी) बढ़ रहा है।। (6)

इसी से (मेरा) अनुभव भी बढ़ रहा है, शोध-बोध-प्रयोग भी बढ़ रहा है।
लंद-फंद-द्वंद्वादि न भा रहे है, सच्चिदानंद रूप ('कनक' को) भा रहा है।। (7)

आसपुर, दिनांक 19.06.2015, प्रातः 8.52

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस दिनांक 21.06.2015 के उपलक्ष्य में

तन-मन-आत्मा के स्वास्थ्य हेतु योग/(ध्यान)

(चाल : सायोनारा....., क्या मिलिये....., सुनो-सुनो.....)

सुनो! सुनो! हे! दुनिया वालों...योग-ध्यान की सही पद्धति...
जिससे दुःखों से होगी निवृत्ति...अंत में होगी मुक्ति की सिद्धि...(ध्रुव)...
योग के होते है अष्ट अंग...यम[1] नियम[2] आसन[3] प्राणायाम[4]...
प्रत्याहार[5] व धारणा[6] समाधि[7]...अंतिम अंग होता है ध्यान[8]...
सत्य[1] अहिंसा[2] अचौर्य[3] ब्रह्मचर्य[4]...अपरिग्रह[5] रूपी होते पाँच यम I...
प्रभु उपासना[1] स्वाध्याय[2] तप[3]...संतोष[4] शौच[5] ये पाँच नियम II...(1)...
स्थिर आसन में हो शरीर की स्थिति...जिससे ध्यान हेतु बने परिस्थिति...
अनेक विध भी होते है आसन...चौरासी प्रकार भी होते है आसन III...
IV प्राणायाम है श्वास नियंत्रण...जिससे प्राणवायु का होता नियोजन...
V प्रत्याहार है इन्द्रिय संयमन...बाह्य प्रवृत्ति से होता नियंत्रण...(2)...
VI धारणा होती है समता भाव...राग-द्वेष-मोह से रहित भाव...
VII समाधि होती आत्म-प्रवृत्ति...VIII ध्यान होता है एकाग्र वृत्ति...
इससे तन-मन होते है स्वस्थ...आध्यात्मिक शक्ति भी जागृत...
पाप कर्मों का होता संवरण...पुण्य कर्मों का होता संचयन...(3)...
संकल्प-विकल्प-संक्लेश नशते...तन-मन-आत्मा भी सबल होते...
श्रद्धा-प्रज्ञा भी प्रखर होती...समता-शांति-संतुष्टि होती...
केवल आसन नहीं है ध्यान/(योग)...आसन से ही न मिले समस्त लाभ...
ध्यान तो आध्यात्मिक प्रक्रिया...ध्यान नहीं केवल तन की क्रिया...(4)...
पंथ-मत-जाति परे है ध्यान...भाषा-राष्ट्र सीमा परे है ध्यान...
तन-मन-आत्मा हेतु है ध्यान...क्षमता संवर्द्धन हेतु है ध्यान...
यह परम आध्यात्मिक प्रक्रिया...सुरक्षा संवर्द्धन हेतु प्रक्रिया...
नीति-नियम-सदाचार-कानून...ध्यान में गर्भित स्वास्थ्य विज्ञान...(5)...
पशु-पक्षी भी करते है योगासन...हर कार्य में समाहित योग (व) ध्यान...
हर मानव हेतु उपयोगी ध्यान...'कनक' करे सतत योग-ध्यान...(6)...

आसपुर, दिनांक 21.06.2015, प्रातः 8.50

(यह कविता श्रमण मुनि सुविज्ञसागर जी की भावना से बनी।)

(वैज्ञानिक शोधानुसार)

शारीरिक श्रम न करना धूम्रपान से भी अधिक रोग व मृत्यु का कारण

(चाल : तुम दिल की धड़कन में.....)

शारीरिक श्रम जो नहीं करते, रोग व मृत्यु को वे शीघ्र बुलाते।
कार्य सम्पादन भी वे कर न पाते, समय-शक्ति का वे दुरुपयोग करते।।
शरीर भी होता है जैविक मशीन, ईंधन व क्रिया न हो न्यून।
अन्यथा शरीर रूग्ण दुर्बल होगा, जिससे मरण शीघ्र संभव होगा।।
शारीरिक श्रम से शरीर सक्रिय होता, जिससे रक्त संचालन सुचारू होता।
प्राणवायु का ग्रहण होता पर्याप्त, विषाक्त तत्त्व की शरीर से निवृत्ति।।
गुड़ हारमोन का होता भी स्राव, बेड हारमोन भी होता निस्प्रभ।
जिससे तन-मन (होते) स्वस्थ-सबल, ओज-वीर्य (बुद्धि) ताजगी होती प्रबल।।
शारीरिक श्रम बिना उक्त लाभ न होते, विपरीत प्रभाव भी अनेक होते।
जिससे अनेक रोग भी होते उत्पन्न, मोटापा डायबिटिज वात रोग विभिन्न।।
जिससे और भी रोग होते उत्पन्न, दैनिक कार्य भी होते (सही) सम्पन्न।
सक्रिय स्वावलंबी अतः बनो मानव, 'कनकनन्दी' इसलिए रचा ये काव्य।।

आसपुर, दिनांक 10.06.2015, मध्याह्न 2.37

आकाश व काल द्रव्य की आत्मकक्षा

(सभी द्रव्यों को अवकाश देने वाला आकाश द्रव्य व सभी द्रव्यों को परिणमन करने में सहयोगी काल द्रव्य)

(चाल : आत्मशक्ति....., क्या मिलिये ऐसे.....)

हम हैं आकाश व काल द्रव्य, स्वयंभू सनातन अकृत्रिम द्रव्य।
अनादि अनिधन अमूर्तिक द्रव्य, सर्वज्ञ ज्ञानगम्य अचेतन द्रव्य।। (1)

हमारा जन्म न बिगबैंग से हुआ, हमारा विकास न भौतिक (द्रव्य) से हुआ।
विज्ञान भी न जाने हमें पूर्णतः, इन्द्रिय, यंत्रों से हम न ज्ञात।। (2)

मैं हूँ आकाश सबसे विशाल, लोक-अलोक ही मेरा शरीर।
अनंत प्रदेशी मेरा शरीर, (सभी) द्रव्यों को स्थान देना मेरा व्यापार।। (3)

लोकाकाश में मेरे असंख्यात प्रदेश, अलोकाकाश में अनंत प्रदेश।
लोकाकाश में ही हर द्रव्य समाहित, अलोकाकाश में केवल मैं हूँ स्थित।। (4)

धर्म-अधर्म, जीव व काल, मुझ में ही अवगाहित (होते) पुद्गल।
स्वर्ग-नरक से लेकर सिद्ध स्थान, ग्रह-नक्षत्रादि मुझ में ही अवस्थान।। (5)

आकाशगंगादि समस्त निहारिकाएँ, ब्लैक-हॉल से लेकर पुच्छलताराएँ।
मुझ में ही समाहित क्वासरताराएँ, मुझसे आगे नहीं कोई (भी) वस्तुएँ।। (6)

(मैं हूँ) काल द्रव्य लोकाकाश में स्थित, परिणमन के लिए (मैं) हूँ निमित्त।
मेरी प्रजाति के (होते) असंख्यात द्रव्य, मेरा आकार (होता) परमाणु सदृश्य।। (7)

यह मेरा होता है निश्चय रूप, समय-दिन-रात व्यवहार स्वरूप।
महीना-वर्ष-ऋतु (आदि) व्यवहार रूप, षट्काल परिवर्तन (भी) व्यवहार रूप।। (8)

व्यवहार स्वरूप अनंतानंत, अनंत भूत व भविष्य अनंत।
एक समय मेरा वर्तमान (स्व) रूप, (एक) सैकण्ड का असंख्यात भाग रूप।। (9)

विज्ञान न जाने मेरा निश्चय रूप, पूर्णतः न जाने व्यवहार रूप।
एक समय को भी न जान पाया, भूत-भविष्य को (भी) न जान पाया।। (10)

हमें जानने हेतु प्रयत्नवान् विज्ञान, बिग-बैंग से जन्म माने विज्ञान।
सापेक्ष रूप में ही (हमें) जाने विज्ञान, परम निश्चय रूप न जाने विज्ञान।। (11)

हमें जानने हेतु अंतः प्रज्ञा चाहिए, इन्द्रिय यंत्र से भी परे चाहिए।
सर्वज्ञ बनकर ही हमें भी जानिये, 'कनक' सर्वज्ञ बन सब/(समस्त) जानिये।। (12)

आसपुर, दिनांक 19.06.2015, रात्रि 10.12

धर्म-अधर्म द्रव्य की आत्मकथा

(जीव एवं पुद्गलों की गति-स्थिति के निमित्तक द्रव्य)

(चाल : छोटी-छोटी गैया....., तुम दिल की धड़कन.....)

हम है धर्म-अधर्म द्रव्य, लोकाकाश व्यापी अमूर्त द्रव्य।
स्वयंभू सनातन अनादि अनिधन, अनंत गुण पर्याय सम्पन्न।। (1)

गति परिणत जीव पुद्गलों को, गति में सहायक मैं धर्म द्रव्य।
स्थिति परिणत जीव पुद्गलों को, स्थिति में सहायक मैं अधर्म द्रव्य।। (2)

उदासीन रूप से हम निमित्त, न होते हम प्रेरक निमित्त।
गति-स्थिति बिना परिणत को, गति-स्थिति में न होते निमित्त।। (3)

रेल की गति हेतु यथा पटरी, स्थिति के हेतु यथा स्टेशन।
तथाहि हम दोनों होते सहायक, हमारे बिना न दोनों क्रिया संभव।। (4)

गति क्रिया हेतु मैं (धर्म द्रव्य) सहायक हूँ, अणु से लेकर स्कंध तक की।
निगोदिया से सिद्ध जीव तक की, मरण से अनंतर विग्रह गति की।। (5)

मेरे (धर्म) बिना न अणु (की) गति संभव, तथाहि बादल व वायु की।
प्रकाश मोटर रेल वायुयान की, विद्युत तरंग या रेडियेशन की।। (6)

रक्त संचालन या श्वास क्रिया की, पलक झपकना या छींक आने की।
लिखना चलना या तैरना दौड़ना, मेरे बिना न संभव (भी) मल त्यागना।। (7)

मेरे (अधर्म) बिना न किसी की स्थिति संभव, अणु से लेकर पहाड़ तक की।
निगोदिया से लेकर सिद्ध की/(लोकाग्र स्थिति) मकान महल व स्टेशन की।। (8)

बैठना सोना व दही जमना, तेल या घी अथवा बर्फ जमना।
भौतिक स्कंध के जड़त्व गुण भी, मेरे बिना न संभव (है) खड़ा रहना।। (9)

सर्वज्ञदेव द्वारा (ही) हम तो ज्ञात, वैज्ञानिक द्वारा भी हम न ज्ञात।
ग्रेवेटी ईथर या डार्क-मेटर, हम न होते डार्क-एनर्जी तक।। (10)

विश्व-व्यवस्था में हमारा स्थान, होता है महत्वपूर्ण योगदान।
हमारा वर्णन सर्वज्ञ देव ने किया, 'कनकनन्दी सूरी' ने संक्षिप्त किया।। (11)

आसपुर, दिनांक 18.06.2015, रात्रि 10.12

जैन धर्म में गणित का प्रयोग सर्वत्र

(गणित बिना जैन धर्म तथा विश्व के किसी भी विषय का वर्णन असंभव)

(चाल : क्या मिलिये ऐसे लोगों से....., आत्मशक्ति से ओतप्रोत.....)

जैन धर्म की अनेक विशेषताएँ...मैंने वर्णन किया मेरे ग्रंथों में...
उनमें से एक गणित की विशेषता/(व्यापकता)...वर्णन कर रहा (हूँ) इस काव्य में...(ध्रुव)...

जहाँ सत्/(सत्य-द्रव्य) होगा वहाँ संख्या होगी...'सत्संख्या' सूत्र यह बताता है...

सत् तो सर्वव्यापी लोक-अलोक में...संसार में तथा मोक्ष में है...
छहों/(हर) द्रव्य की संख्या भी होती...उनके गुण-पर्यायें अनंतानंत...
अनादिकाल से हर द्रव्य स्थित (है)...रहेंगे भविष्य में भी काल अनंत...(1)...

धर्म-अधर्म-आकाश एक-एक द्रव्य...काल द्रव्य है असंख्यात...
जीव द्रव्य है अनंतानंत...जीव से अनंतगुणे पुद्गल द्रव्य...

हर द्रव्य में होते अनंत गुण...अनंत अविभागी प्रतिच्छेद...
हर गुणों की होती अनंत पर्यायें...अर्थ पर्याय व व्यञ्जन पर्यायें...(2)...

जीवों के भेद संसारी व मुक्त...प्रत्येक में अनंतानंत जीव...
हर जीव के होते असंख्यात प्रदेश...हर प्रदेश में (संसारी के) अनंतानंत कर्मबंध...

द्रव्य-भाव-नोकर्म रूप में कर्म के...अवस्थाएँ तीन या दशविध...
द्रव्यकर्म के भी दो या आठ भेद (या)...संख्यात-असंख्यात-अनंत भेद...(3)...

भाव कर्म असंख्यात लोक प्रमाण...भेद होते हर संसारी जीव के...
नो कर्म भी होते पाँच से लेकर...चौरासी लक्ष योनि जीवों के...

गुणस्थान-मार्गणा स्थान चौदह...चौदह होते संसारी जीवों के...
मुक्त जीव के भी होते हैं दशविध...भूतपूर्व प्रज्ञापन नय से...(4)...

पुद्गल के भी होते हैं दो भेद...अणु तथा स्कंध भेद से...
प्रत्येक के भी होते अनंत भेद...तेईस भेद होते वर्गणाओं के...

ऐसा ही जानो द्रव्य क्षेत्र काल भाव के...स्व-स्व अपेक्षा गणित होते हैं...
जन्म-मरण व सुख-दुःख आदि के...स्व-स्व अपेक्षा गणित होते हैं...(5)...

यथा भोजन-पानी-रोग के होते...मापन तथा चाप-ताप के...
गमनागमन सर्दी-गर्मी के होते...मापन लेन-देन के...

तन-मन-इन्द्रियों की शक्ति का मापन...होता स्पर्श-रस-गंध-वर्ण का...
लंबाई-चौड़ाई-आकार-प्रकार का...होता मापन वजन व मात्रा का...(6)...

थोड़ा-बहुत-छोटा-बड़ा-आगे...पीछे व पहिले व बाद में...
हानि-लाभ-विकास-विनाश...निर्माण व विध्वंस में...

संगीत कला व नृत्य मूर्ति व...भवन निर्माण यंत्र निर्माण में...
भोजन निर्माण व कृषि शिल्प...युद्ध में गणित होता विज्ञान में...(7)...

अणु से लेकर ब्रह्माण्ड तक व...निगोद से लेकर सिद्ध तक का...
होता है मान चेतन-अचेतन का...तथाहि शुद्ध-अशुद्ध का...
भाव कर्म व उत्थान-पतन का...होता 'मान' ज्ञान-सुख-वीर्य का...
अनंतज्ञानी द्वारा ज्ञात ये सत्य...संक्षेप में काव्य बना 'कनक' का...(8)...

आसपुर, दिनांक 07.06.2015, मध्याह्न 1.00

हर जीव है अहिंसक

(अशुभ-शुभ एवं शुद्ध अहिंसा)

(चाल : छोटी-छोटी गैया....., तुम दिल की धड़कन.....)

अहिंसा भाव है आत्मस्वभाव, (जो) हर जीव में विद्यमान होता है।
निगोद से लेकर सिद्ध जीव तक, शुद्ध (या) अशुद्ध रूप में होता है।।धृ.।।

स्व-सुरक्षा की भावना से लेकर, पर सुरक्षा की जो भावना है।
अशुभ-शुभ-शुद्ध रूप में होती, सो अहिंसा की भावना है।।

'जीओ और जीने दो' या आत्मरक्षा से, लेकर विश्व की रक्षा।
समता शांति क्षमा मार्दव सरल, सहजतादि पावन भावना।।

सुख-शांतिमय जीवन जीना, सुरक्षा व संवर्द्धन करना।
तन-मन को स्वस्थ-सबल बनाना, यह सब है अहिंसा भावना।।

भोजन पानी आवास वसन, अस्त्र-शस्त्र या गृहोपकरण।
यान-वाहन-औषधि आदि सब, है आत्मरक्षा (अहिंसा) के उपकरण।।

आत्मरक्षा हेतु विरोधी हिंसा (अथवा), अन्याय अत्याचार का निवारण।
नीति नियम कानून संविधान, ये सब भी अहिंसा के कारण।।

अचौर्य ब्रह्मचर्य अपरिग्रह, अन्याय अत्याचार का त्याग।
शोषण मिलावट भ्रष्टाचार त्याग भी, होता है अहिंसा का काम।।

ज्ञान-ध्यान व तप त्याग आदि, होते है अहिंसा के लिए।
फैशन-व्यसन व तनाव त्यागादि, होते है अहिंसा के लिए।।

क्रोध मान माया लोभ आदि भी/(करना), करते है जीव अहिंसा के लिए।
क्रोधादि त्याग भी करते जीव, अहिंसा रूपी सुख-शांति के लिए।।

आत्मा का स्व-शुद्ध स्वरूप ही, है अहिंसामय परमो धर्म।
पन्द्रह प्रकार प्रमाद रहित, सच्चिदानंदमय पावन धर्म।।

ऐसे आत्म परिणाम का हनन/(मलिन-विकृत), होना ही है परम हिंसा।
इसी से युक्त अन्य जीवों का द्रव्य, भाव हनन होती है द्रव्य हिंसा।।

अशुभ-शुभ शुद्ध रूप में, होती है अहिंसा तीन प्रकार।
अज्ञान मोह व स्वार्थ के कारण, हेाती अहिंसा से अशुभ प्रकार।।

मत्स्य पालन मुर्गा पालन से लेकर, परिवार पालन हेतु (जो) करते पाप।
अन्य का शोषण या हत्या करके, जो करते है आत्म संरक्षण।।

वे सभी होती अशुभ अहिंसा, जो यथार्थ से होती है हिंसा।
ये सब है संकल्पी हिंसा, जिससे होती आत्म परिणाम की हिंसा।।

इसी से परे दया से युक्त जिससे, स्व-पर की सुरक्षा होती है।
दान सेवा परोपकार वे सब, शुभ रूप अहिंसा होती है।।

इसी से भी परे जो समता भावमय, आत्म परिणाम होता है।
समस्त राग द्वेष मोह रहित भाव, वह शुद्ध अहिंसा भाव होता है।।

यही आत्मा का निज स्वभाव, जो ''सत्य शिव सुन्दर मय'' होता है।
इसे ही कहते है शुद्ध बुद्ध अवस्था, 'कनकनन्दी' इसे ही चाहता है।।

आसपुर, दिनांक 18.06.2015, प्रातः 8.22

'निगोदिया जीव की आत्मकथा व आत्मव्यथा'

(चाल : क्या मिलिये ऐसे लोगों से....., आत्मशक्ति से.....)

मैं हूँ निगोदिया सबसे भिन्न/(क्षुद्र), सबसे क्षुद्र है मेरा तन।
जन्म मरण भी सबसे क्षुद्र, तथापि गाढ़ है मेरा कर्म।।

सबसे कलुषित मेरा भाव, अनादि काल से मेरा सद्भाव।
एक श्वास में (मेरा) होता जन्म-मरण, अठारह-अठारह (अतः) छत्तीस प्रमाण।।

मेरी प्रजाति की संख्या अनंतानंत, अनंत ही रहेगी अनंत तक।
अनेकानेक भेद प्रभेद सहित, मेरी प्रजाति पूर्ण लोक में व्याप्त।।

नित्य निगोद व इतर निगोद, सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित।

सूक्ष्म तथा बादर भेद सहित, तीनों लोक में हम संख्यात।।

जब तक मैं त्रस में न आया, तब तक होती नित्य निगोदावस्था।
त्रस में आकर पुनः निगोद में जन्मा, वह होती है इतर निगोदावस्था।।

सूक्ष्म अवस्था में होता हूँ सर्वत्र, गमनागमन मेरा होता अबाधित।
वज्र पटल को भेदन करता, विष व अग्नि से भी नहीं मरता।।

मुझे न कोई भी मार पाता, मैं भी किसे न बाधा देता।
बादर के मेरे दो भेद होते, सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित होते।।

जमीकन्द आदि में सप्रतिष्ठित, प्रत्येक शरीर में हूँ अप्रतिष्ठित।
मैं ही क्रमशः विकास करता, बनता हूँ द्वीन्द्रिय से मानव तक।।

मानव यदि मोक्ष न प्राप्त करता, पुनः प्राप्त (भी) करता मेरी अवस्था।
वैज्ञानिक भी अभी तक मुझे, पूर्णतः नहीं जान पाये हैं।।

बैक्टेरिया वायरस से भी परे, मेरा स्वरूप जो होता है।
बैक्टेरिया या वायरस से मेरा, कुछ-कुछ स्वरूप भी मिलता है।।

वैज्ञानिक शोध के कारण भी, मेरा अनुमान भी लगता है।
सर्वज्ञ कथित आगम में मेरा, वर्णन हुआ है विशद प्रकार।।

जिसके आधार पर वैज्ञानिक भी, कर पायेंगे मेरा भी आविष्कार।
संक्षिप्त रूप में 'कनकनन्दी' ने, काव्य में लिखा मेरा स्वरूप।।

स्व-साहित्यों में विस्तार से लिखा, वहाँ जानो मेरा स्वरूप।

आसपुर, दिनांक 18.06.2015, अपराह्न 5.00

परम सत्य-स्वरूप व उसके ज्ञाता

(राग : विजयी विश्व तिरंगा प्यारा.....)

असत्य कभी न उत्पन्न होता, सत्य कभी न विनष्ट होता।
उत्पाद-व्यय ध्रौव्य सत्य ही होता, गुण पर्याय युक्त सत्य ही होता।। (1)

सत्य है सनातन स्वयंभू सम्पूर्ण, अनंत गुणयुक्त अनादि अनिधन।
सत्य ही ईश्वर व शिव सुन्दर, सत्य ही सर्वव्यापी परमेश्वर।। (2)

सत्य ही आदि अंत मध्य बाहर, पूर्व-पश्चिम तथा दक्षिण-उत्तर।
दिशा-विदिशा व नीचे-ऊपर, लोकालोक व्यापी विभु ईश्वर।। (3)

जीव पुद्गल धर्म-अधर्म काल, आकाश युक्त द्रव्य षट् प्रकार।
ये ही है परम सत्य द्रव्य रूप, जीव अजीवमय दो प्रकार।। (4)

जीव है चेतनादिमय अमूर्त द्रव्य, कर्म सहित होते संसारी जीव।
चौरासी लक्ष्य योनि प्रभेद युक्त, कर्म रहित होते (सो) जीव मुक्त।। (5)

कर्म सहित जीव का होता जन्म-मरण, देव नारकी तथा तिर्यंच मानव।
तथापि जीव द्रव्य सभी शाश्वत होते, संसारी मुक्तावस्था में ध्रुव रहते।। (6)

मुक्त अवस्था ही जीवों का शुद्ध स्वरूप, संसार अवस्था है अशुद्ध रूप।
शुद्ध अवस्था ही है स्व-परम सत्य, अशुद्ध अवस्थाएँ न परम सत्य।। (7)

अतः सांसारिक सभी संबंध, नहीं होते है परम सत्य।
जन्म-मरण तथा लाभ-अलाभ, सुख-दुःख आदि विभाव भाव।। (8)

सत्ता-संपत्ति व प्रसिद्धि आदि, शत्रु-मित्र तथा कुटुम्ब आदि।
जाति भाषा राष्ट्र नीति नियम, राजनीति कानून व संविधान।। (9)

मानवकृत समस्त भेद-विभेद, अपना-पराया संकीर्ण भाव।
न होते परम सत्य ये विभाव भाव, परम सत्य तो शुद्ध स्वभाव।। (10)

भौतिक-दृश्य-वस्तु न परम सत्य, शुद्ध परमाणु होते परम सत्य।
सोना-चाँदी आदि है अशुद्ध द्रव्य, शुद्ध द्रव्य नहीं इन्द्रिय गम्य।। (11)

लौकिक व्यवहार के समस्त सत्य, 'आकाश नीला' सम होते असत्य।
आकाश अमूर्तिक व वर्ण रहित, 'आकाशी नीला' कहना लौकिक सत्य।। (12)

इन्द्रियातीत होता है परम सत्य, सर्वज्ञ ज्ञानगम्य परम सत्य।
प्रज्ञा श्रद्धा युक्त अनुभव भी गम्य, सर्वज्ञ बनने हेतु 'कनक' प्रयत्न।। (13)

आसपुर, दिनांक 07.05.2015, रात्रि 9.15

परम सत्य की दृष्टि से बिग-बैंग व जीव उत्पत्तिवाद टाइम व स्पेस सिद्धांत भी असत्य

-वैज्ञानिक श्रमणाचार्यश्री कनकनन्दी

(चाल : छोटी-छोटी गैया.....)

सत्य है सनातन अनादि अनिधन, स्वयंभू स्वयंपूर्ण अविनाशी।

नित्य ही नूतन (व) नित्य भी पुरातन, अनंत गुण पर्याय युक्त अविभागी /(अखण्डित)...(1)

उत्पाद सह व्यय से होता समन्वित, तथापि ध्रौव्य से भी होता संयुक्त।
होता परिणमन तथापि अनिधन, अनादि अनंत है स्थितिवान्।।

सत्य न होता नाश अतः है शाश्वत, तथाहि असत्य भी न होता उत्पन्न।
होता परिणमन तथापि न उत्पन्न, उत्पाद व्यय व ध्रौव्य सम्पन्न।। (2)

सत्य में होते गुण अनंत गुण-गण, गुणों में होता है परिणमन।
गुण परिणमन से न होता सत्य-नाश, यह है सत्य का द्रव्यत्व गुण।।

अस्तित्व अन्य गुण सत्य में विद्यमान, जिससे सत्य होता अस्तित्ववान्।
अस्तित्व से सत्य होता है अविनाश, अनादि अनिधन सनातन।। (3)

वस्तुत्व एक गुण सत्य में विद्यमान, जिससे सत्य होता है क्रियावान्।
अतः क्रिया होती अनंतानंत क्रिया, जिससे सत्य होता सदा कर्त्ता।।

प्रमेयत्व एक गुण सत्य में अवस्थान, जिससे सत्य का होता परिज्ञान।
प्रदेशत्व अन्य गुण सत्य में विद्यमान, जिससे सत्य होता है आकारवान्।। (4)

अगुरुलघुगुण सत्य का एक गुण, जिससे सत्य न होता छिन्न-भिन्न।
गुण न बिखरता सत्य न असत्य होता, उत्पाद व्यय ध्रौव्य सतत होता।।

यह है परम सत्य जो है महासत्ता, जिससे बने है विश्व-प्रतिविश्व।
इसके भेदान्तर जीव-अजीव प्रकार, मूर्तिक-अमूर्तिक व शुद्ध-इतर।। (5)

जीव चैतन्यमय शुद्ध व अशुद्ध, संसारी व मुक्त जीव अनंतानंत।
अजीव पाँच प्रकार मूर्तिक व इतर, पुद्गल धर्म-अधर्म-आकाश-काल।।

मूर्तिक होता भौतिक अणु से ब्रह्माण्ड (तक), स्पर्श-रस-गंध-वर्ण-दृश्य-अदृश्य।
सूर्य चन्द्रादि ग्रह नक्षत्र बादल विद्युत् (तक), शरीर इन्द्रिय मन व भोजन तक।। (6)

धर्म गति सहायक अधर्म स्थिति निमित्त, आकाश अवकाश देता लोक-अलोक।
काल परिणमन सहायक निश्चय काल निमित्त, व्यवहार काल होता दिन रात।।

इसी से सिद्ध होता ब्रह्माण्ड भी शाश्वत, तथाहि सम्पूर्ण है जीव-जगत्।
इसी से होता सिद्ध बिग-बैंग सिद्धांत, नहीं है सत्य-तथ्य अविभ्रान्त।। (7)

जीव उत्पत्ति सिद्धांत डार्विन प्रतिपादित, नहीं है सत्य वह क्रम विकास।

स्पेस-टाइम सिद्धांत ऐसा ही है गलत, मूल में ही भूल तथा भ्रम सहित।।
विस्तार से परिज्ञान के निमित्त, मेरे अनेक ग्रंथ हैं प्रकाशित।
जिज्ञासु करो है वहाँ से अध्ययन, 'कनक' को मान्य है सत्य/(तथ्य) विज्ञान।। (8)

तो कभी हुआ ही नहीं था बिग-बैंग!

रहस्य ही बना रह सकता है पृथ्वी का आदि-अंत...

-वैज्ञानिकों को सन्देह!

वाशिंगटन @ पत्रिका-भौतिक विज्ञानियों के नये सिद्धांत का यकीन करे तो दुनिया के आदि-अंत का पता लगाने का दावा करने वाला द बिग-बैंग कभी हुआ ही नहीं। दरअसल बिग-बैंग थ्योरी में क्वांटम नंबर संबंधी अशुद्धि सामने आई है। पृथ्वी के 13.8 अरब साल पहिले उत्पत्ति पर अध्ययन किया गया। इसमें सामने आया कि पृथ्वी पर मौजूद हर चीज की उत्पत्ति एकल असीम घने बिन्दुओं से हुई है, इसे बिग-बैंग नाम दिया गया। अब यह सवाल सामने आ रहे हैं कि क्या वाकई में कोई बिग-बैंग जैसी घटना हुई भी थी या नहीं?

हालाँकि सापेक्षता नियम के मुताबिक बिग-बैंग की बात को काफी ने सही माना। कुछ ने सन्देह जताते कहा था कि सही होने की संभावना प्रायिकता पर आधारित है। बेन्हा विश्वविद्यालय के अहमद फराज अली और लेथब्रिज विश्वविद्यालय के सौर्यादास का दावा है कि नया मॉडल बिग-बैंग को चुनौती दे सकता है। ब्रह्माण्ड का कोई आदि-अंत नहीं है।

राजस्थान पत्रिका, दिनांक 12.02.2015 से साभार

संदर्भ-

लोगो अकिट्ठम खलु अणाइणिहणो सहावणिव्वत्तो।
जीवाजीवेहिं फुडो सव्वागासावयवो णिच्चो।। (त्रिलोकसार गा.4)

अण्णोण्ण-पवेसेण य दव्वाणं आच्छणं हवे लोओ।
दव्वाणं णिच्चत्तो लोयस्स वि मुणह णिच्चत्रं।। (116)

आचार्य कनकनन्दी के साहित्य-

(1) विश्व विज्ञान रहस्य (2) विश्व द्रव्य विज्ञान आदि 30-35 ग्रंथ

परिच्छेद-II

(आत्म-सम्बोधन)

स्वयं का मैं उद्धार करूँ-अन्य हेतु पतन न करूँ

(धर्म प्रचार व पर सुधार हेतु भी आत्म-पतन न करूँ)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे! तू काहे न धीर-धरे.....)

मन रे! तू काहे विकल्प/(संकल्प) करेऽऽऽ
संकल्प-विकल्प से संक्लेश होताऽऽऽ जिससे अशांति बढ़ेऽऽऽ...(ध्रुव)...

अनंत जीव है अनंत कर्मऽऽऽ अनंत होते विचारऽऽऽ
उससे प्रेरित जीव करे कामऽऽऽ करते न सत्य विचारऽऽऽ
तुम तो विचार करोऽऽऽ मन रे!...(1)...

अनंत हुए तीर्थंकर (व) केवलीऽऽऽ अनंत हुए गणधरऽऽऽ
अनंत भी हुए आचार्य उपाध्यायऽऽऽ सभी का न हुआ उद्धारऽऽऽ
मोहनीय अपरम्पारऽऽऽ मन रे!...(2)...

हर जीव प्रति रख सद्भावऽऽऽ सभी का हो आत्म उद्धारऽऽऽ
नवकोटि से योग्य प्रयत्न करोऽऽऽ किन्तु रख साम्याचार/(साम्य विचार)ऽऽऽ
मोह क्षोभ न करऽऽऽ मन रे!...(3)...

यदि कोई माने अति उत्तम हैऽऽऽ उसकी अनुमोदना करोऽऽऽ
यदि न माने तो क्षोभ त्यागकरऽऽऽ रख तू साम्य विचारऽऽऽ
यह उत्तम विचारऽऽऽ मन रे!...(4)...

आत्म-पतन होगा मोह-क्षोभ से मेराऽऽऽ ऐसा तू कभी न करऽऽऽ
स्व-उपकार सह पर उपकार (मैं) करूँगाऽऽऽ ऐसा है दृढ़ विचारऽऽऽ
स्वयं का उद्धार करूँ मैंऽऽऽ मन रे!...(5)...

मेरा कर्त्ता-धर्त्ता मैं ही बनूँगाऽऽऽ मैं नहीं अन्य का कर्त्ताऽऽऽ
ऐसा ही मैं स्व-उद्धार करूँगाऽऽऽ अन्य हेतु करूँ न स्व-पतनऽऽऽ
कनक बनूँ स्व-भगवान्ऽऽऽ कनक साधूँ स्व-प्रयोजनऽऽऽ मन रे!...(6)...

आसपुर, दिनांक 22.06.2015, मध्याह्न 2.42

तन-मन इन्द्रियादि परे मेरा स्वरूप

-मनोविज्ञानी आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे! तू काहे न धीर धरे....., मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे....., सायोनारा.....)

मन रे! तू ना है मेरा रूपऽऽऽ
मैं हूँ सच्चिदानंद अमूर्त/(शुद्ध)ऽऽऽ तू तो विकार रूपऽऽऽ मन रे...(स्थायी)...

तेरे द्वय रूप द्रव्य-भावऽऽऽ द्रव्य तो भौतिक रूपऽऽऽ
भाव रूप तेरा क्षायोपशमिकऽऽऽ मैं क्षायिक विशुद्धऽऽऽ
मैं हूँ चिन्मय शुद्धऽऽऽ मन रे...(1)...

इन्द्रियाँ तुम भी न मम रूपऽऽऽ मैं तो हूँ इन्द्रियातीतऽऽऽ
तुम्हारे भी द्वय रूप द्रव्य-भावऽऽऽ भौतिक-क्षायोपशमिकऽऽऽ
मैं सच्चिदानंद रूपऽऽऽ मन रे...(2)...

देह तुम भी न मेरा स्वरूपऽऽऽ तू तो साक्षात् जड़ रूपऽऽऽ
अस्थि चर्म माँस मल मूत्रमयऽऽऽ औदारिक कर्म स्वरूपऽऽऽ
देहातीत मेरा रूपऽऽऽ मन रे...(3)...

सत्ता-संपत्ति ख्याति पूजा लाभऽऽऽ तुम तो मुझसे भिन्नऽऽऽ
तुम तो जड़ या विकार रूपऽऽऽ बादल से नभ यथा भिन्नऽऽऽ
अविकारी आत्म रूपऽऽऽ मन रे...(4)...

क्रोध-मान-माया-लोभ-मोह-कामऽऽऽ परम शत्रु तुम मेरेऽऽऽ
तेरे नाश हेतु मैं प्रतिज्ञाबद्धऽऽऽ तुम से न मेरा संबंधऽऽऽ
मैं शुद्ध-बुद्ध-आनंदऽऽऽ मन रे...(5)...

अपना-पराया मेरा कोई न अन्यऽऽऽ भले हो ज्ञान-ज्ञेय संबंधऽऽऽ
चेतन-अचेतन-मिश्र भी कोई होऽऽऽ मुझसे सर्व-सदा भिन्नऽऽऽ
विविक्त स्वयं पूर्णऽऽऽ मन रे...(6)...

शत्रु-मित्र-भाई-बंधु-सखा जनऽऽऽ होते है कर्म सापेक्षऽऽऽ
''अहंमेक खलु एक'' मैं हूँ कर्मातीतऽऽऽ अतः शत्रु आदि न संबंधऽऽऽ
अविकारी आत्मानंद मैंऽऽऽ मन रे...(7)...

ये मेरा शुद्ध रूप जो मेरा लक्ष्यऽऽऽ श्रद्धा व प्रज्ञा से ज्ञातऽऽऽ
उपलब्ध भी करना मुझे अवश्यऽऽऽ क्योंकि यही मेरा स्वरूपऽऽऽ

'कनकनन्दी' का निज रूपऽऽऽ मन रे...(8)...

आसपुर, दिनांक 24.06.2015, रात्रि 9.42

अवचेतन संतुष्टि परक शोध-बोध-नव प्रवर्तन परक कविता

हे आत्मन्! मन व इन्द्रियों को दास बनाओ!

-मनोवैज्ञानिक आचार्यश्री कनकनन्दी

(चाल : मन रे तू काहे न धीर धरे.....)

जिया रे!/(आत्मन्) तू काहे दुर्बल बनेऽऽऽ!
तेरे अन्तस में अनंत शक्तिऽऽऽ उसे तू प्राप्त करोऽऽऽ...(ध्रुव)...

इन्द्रिय मन तेरे होते है दासऽऽऽ इनको वश में करोऽऽऽ
मन करता है मनमानी तोऽऽऽ उसे तू शासन करोऽऽऽ
सबका प्रभु बन रेऽऽऽ जिया रे...(1)...

राग में आसक्त द्वेष से उद्वेगऽऽऽ होता है जब मनऽऽऽ
उसे अंकुश लगाकर जियाऽऽऽ समता से कर ध्यानऽऽऽ
तू ध्यानी बन रेऽऽऽ जिया रे...(2)...

अनंतानंत तेरी शक्ति हैऽऽऽ क्या कर सकेगा मनऽऽऽ
मन यदि कहे चलता तो ऐसाऽऽऽ उसे तू चालाक मानऽऽऽ
शक्तिमान बन रेऽऽऽ जिया रे...(3)...

अनादिकाल से जो चल रहा हैऽऽऽ उसे तू मिथ्या मानऽऽऽ
अभी तक जो नहीं चला हैऽऽऽ उसे तू मोक्ष मानऽऽऽ
मिथ्या भ्रम तज रेऽऽऽ जिया रे...(4)...

अन्य की नकल या प्रतिस्पर्द्धाऽऽऽ यदि यह करे मनऽऽऽ
उसे तू दण्डित करके जियाऽऽऽ कर आत्म अनुशासनऽऽऽ
तू मौलिक बन रेऽऽऽ जिया रे...(5)...

पर की तुलना-अवहेलनाऽऽऽ छोड़ के कर स्व-ध्यानऽऽऽ
बाह्य प्रवृत्ति या बहानेबाजीऽऽऽ मन की तू दूर करऽऽऽ
स्वाधीन बन रेऽऽऽ जिया रे...(6)...

'अवचेतन संतुष्टि' जब करेऽऽऽ मन को तू दण्डित करऽऽऽ

'कौन क्या कहेंगे' (यदि) ऐसा कहे मनऽऽऽ तो उसे तू संयत करऽऽऽ
अप्रमत्त बन रेऽऽऽ जिया रे...(7)...
तथाहि इन्द्रियों को दासी बनाकरऽऽऽ अपनी सेवा कराओऽऽऽ
आत्मानुशासी-स्वामी बनकरऽऽऽ आत्म-वैभव को पाओऽऽऽ
'कनक' प्रभु बन रेऽऽऽ जिया रे...(8)...
अनंत तेज वीर्य स्वभावी बनकरऽऽऽ 'कनक' स्वाधीनता पाओऽऽऽ
तू तो सच्चिदानंद विभु हैऽऽऽ स्व-स्वरूप प्राप्त करोऽऽऽ
शुद्ध-बुद्ध बन रेऽऽऽ जिया रे...(9)...
आसपुर, दिनांक 20.06.2015, रात्रि 11.22

अवचेतन संतुष्टि परे शोध-बोध-नव प्रवर्तन परक कविता

हे आत्मन्! मन व इन्द्रियों को दास बनाओ!

मूल रचयिता-कनकनन्दी
रूपान्तरण-श्रमण सुविज्ञसागर

(चाल : ज्योति कलश छलके.....)
अनंत शक्ति तुझमेंऽऽऽ जिया रेऽऽऽ असीम शक्ति तुझमेंऽऽऽ
निज क्षमता/(शक्ति) को जान ले जिया...दुर्बल काहे बनेऽऽऽ
अनंत शक्ति तुझमेंऽऽऽ...(ध्रुव)...
मन जब होता राग-द्वेष वश...इसे अंकुश लगा...कर ध्यानऽऽऽ
तू ध्यानी बन रेऽऽऽ...2...अनंत शक्ति...(1)...
इन्द्रिय-मन करते मनमानी...इनको दास बना ले प्राणी
इनका प्रभु बन रेऽऽऽ...2...अनंत शक्ति...(2)...
अनंतानंत है तेरी शक्ति...चालाक मन की सीमित शक्तिऽऽऽ
शक्तिमान बन रेऽऽऽ...2...अनंत शक्ति...(3)...
अनादिकाल से जो चल रहा है...मिथ्या-अज्ञान उसे मान/(जान)ऽऽऽ
मिथ्या भ्रम त्यज रेऽऽऽ...2...अनंत शक्ति...(4)...
मन करता है अन्य की नकल...उसे दण्डित कर...करो स्व-आधीनऽऽऽ
तू स्वाधीन बन रेऽऽऽ...2...अनंत शक्ति...(5)...
पर की तुलना-अवहेलना...छोड़ के कर (तू) निज ध्यानऽऽऽ
मौलिक तू बन रेऽऽऽ...2...अनंत शक्ति...(6)...

''कौन क्या कहेगा'' ऐसा कहे मन...तब तू उसको कर संयतऽऽऽ
अप्रमत्त बन रेऽऽऽ...2...अनंत शक्ति...(7)...
इन्द्रिय-मन को दास बनाकर...सेवा कराओ स्वामी बनकरऽऽऽ
सुविज्ञ प्रभु/(विभु) बन रेऽऽऽ...2...अनंत शक्ति...(8)...
अनंत शक्ति तुझमें...आत्मन्...असीम शक्ति तुझमेंऽऽऽ
आसपुर, दिनांक 27.06.2015, रात्रि 9.38

स्व-ज्ञान से बनूँ सर्वज्ञ

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे तू काहे न धीर धरे.....)
जीया रे! स्वयं को जाना करोऽऽऽ
स्व को जानने से बनेगा सर्वज्ञऽऽऽ ऐसा तो माना करोऽऽऽ।।ध्रुव।।
स्वयं को जाने बिना अन्य के ज्ञान सेऽऽऽ न बनोगे तू सर्वज्ञऽऽऽ
स्वज्ञान हेतु पर को भी (तू) जानऽऽऽ यही है भेद विज्ञानऽऽऽ
भेद विज्ञानी बन रेऽऽऽ जीया रे...(1)...
तू तो इकाई है अन्य तो शून्य समऽऽऽ स्वयं को पहले जानोऽऽऽ
इकाई सहित शून्य का मूल्य हैऽऽऽ अन्यथा शून्य का न मोलऽऽऽ
स्व मूल्यांकन करोऽऽऽ जीया रे...(2)...
तेरे अन्तस में अनंत गुण-गनऽऽऽ उसे तू जाना करऽऽऽ
उसे जानने हेतु सर्वज्ञ बनऽऽऽ यह विश्व का सारऽऽऽ
तू ही तो समयसारऽऽऽ जीया रे...(3)...
मति-श्रुत-अवधि-मनःपर्ययऽऽऽ न होते केवलज्ञानऽऽऽ
तू तो है मतिश्रुत ज्ञानी अभीऽऽऽ पाना है केवलज्ञानऽऽऽ
अतः तू विद्यार्थी बनऽऽऽ जीया रे...(4)...
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि छोड़करऽऽऽ छोड़ के पर प्रपंचऽऽऽ
स्व हेतु ही ध्यान अध्ययन करऽऽऽ त्याग के बाह्य प्रपंचऽऽऽ
'कनक' स्व में विचरऽऽऽ जीया रे...(5)...
जीया रे! तू स्वयं को जाना करोऽऽऽ...
आसपुर, दिनांक 22.06.2015, प्रातः 9.17

मोही-रागी-द्वेषी-कामुक से माध्यस्थ भाव

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे! तू काहे न धीर धरे.....)

जिया/(आत्मा) रे! तू काहे न धीर धरेऽऽऽ
मोही-रागी-द्वेषी जन सेऽऽऽ काहे तू नेह धरेऽऽऽ...(ध्रुव)...

सदाकाल उनसे माध्यस्थ रहोऽऽऽ राग-द्वेष न करोऽऽऽ
जिससे बनोगे तुम धीर-वीरऽऽऽ शांत-गंभीर-प्रवरऽऽऽ
समता भाव धरोऽऽऽ जिया रे...(1)...

आत्मा-अनात्मा उन्हें न ज्ञातऽऽऽ स्वर्ग या मोक्षपुरऽऽऽ
कर्म चेतना से पराभूत होकरऽऽऽ भोगते भोग प्रचुरऽऽऽ
उनसे न मोह करोऽऽऽ जिया रे...(2)...

सत्ता-संपत्ति-प्रसिद्धि-बुद्धि कोऽऽऽ मानते वे स्व-स्वरूपऽऽऽ
स्व-आत्म रूप से विपरीत चलतेऽऽऽ जानते न आत्म-स्वरूपऽऽऽ
तुम हो चिन्मय रूप (हो)ऽऽऽ जिया रे...(3)...

मैत्री रखो तू हर जीव सेऽऽऽ गुणी से करो प्रमोदऽऽऽ
दुःखी जीवों से करुणा भावऽऽऽ विपरीत में हो माध्यस्थऽऽऽ
स्व-पर हित कर रेऽऽऽ जिया रे...(4)...

स्व-पर हित में से भी तू जियाऽऽऽ स्वहित आद्य करोऽऽऽ
पहले स्वयं प्रकाशित होकरऽऽऽ अन्य को प्रकाशित करोऽऽऽ
कनक तू स्वरूप वरोऽऽऽ जिया रे...(5)...

आसपुर, दिनांक 22.06.2015, प्रातः 8.13

मन का प्रभु में लय/तन्मय

(मन वश करने का उपाय)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे! तू काहे न धीर धरे.....)

मन रे! तू काहे न धीर धरे!
तेरे प्रभु तो तुझ में विराजितऽऽऽ उनकी तू पूजा करोऽऽऽ।ध्रुव।

इन्द्रियाँ तो तेरी दासी होती हैंऽऽऽ उनकी पूजा न करोऽऽऽ
उनकी पूजा से तू होगा अधीरऽऽऽ यह तू विचार करोऽऽऽ
प्रभु की पूजा करोऽऽऽ मन रे...(1)...

इन्द्रियाँ प्रवृत्ति तो परे में होतीऽऽऽ पर तो होगा ही परऽऽऽ
स्व-प्रभु की उपासना छोड़करऽऽऽ पर में तू नेह न करऽऽऽ
स्व-पर विवेक करोऽऽऽ मन रे...(2)...

प्रभु की पूजा से बनेंगे मनस्वीऽऽऽ श्रद्धा का बनोगे तू घरऽऽऽ
दासी की सेवा से बनोगे तू दासऽऽऽ दास का न होता सुविचारऽऽऽ
प्रज्ञा को तीक्ष्ण तू करऽऽऽ मन रे...(3)...

श्रद्धा व प्रज्ञा से युक्त तू होकरऽऽऽ प्रभु को स्मरण तू करोऽऽऽ
प्रभु तेरे में ही प्रगट होंगेऽऽऽ प्रभु का तू दर्शन करोऽऽऽ
तन्मय रूप धरोऽऽऽ मन रे...(4)...

तू जब लीन होगा प्रभु मेंऽऽऽ प्रभु ही रहेंगे प्रभु मेंऽऽऽ
ज्ञाता व ज्ञेय, ध्याता व ध्येयऽऽऽ होंगे अब अभेदमयऽऽऽ

परम होगा ये महऽऽऽ/(कनक बनेगा स्वमयऽऽऽ)
मन रे तू काहे न धीर धरेऽऽऽ मन रे...(5)...

आसपुर, दिनांक 21.06.2015, रात्रि 9.40

मेरे निस्पृह समताधारी बनने के उपाय

(रागी-द्वेषी-मोही से अप्रभावित होने के उपाय या निन्दा-प्रशंसा से परे होने के उपाय)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे! तू काहे न धीर धरे.....)
जिया रे! तू काहे विकल्प करे!
रागी-द्वेषी-दोषी जन सेऽऽऽ काहे स्व-मूल्य करेऽऽऽ...(ध्रुव)...

उनकी निन्दा या प्रशंसा सेऽऽऽ तेरा क्या लाभ है?ऽऽऽ
जो दीपक स्वयं न जला हैऽऽऽ उससे क्या प्रकाश है?ऽऽऽ
स्वयं प्रकाशी बन रेऽऽऽ जिया रे...(1)...

तुझे न चाहिए ख्याति पूजा लाभऽऽऽ उनसे क्या तेरा प्रयोजनऽऽऽ
तुझे तो चाहिए स्व-उपलब्धिऽऽऽ स्व से ही तेरा प्रयोजनऽऽऽ
स्व का मूल्य कर रेऽऽऽ जिया रे...(2)...

तू तो अनंत ज्ञानघन धनीऽऽऽ अनंत सुख वीर्यवान्ऽऽऽ
संकल्प-विकल्प-संक्लेश त्यागोऽऽऽ पाओगे स्व-अनंत धनऽऽऽ
स्वयं को तू प्राप्त करऽऽऽ जिया रे...(3)...

रागी-द्वेषी-मोही स्वयं ही दोषी हैऽऽऽ आध्यात्म गुणों से रहितऽऽऽ
वे क्या जानेंगे आध्यात्मिक मूल्यऽऽऽ जो स्वयं मूल्य विहीनऽऽऽ
स्व-कल्याण कर रेऽऽऽ जिया रे...(4)...

स्व को जानो तू स्व को मानोऽऽऽ करो स्वयं में आचरणऽऽऽ
यह मोक्षमार्ग आत्म का स्वभावऽऽऽ इसे प्राप्त करोऽऽऽ
'कनक' स्वरूप वर रेऽऽऽ जिया रे...(5)...

आसपुर, दिनांक 23.06.2015, प्रातः 7.08

''कौन क्या कहेगा'' से परे आत्म-विकास मैं करूँ!

-मनोवैज्ञानिक आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे तू काहे न धीर धरे.....)
जिया रे! तू काहे विकल्प करेऽऽऽ!
''कौन क्या कहेगा'' इसके लिए तूऽऽऽ क्यों संक्लेश करेऽऽऽ...(ध्रुव)...

संकल्प-विकल्प व संक्लेश सेऽऽऽ समता भाव नशेऽऽऽ
अशांति होती चंचलता आतीऽऽऽ
ध्यान अध्ययन नशेऽऽऽ
आत्मिक भाव नशेऽऽऽ जिया रे...(1)...

निन्दा प्रशंसा व परोपदेश सेऽऽऽ शिक्षा अवश्य गहोऽऽऽ
''कौन क्या कहेगा'' इसके कारणऽऽऽ अयोग्य/(अनात्म) भाव न गहोऽऽऽ
अन्धानुकरण न करोऽऽऽ/(समता न त्यज रेऽऽऽ) जिया रे...(2)...

आत्म स्वभाव रहित वे जनऽऽऽ राग-द्वेष-मोह युक्तऽऽऽ
योग्य-अयोग्य वे क्या जानेऽऽऽ उनसे रहो तू विरक्तऽऽऽ

स्व-स्वभाव में रतऽऽऽ जिया रे...(3)...

आत्म स्वभाव में जो संत रतऽऽऽ वे न करते प्रपञ्चऽऽऽ
उनसे आत्मिक शिक्षा लेकरऽऽऽ तू भी त्यागो प्रपञ्चऽऽऽ
अनात्म भाव विरक्तऽऽऽ जिया रे...(4)...

''कौन क्या कहेगा'' इसके कारणऽऽऽ लोग करते फैशन-व्यसनऽऽऽ
आडम्बर ढोंग दिखावा प्रपञ्चऽऽऽ ख्याति-पूजा-लाभ-निदानऽऽऽ
आत्म साधक बन रेऽऽऽ आत्म विकास कर रेऽऽऽ
आत्म निवास कर रेऽऽऽ जिया रे...(5)...

तीर्थंकर बुद्ध ईसा मसीहऽऽऽ सुकरात मीरा टेरेसाऽऽऽ
साधु-साध्वी-गुणी-वैज्ञानिकऽऽऽऽ किसे भी न छोड़ते दुर्जनऽऽऽ
'कनक' न छोड़ आत्म गुणऽऽऽ जिया रे...(6)...

आसपुर, दिनांक 23.06.2015, मध्याह्न 11.57

मुझे आत्मदर्शन करना है न कि प्रदर्शन

(मुझे सिद्धि चाहिए, न कि ख्याति पूजा प्रसिद्धि)

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे! तू काहे न धीर धरे....., सायोनारा.....)

जिया रे! धर्म को सही समझोऽऽऽ
समता-शांति व आत्म-विशुद्धिऽऽऽ होता है निश्चय धर्मऽऽऽ...(ध्रुव)...

इसी हेतु जो बाह्य साधन/(साधना)ऽऽऽ होता है व्यवहार धर्मऽऽऽ
दोनों से युक्त धर्म करनाऽऽऽ होता है यथार्थ से धर्मऽऽऽ
पालो तू यथार्थ धर्मऽऽऽ जिया रे...(1)...

निश्चय धर्म हेतु व्यवहार धर्मऽऽऽ दोनों परस्पर सहयोगीऽऽऽ
संतुलित हो साधन-साध्यऽऽऽ तब ही होता धर्मानुरागीऽऽऽ
धर्मानुरागी बने रेऽऽऽ जिया रे...(2)...

भोजन पाक हेतु यथा अग्निऽऽऽ किन्तु अग्नि ही नहीं भोजनऽऽऽ
अयोग्य होती अधिक भी अग्निऽऽऽ जलाती वह यथा भोजनऽऽऽ
संतुलित धर्म कर रेऽऽऽ जिया रे...(3)...

यथा समता-शांति आदि बिनऽऽऽ बाह्य साधना भी अयोग्यऽऽऽ
उभय लोक नाशक स्व-पर घातकऽऽऽ केवल दिखावा (दंभ) आडम्बरऽऽऽ
दिखावा धर्म न करऽऽऽ जिया रे...(4)...

दिखावा आदि से न होता धर्मऽऽऽ धर्म तो आत्म-स्वभावऽऽऽ
दिखावा न चाहिए स्वभाव हेतुऽऽऽ स्वयं तू स्व-स्वभावमयऽऽऽ
आत्म रमण कर रेऽऽऽ जिया रे...(5)...

चापलुस-वेश्या-नट-नटी-ठगऽऽऽ करते हैं नीच प्रदर्शनऽऽऽ
ज्ञानी-ध्यानी-आध्यात्मिक संतऽऽऽ करते हैं आत्म-दर्शनऽऽऽ
कनक करे आत्मदर्शनऽऽऽ जिया रे...(6)...

ख्याति-पूजा-प्रसिद्धि-पत्रिका/(मञ्च)ऽऽऽ होर्डिंग-भीड़-विज्ञापनऽऽऽ
इनसे न होता आत्म-दर्शनऽऽऽ एकांत-मौन में कर ध्यानऽऽऽ
'कनक' होगा (तेरा) कल्याणऽऽऽ जिया रे...(7)...

आसपुर, दिनांक 23.06.2015, अपराह्न 5.56

(यह कविता आध्यात्म प्रेमी वैज्ञानिक द्वय 1. डॉ. पारसमल अग्रवाल व 2. डॉ. श्यामलाल गोदावत की दीर्घकालिक पीड़ा व भावना से बनी।)

परोपदेशी पाण्डित्य ही नहीं स्व-उपदेशी मैं बनूँ!

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे तू काहे न धीर धरे....., सायोनारा....., मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे.....)
जिया रे! तू स्व-उपदेशी बनऽऽऽ
पर-उपदेशी पाण्डित्य बनकरऽऽऽ आत्म वञ्चना न करऽऽऽ...(ध्रुव)...

चारों ज्ञानधारी तीर्थंकर मुनिऽऽऽ नहीं करते उपदेशऽऽऽ
एकांत-मौन में आत्मध्यान करतेऽऽऽ जब तक न हो केवलज्ञानऽऽऽ
उनका आदर्श पाल रेऽऽऽ जिया रे...(1)...

आत्महित सह परहित करऽऽऽ पहले तू कर स्व-हितऽऽऽ
दोनों के मध्य में स्व-हित को तूऽऽऽ उत्तम रूप से करऽऽऽ
स्व-पर प्रकाशी बनऽऽऽ जिया रे...(2)...

कलिकाल में तो परोपदेश मेंऽऽऽ होते हैं अति चतुरऽऽऽ

स्वयं को ही निर्दोष-ज्ञानी मानतेऽऽऽ करते न आत्म-उद्धारऽऽऽ
स्वयं का उद्धार तू करऽऽऽ जिया रे...(3)...

आत्म-उद्धार की चर्चा न चाहतेऽऽऽ चाहते हैं वाक्-आडम्बरऽऽऽ
सास-बहू कथा मनोरञ्जन कथाऽऽऽ चाहते हैं स्वार्थ की चर्चाऽऽऽ
व्यर्थ की चर्चा तू छोड़ऽऽऽ जिया रे...(4)...

स्वयं को ही जानो स्वयं को मानोऽऽऽ आत्मा की चर्चा करो हैऽऽऽ
आत्मा का ही ध्यान-अध्ययन करोऽऽऽ जिससे मिटे भव-व्यथाऽऽऽ
आत्म-संबोधन कर रेऽऽऽ जिया रे...(5)...

स्व प्रकाशी बनो पर प्रकाश होगाऽऽऽ चारित्र/(आचरण) ही बने उपदेशऽऽऽ
मूक केवली व सिद्ध भगवान् भीऽऽऽ गणधर से भी होते पूज्यऽऽऽ
'कनक' आत्मोपलब्धि करऽऽऽ जिया रे...(6)...

आसपुर, दिनांक 23.06.2015, रात्रि 10.30

कषाय शत्रु नाश से मुझे पाना है मुक्ति

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे तू काहे न धीर धरे....., मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे....., शत-शत.....)
जिया रे! तू काहे कषाय करे/(विकार करे)।
क्रोध मान माया लोभ मोहऽऽऽ उन्हें तू दूर करेऽऽऽ...(ध्रुव)...

बाह्य शत्रु से भी ये परम शत्रु हैऽऽऽ इन्हें न नेह करेऽऽऽ
बाह्य शत्रु जो क्षति करते हैऽऽऽ उन्हीं से ये अनंत करेऽऽऽ
कर्म बंधन करेऽऽऽ जिया रे...(1)...

कर्म बंधन से मिलते दुःखऽऽऽ संसार चक्र चलेऽऽऽ
नरक निगोदादि चौरासी लक्ष योनिऽऽऽ भ्रमण चक्र चलेऽऽऽ
अनंत दुःख देवेऽऽऽ जिया रे...(2)...

क्रोध से मैत्री नाश मान से बढ़े शत्रुऽऽऽ माया से विश्वास नशेऽऽऽ
लोभ से शुचि नशे मोह से श्रद्धा नशेऽऽऽ समता व शांति विनशेऽऽऽ
रोग-शोक प्रगटेऽऽऽ जिया रे...(3)...

कषाय हेतु भले बाह्य कारक बनेऽऽऽ मुख्य है तेरी दुर्बलताऽऽऽ

आत्म शक्ति जगाओ दुर्बलता भगाओऽऽऽ कषाय होगी चकनाचुरऽऽऽ
तू (तो) अनंत शक्ति सम्पन्नऽऽऽ जिया रे...(4)...

कषाय नाश से आत्म शक्ति बढ़तीऽऽऽ मिलती है आत्मिक शांतिऽऽऽ
कर्म भी क्षय होते आत्मगुण बढ़तेऽऽऽ अंत में मिलती है मुक्तिऽऽऽ
कनक मुक्ति को वरेऽऽऽ जिया रे...(5)...

आसपुर, दिनांक 24.06.2015, अपराह्न 6.07

यथार्थ से शत्रु-मित्र

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे! तू काहे न धीर धरे....., मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे....., भातुकली..... (मराठी)....., सायोनारा.....)

जिया रे! शत्रु-मित्र न कोईऽऽऽ
अनंत भव में हर जीव सेऽऽऽ संबंध हुए हैं तेरेऽऽऽ...(ध्रुव)...

अनंत काल से अनंत भव मेंऽऽऽ अनंत हुए (पञ्च) परिवर्तनऽऽऽ
सूक्ष्म निगोदिया से देव तक मेंऽऽऽ अनंत हुए जन्म-मरणऽऽऽ
संसार चक्र भी यहीऽऽऽ जिया रे...(1)...

चतुर्गति रूपी संसार मध्य मेंऽऽऽ चौरासी लक्ष योनि मध्य मेंऽऽऽ
पञ्च परिवर्तन अनंत हुएऽऽऽ संबंध अनंतानंतऽऽऽ
संसार भ्रमण यहीऽऽऽ जिया रे...(2)...

भाई-बंधु-सखा-माता-पिता-सुताऽऽऽ पत्नी व पुत्रादि रूप मेंऽऽऽ
संबंध हुए हैं अनंत बारऽऽऽ शत्रु व मित्र रूप मेंऽऽऽ
अपना-पराया न कोईऽऽऽ जिया रे...(3)...

शत्रु भी अनेक बार मित्र बने हैंऽऽऽ मित्र भी बन गये शत्रुऽऽऽ
तथाहि भाई-बंधु आदि में भीऽऽऽ ऐसे हुए परिवर्तन भीऽऽऽ
शत्रु-मित्र न कोईऽऽऽ जिया रे...(4)...

इसीलिए कोई न अपना-परायाऽऽऽ जानो तू निश्चय सेऽऽऽ
स्व-आत्म तत्त्व ही होता है अपनाऽऽऽ अन्य होता व्यवहार सेऽऽऽ
निश्चय से स्व को जानोऽऽऽ जिया रे...(5)...

आत्म-कल्याण हेतु तेरा ही स्वभावऽऽऽ होता है अपना स्व-जनऽऽऽ
तेरे ही राग-द्वेष-काम-क्रोध आदिऽऽऽ होते निश्चय से पर जनऽऽऽ
आत्म-स्वभाव भज रेऽऽऽ जिया रे...(6)...

लौकिक भाई बंधु शत्रु मित्र प्रतिऽऽऽ जो होते राग-द्वेष-मोहऽऽऽ
ये ही तेरे शत्रु (स्व) स्वभाव ही मित्रऽऽऽ अतः त्यज ये रोग-द्वेषऽऽऽ
बनो तू साम्य स्वरूपऽऽऽ/(बन तू शुद्ध स्वरूपऽऽऽ) जिया रे...(7)...

रत्नत्रय सह दशविध धर्मऽऽऽ समता-निस्पृहता व शांतिऽऽऽ
ये ही प्राप्य ये ही तेरे मित्रऽऽऽ जिससे मिले मोक्ष सुखऽऽऽ
'कनक' शुद्ध-बुद्ध बनऽऽऽ जिया रे...(8)...

आसपुर, दिनांक 26.06.2015, अपराह्न 5.55

जिया रे ! अधर्म भाव को त्यज

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे! तू काहे न धीर धरे....., मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे....., सायोनारा.....)

जिया रे! अधर्म भाव त्यज रे...
क्रोध-मान-माया-लोभ-कामऽऽऽ ये हैं अधर्म भावऽऽऽ...(ध्रुव)...

मोह है सबसे अधिक अधर्मऽऽऽ सत्य धर्म का न होना भानऽऽऽ
आत्मा से भिन्न अनात्म तत्त्व मेंऽऽऽ होता है आत्म का भानऽऽऽ
न होता आत्म-ज्ञानऽऽऽ जिया रे...(1)...

क्रोध भी जीव का अधर्म भावऽऽऽ क्षमा धर्म न होता पालनऽऽऽ
उद्वेग-उत्तेजना होते आत्मा मेंऽऽऽ कलह-विसंवादादि होताऽऽऽ
क्षमा धर्म न पलताऽऽऽ जिया रे...(2)...

मान भी जीव का अधर्म भावऽऽऽ मार्दव धर्म न होनाऽऽऽ
अष्टमद का भी होता सद्भावऽऽऽ विनय धर्म न होनाऽऽऽ
सम्यक्त्व धर्म नशनाऽऽऽ जिया रे...(3)...

माया भी जीव का अधर्म भावऽऽऽ आर्जव धर्म न होनाऽऽऽ
मन-वचन-काय में होती कुटिलताऽऽऽ सरल/(सहज) भाव न होनाऽऽऽ
ढोंग-पाखण्ड होनाऽऽऽ जिया रे...(4)...

लोभ भी जीव का अधर्म भावऽऽऽ पावन धर्म न होनाऽऽऽ
तृष्णा असंतोष भाव में होतेऽऽऽ वैराग्य भाव न होनाऽऽऽ
अनात्म में राग होनाऽऽऽ जिया रे...(5)...

काम भी जीव का अधर्म भावऽऽऽ अब्रह्म में राग होनाऽऽऽ
अश्लील-कामुक-मैथुन (भाव) होतेऽऽऽ स्व-ब्रह्म में रमण न होनाऽऽऽ
ब्रह्मानंद को न पानाऽऽऽ जिया रे...(6)...

अधर्म त्याग से धर्म भाव जगेऽऽऽ समता-शांति-स्वभावऽऽऽ
चिदानंदमय निज स्व-स्वभावऽऽऽ शुद्ध-बुद्ध आनंद भावऽऽऽ
'कनक' का स्व-शुद्ध भावऽऽऽ जिया रे...(7)...

आसपुर, दिनांक 27.06.2015, मध्याह्न 2.32

बाह्य निर्माण नहीं, अंतरंग निर्माण/(निर्वाण) मैं करूँ

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : मन रे तू काहे न धीर धरे....., मोक्ष पद मिलता धीरे-धीरे....., सायोनारा.....)

जिया रे! तू स्व-निर्माण करऽऽऽ
अनात्म निर्माण (तो) अनंत कियाऽऽऽ अभी स्व-निर्माण करऽऽऽ...(ध्रुव)...

राजा-महाराजा-चक्री तक केऽऽऽ बाह्य निर्माण न रहेऽऽऽ
कृत्रिम निर्माण तो अवश्य नशेंगेऽऽऽ आत्म निर्माण/(निर्वाण) अचल रहेऽऽऽ
परिनिर्वाण तू करऽऽऽ जिया रे...(1)...

जिस निर्माण से संकल्प होताऽऽऽ तथाहि होता विकल्पऽऽऽ
आरंभ-परिग्रह-संक्लेश होतेऽऽऽ ऐसा निर्माण तू न करऽऽऽ
निराडम्बर-निस्पृह बनऽऽऽ जिया रे...(2)...

सर्व संकल्प-विकल्प नशने सेऽऽऽ नाश होगा संक्लेश भीऽऽऽ
आरम्भ-परिग्रह-ममत्व नशने सेऽऽऽ भावना होगी निर्मलऽऽऽ
भावना प्रशस्त करऽऽऽ जिया रे...(3)...

पावन भावना से मन स्थिर होताऽऽऽ श्रेष्ठ होता ध्यान-अध्ययनऽऽऽ
धर्म ध्यान परे शुक्र ध्यान होताऽऽऽ जिससे मिलता है मोक्षऽऽऽ
मोक्ष की साधना करऽऽऽ जिया रे...(4)...

इसी हेतु शांति-कुंथु-अरहनाथऽऽऽ त्यागे हैं चक्रवर्तीत्वऽऽऽ
षट्खण्ड वैभव बाह्य निर्माण त्यागेऽऽऽ पाये हैं निर्वाण पदऽऽऽ

उनके आदर्श (तू) पालऽऽऽ/
कनक स्व-निर्माण करऽऽऽ जिया रे...(5)...

आसपुर, दिनांक 23.06.2015, रात्रि 9.41

आध्यात्म रहस्यवादी कविता

स्व-उपलब्धि ही सर्व उपलब्धि

(स्व-आत्म सम्बोधन एवं मेरा अंतिम लक्ष्य)

(राग : कसमें-वादे प्यार वफा सब बातें हैं.....)

तू ही तेरा परम सत्य है-अन्य सब सहयोग है
तू ही तेरा आदि अंत-मध्य शाश्वतिक/(सार्वभौम) शाश्वत सत्य है...(स्थायी/धत्ता)...

जब से हैऽऽ ब्रह्माण्ड भी यह...तब से तेरा भी अस्तित्वऽऽ
अनादि अनंतऽऽ शाश्वतिक यह...तेरा भी हैऽऽ सह-अस्तित्वऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(1)...

तू तो चेतनऽऽ ज्ञानानन्दमय...विश्व/(ब्रह्माण्ड) उभय रूप हैऽऽ
तेरे समान हीऽऽ अनंत चेतन...और भी अचेतन रूप हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(2)...

अणु से लेकरऽऽ निहारिका तक...अनंत अचेतन रूप हैऽऽ
निगोदिया सेऽऽ नित्यानंदमय...अनंत चिन्मय रूप हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(3)...

तेरा अस्तित्वऽऽ यदि न होता...अन्य से (तेरा) क्या लाभ हैऽऽ
तुझे तू हीऽऽ यदि न पाया/(मिला) तो...ऽअन्य लाभ क्या लाभ हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(4)...

यदि शरीर मेंऽऽ तू न रहा तो...शरीर जड़ का पिण्ड हैऽऽ
जलाओ गाढोऽऽ या फेंक दो...तुझ से नहीं संबंध हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(5)...

ऐसा ही तेराऽऽ अस्तित्व कारण...विश्व/(ब्रह्माण्ड) अस्तित्ववान हैऽऽ

अन्यथा स्वऽऽ अस्तित्व बिन...तेरे लिए सत्ता शून्य हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(6)...

तू है ज्ञाताऽऽ ब्रह्माण्ड ज्ञेय...ज्ञाता बिना न ज्ञेय हैऽऽ
ज्ञाता-ज्ञेयऽऽ उभय सम्बन्ध...ज्ञाता से ज्ञेय अनुबन्ध हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(7)...

यथा दीपऽऽ स्व-पर प्रकाशी...ज्योति से प्रकाशित द्रव्य हैऽऽ
द्रव्य से दीपऽऽ न प्रकाशित है...तथा ही ज्ञान व ज्ञेय हैऽऽ
तू ही तेरा आदि अंत...(8)...

इसीलिये तोऽऽ स्वयं को जानो...ब्रह्माण्ड/(विश्व) बनेगा ज्ञेय हैऽऽ
स्वज्ञान हेतुऽऽ अनंत ज्ञान...जिससे ब्रह्माण्ड ज्ञेय हैऽऽ
तू ही तेरा आदि अंत...(9)...

स्वात्मोपलब्धिऽऽ सर्वोपलब्धि...यह आध्यात्मिक सार हैऽऽ
'कनकनन्दी' काऽऽ सर्वस्व यह...अन्य तो मिथ्या मोह हैऽऽ
तू ही तेरा आदि अंत...(10)...

आध्यात्म आराधना

(मंदिर मूर्ति एवं पूजा की आध्यात्मिक रहस्यवादी कविता)

(रूपक अलंकारमय आध्यात्मिक स्तुति)

(तर्ज : राग-बंगला-उड़िया....., मराठी कविता-सुवर्ण पात्री मंगल आरती....., मराठी कविता-तन देवालय मन सिंहासन.....)

तन मेरा मंदिर मन सिंहासन, उसपे भाव कमल^2।
उसे मध्य में विराजमान है, मेरा ही परमेश्वर^2।।1।।

उसकी सेवा पूजा आराधन, कर हूँ रजनी दिवा^{2}।
भेदाभेदमय अहर्निशी चले, परम आराध्य सेवा^{2}।।2।।

पर आकर्षण (व) विकर्षण हीन, मेरा ही भाव आह्वान^2।
समता भाव में स्वयं में संस्थित, करूँ मैं सन्निधिकरण^2।।3।।

भाव निर्मल जल अर्पण से, कल्मष भाव शोधन^2।
शांत शीतल भाव चंदन से, संक्लेश ताप शमन^2।।4।।

अक्षत भाव रूपी तन्दुल अर्पण, अक्षय पद सेवन[2]।
सुमन कुसुम करूँ समर्पण, विभाव/(मद) गन्ध शमन[2]।।5।।

सुरुचि चरु/(नैवेद्य) सुमधुर भाव से, भोग क्षुधा का शमन[2]।
ज्ञान ज्योति रूपी दीप द्वारा, मोहान्धकार दहन[2]।।6।।

ध्यान धूप से कर्माष्ट दहन, स्वदेव करूँ दर्शन[2]।
अष्ट गुणों के अर्घ के द्वारा, विज्ञान धन सेवन[2]।।7।।

मनवाक् काय भेद सेवन से, अभेद में भी गमन[2]।
अभेदमय स्वयं में रमण, 'कनक' करे वन्दन[2]।।8।।

आध्यात्मिक एक लाभ अनेक

(चाल : छोटी-छोटी गैया..., शत-शत वन्दन..., सायोनारा..., जिन्दगी एक सफर...)
आध्यात्मिक से अनेक लाभ होते हैं, लौकिक जीवन से मोक्ष तक के।
स्वस्थ्य होते तन-मन-आत्मा, अभ्युदय व मोक्ष-सुख भी मिले।।टेक।।

करोड़ोंपति तो लखपति भी होते, आकाश में यथा अन्य द्रव्य समाते।
आध्यात्मिक में अनेक लाभ समाते, नीति-नियम व सदाचार समाते।।

प्रकाश से यथा अन्धकार नशता, अन्धकार नया प्रवेश न होता।
उपकरण आदि भी दिखाई देते, अध्ययन-गमनादि कार्य भी होते।।

तथा आध्यात्मिक जब प्रारम्भ होता, सत्यासत्य का परिज्ञान भी होता।
हेय-उपादेय का ज्ञान भी होता, ग्रहणीय-त्यजनीय का ज्ञान होता।।

अनात्म-ज्ञेय का परिज्ञान भी होता, आत्मा-परमात्मा का ज्ञान भी होता।
शुभाशुभ शुद्ध का ज्ञान भी होता, पुण्य-पाप-मोक्ष का ज्ञान भी होता।।

महान् लक्ष्य उदार भाव जन्मते, धैर्य क्षमा सहिष्णुता भाव जगते।
समता शांति व संतुष्टि आती, शत्रु-मित्र भेद-भाव दृष्टि नशती।।

तन-मन-आत्मा स्वस्थ्य भी होते, कार्य करने में दक्ष भी होते।
कार्य सम्पादन सही भी होते, स्व-पर हित के कार्य भी होते।।

सुख-दुःख हानि-लाभ नहीं सताते, विघ्न-बाधा भी परास्त होते।
ईर्ष्या-घृणा-तृष्णा नहीं सताती, दीन-हीन-अहंवृत्ति विलीन होती।।

प्रतिस्पर्द्धा बिना विकास होता, भय चिन्ता बिना विकास होता।
शांति रूपी सफलता श्रेष्ठ मिलती, 'कनकनन्दी' को यह ही भाती।।

''आत्मशक्ति से होता है सर्वोच्च विकास''

परम-तंत्र-औषधि-उपाय है आत्मशक्ति

(राग : रघुपति राघव..., शायद मेरी शादी...)

सबसे श्रेष्ठ मंत्र व तंत्र...औषधि उपाय तथाहि यंत्र।
झाड़ा-फूँका तथा कायाकल्प...रसायन मणि व कल्पवृक्ष।।

आत्मशक्ति जागृति के उपाय...आत्मविश्वास (व) विवेक शांति।
महान् लक्ष्य में एकाग्र मन...पावन विचार (व) पावन काम।। (1)

इसी से होती शक्ति उत्पन्न...हर कार्य को करे सम्पन्न।
अन्य तो बाह्य निमित्त होते...द्रव्य क्षेत्र कालादि होते।।

बीज समान है आत्मिक शक्ति...जिससे कार्य की (होती) उत्पत्ति।
जलवायु सम बाह्य कारक...वृक्ष के लिये होते सहायक।। (2)

इसके अनेक उदाहरण जानो...तीर्थंकर व गणधर मानो।
चौसठ/(64) ऋद्धि से युक्त हुए...अंत में अनन्त वैभव पाये।।

इसी हेतु वे सत्तादि त्यागे...यंत्र-मंत्र-तंत्रादि त्यागे।
परावलम्बन कारक त्यागे...आत्मशक्ति को जागृति किये।। (3)

रावण कंस व हिटलर...आत्मशक्ति बिना हुए बेकार।
स्व-पर अपकारी भी बने...आत्मसुख से वञ्चित हुए।।

आत्मा में होती अनन्त शक्ति...विश्व की होती सर्वोच्च शक्ति।
आत्मशक्ति को पाओ मानव...'कनक' का यह आत्म स्वभाव।। (4)

हल्दीघाटी, दिनांक 13.10.2013, प्रातः 6.37

वैभाविक 'मैं' एवं स्वाभाविक 'मैं'

(वैभाविक 'मैं' मिथ्या-मोह-ममत्व-अहंकार है तो स्वाभाविक सत्य-सम्यक्त्व-वीतरागता-सोहंभाव-स्वाभिमान-स्वानुभूति)

(चाल : आत्मशक्ति से ओतप्रोत.....)

अज्ञानी-मोही की परिणती जानो, सुदृष्टि-ज्ञानी की परिणती सुनो।
श्रद्धा-प्रज्ञा से होता महान् अन्तर, अज्ञानी की बाह्य ज्ञानी की अंदर/(अंतर)।।ध्रुवपद।।

कर्मजनित विभाव भावों को, पर्याय गति व स्थिति लाभ को।
तन-मन-धन-जन-गृह को, अपना मानता है मोही इनको।।

राग-द्वेष-मोह-काम-क्रोध को, मान-माया-लोभ-ईर्ष्या-घृणा को।
सत्ता-संपत्ति व प्रसिद्धि डिग्री को, माता-पिता भाई बंधु जनों को।।1।।

पति-पत्नी कुटुम्ब पुत्र-पुत्री को, जन्म-मरण-रोग भूख-प्यास को।
सांसारिक सुख-दुःख-हानि-लाभ को, अपना मानता मोही शत्रु-मित्र को।।

अपना मानकर ही 'ममत्व' करता, ममत्व भाव से ही 'अहंकार' करता।
इसी मय ही वह स्वयं (मैं) को मानता, राग-द्वेष-मोह भी इसी में करता।।2।।

ऐसा 'मैं' में ही होते हैं (मिथ्या) मोह, ममत्व आसक्ति अहंकार स्नेह।
अनात्म भाव को ही अपना मानता, पर-द्रव्य को ही अपना मानता।।

सुदृष्टि इन्हें न अपना मानता, इसी में स्वयं/(मैं) को नहीं मानता।
मोह-ममत्व-अहंकार नहीं करता, सोऽहंभाव स्वाभिमान भी न करता।।3।।

कर्मजनित इन्हें श्रद्धान करता, कर्म संयोग की परिणति/(के परिणाम) मानता।
आत्म-स्वभाव से परे ये मानता, इसी में मैं या ममत्व न करता।।

इन्हीं भावों से परे होना चाहता, अणुव्रत या महाव्रत धारता।
ध्यान अध्ययन से कर्मों को हनता, इन्हीं भावों से भी परे हो जाता।।4।।

इसे ही कहते हैं मोक्ष अवस्था, स्वात्मोपलब्धि रूप निज अवस्था।
इसे ही ज्ञानी माने स्व-स्वरूप, सोऽहंभाव भाव रूप 'मैं' स्वरूप।।

जब तक शुद्ध भाव न प्राप्त होता, निजात्म भाव में श्रद्धान करता।
उसे ही अपनाया 'मैं' मानता, उसी का ध्यान अध्ययन मनन करता।।5।।

नैतिक कर्त्तव्य भी पालन करता, आत्मिक धर्म में गौरव करता।

दीन-हीन-अहंभाव न करता, अन्याय-अत्याचार पाप न करता।।

शोषण मिलावट चोरी न करता, फैशन-व्यसनों से दूर रहता।
अंधानुकरण आडम्बर न करता, अनर्थ कार्यों से दूर रहता।।6।।

कमल समान निर्लिप्त होता, सोऽहं का 'स्वाभिमान' करता।
अष्टमद से भी रहित होता, 'कनक' अंत में सोऽहं को पाता।।7।।

प्रिय से श्रेय मार्ग क्लिष्ट परन्तु श्रेष्ठ

(राग : सायोनारा....., कौन दिशा में ले के चला रे.....)

कौन दिशा से तुम चलोगे रे! मनुआ, कौन दिशा में तुम चलोगे।
एक आत्मा/(सत्य, मोक्ष) का डगर, एक झूठा डगर
जरा सोच तो तू, लक्ष्य करो तो तू।।

एक प्रिय डगर, एक श्रेय डगर, प्रिया तो राग-द्वेष-मोह डगर।
वह श्रेय डगर बहु लम्बा डगर, राग-द्वेष-मोह से परे डगर।।

राग-द्वेष-मोह तो सरल-सहज है, अनादि काल से ज्ञात डगर है।
सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि डगर है, खाओ-पीओ मजा करो डगर।।

वह श्रेय डगर है बहु क्लिष्ट डगर है, अपरिचित श्रम साध्य डगर है।
ख्याति पूजा लाभ रिक्त मगर है, धैर्य समता व क्षमा डगर है।।

लक्ष्य प्राप्ति से मिले अक्षय भण्डार है, अनन्त ज्ञान दर्श सुख अपार है।
अनन्तवीर्यमय चैतन्य चमत्कार, 'कनक' तेरा श्रेय ही डगर है।।

''मेरी भावी शुद्ध दशा का चिन्तन''

(राग : नाम है तेरा तारणहारा....., इतनी शक्ति हमें.....)

तेरे चिन्तन से सुख मिलता...तू कितना सुखमय होगा।
दूर से सूर्य से जब ताप मिलता...सूर्य में कितना ताप होगा।।ध्रु.।।

तेरे ध्यान हेतु एकाग्र चाहिए...तू कितना अविचल होगा।
भेद विज्ञान से तेरा ज्ञान होता...तू कितना ज्ञानवान् होगा।। (1)

तेरे मनन से ही समता जगती...तू कितना साम्यभावी होगा।

तेरा विश्वास आत्मविश्वास जगाता...तेरे में कितना विश्वास होगा।। (2)

तेरे विश्वास से निर्भय (भाव) जगता...तुझमें कितना निर्भय होगा।
तू ही मैं जब श्रद्धान करता...दीन-अहंभाव भागते सब।। (3)

तू ही मेरा भावी स्वरूपमय...मैं ही तेरा भूतस्वरूपमय।
हम दोनों है 'अंकुरवृक्ष' सम...पर्यायभेद हैं द्रव्य तो सम।। (4)

लोहा ही चुम्बक बन जाता है...द्रव्यमान तो एक समान है।
ध्याता ही ध्येय है बन जाता...पानी ही बर्फ यथा हो जाता।। (5)

अभेद में हम एक ही दोनों...यह (ही) आध्यात्मिक अमूल्य देन।
'कनक पाषाण' ही बनता 'कनक'...आत्मा-परमात्मा में अभेद दोनों।। (6)

आध्यात्मिक-दार्शनिक-वैज्ञानिक-रहस्यवादी कविता

दुनिया के दबाव से परे

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : दुनिया हँसे हँसती रहे....., अच्छा सिला....., जीना यहाँ.....)

दुनिया बोले, बोलती रहेऽऽ दुनिया से मैं आगे बढ़ता चलूँ...
मैं हूँ विद्यार्थी विद्या लेता ही रहूँ...मैं हूँ शिक्षार्थी शिक्षा लेता ही रहूँ...
मैं हूँ शांति पथिक बढ़ता रहूँ...मैं हूँ मोक्ष पथिक मुक्त हो जाऊँ...
गुरु से लहूँ मैं तो ग्रंथ से लहूँ, अच्छे से लहूँ मैं तो बुरे से लहूँ...
...दुनिया से मैं आगे बढ़ता चलूँ...(टेक)

किसी से न भेद भाव किसी से न बैरी, किसी से न स्वार्थ सिद्धि किसी से न चोरी।
दुनिया मुझे अनाड़ी/(गँवार/भोला) मानती रहे, दुनिया हँसती है हँसती रहे...
2...दुनिया...(1)

ना मैं हूँ मानव ना मैं पशु क्रूर, ना मैं दानव ना मैं सुर-असुर,
ना मैं हूँ भारतीय ना हूँ विदेशी, मैं तो हूँ इससे परे समदर्शी...2...दुनिया...(2)

मैं हूँ समस्त पंथ मत से परे, मैं हूँ समस्त क्षुद्र सीमा से परे,
संकीर्ण सीमा मुझे न बांध पायेगी, गगन को सीमा/(रस्सी) क्या बांध पायेगी...
2...दुनिया...(3)

दुनिया के ईर्ष्या द्वेष से मुझे क्या लेना, किसी भी जीव को मुझे दुःख क्यों देना,

दुनिया की घृणा ज्वाला मुझे न जलायेगी, आकाश को अग्नि ज्वाला क्या जला पायेगी
...2...दुनिया...(4)

आकाश को आँखें न देख पाने से, अमूर्तिक आकाश क्या होगी दोषी,
दुनिया मुझे यदि न जान पाये तो, चिदाकाश मैं क्यों बन जाऊँ दोषी...2...दुनिया...(5)

मैं तो एकला चला चलता रहूँगा, जिसको चलना है मेरे साथ चलेगा,
चरैवेति-चरैवेति अनंत तक चलना, संपूर्णता के पूर्व/(पहले) कभी न रुकना...
2...दुनिया...(6)

तीर्थंकर बुद्ध ऋषि ईसा आदि, दुनिया को छोड़ने से हुए प्रभावी,
भागते चलो छाया दौड़ आयेगी, पकड़ने पर ही बैठ जायेगी...2...दुनिया...(7)

जड़ दुनिया प्रतिध्वनि समान होती, क्रिया की प्रतिक्रिया समान होती,
निष्क्रिय निष्कम्प मेरी गति होगी, दुनिया की प्रतिक्रिया नहीं होगी...2...दुनिया...(8)

पानी के दबाव को जो पार करता, पानी के ऊपर वह ही तैरता,
दुनिया के दबाव को जो भी पार करता, दुनिया के ऊपर वह चढ़ जाता...2...दुनिया...(9)

आध्यात्मिक रहस्य का यह सारतत्त्व, सर्वज्ञों के द्वारा यह ज्ञात सत्य,
इस रहस्य का जो वेदन करेगा, दुनिया के दबाव को वो पार करेगा...2...दुनिया...(10)

'कनकनन्दी' अमूर्तिक आत्मा के प्रेमी, सच्चिदानन्द स्वात्मा के कामी,
भौतिक दुनिया क्या जाने मेरा स्वरूप, जन्मान्ध व्यक्ति जाने क्या सूर्य स्वरूप...2...
दुनिया...(11)

मनोवैज्ञानिक एवं परा-मनोवैज्ञानिक (आध्यात्मिक विज्ञान) संबंधी कविता

मन (ध्यान-विचार) से परे है शुद्ध जीव

(चाल : छोटी-छोटी गैया....., शत-शत वंदन.....)

मन से परे हैं शुद्धात्म-स्वरूप, मन तो कर्मज अशुद्ध रूप।
सच्चिदानन्दमय शुद्धात्मा-स्वरूप, स्वयंभू स्वयंपूर्ण अमूर्त रूप।।धृ.।।

क्षायोपशमिक है मन-स्वरूप, द्रव्य-भाव रूप में मन दो रूप।
मनोवर्गणा से निर्मित द्रव्य स्वरूप, क्षायोपशमिक चेतना है भाव स्वरूप।।

हृदय (स्थान) में स्थित होता पौद्गलिक/(द्रव्य) मन, अर्द्ध विकसित अष्ट दल कमल (सम)।

संज्ञी पंचेन्द्रियों में होते दोनों मन, नारकी देव तिर्यंच मानव 'समन'।।

संज्ञी पंचेन्द्रिय भव्य (जब) बनता सुदृष्टि, ज्ञान चारित्र सह मोक्षमार्गी।
श्रेणी आरोहण जब क्षपक करता, बारहवें गुणस्थान के अंत में पहुँचता।।

चार घाती कर्मों को समूल नाशता, अनंत चतुष्टय को प्रगट करता।
क्षायिक ज्ञान दर्शन सुखवीर्य को पाता, भाव मनातीत वह जीव हो जाता।।

द्रव्यमन भले वहाँ भी स्थित होता, मनातीत केवलज्ञान से युक्त होता।
वहाँ भी न होते विचार व ध्यान, क्षायोपशमिक होने से विचार व ध्यान।।

अघाती कर्मों का भी जब नाश होता, शरीर व द्रव्यमन से (भी) रिक्त होता।
शुद्ध-बुद्ध व सिद्ध जीव हो जाता, अनंत आत्मिक गुणों से युक्त होता।।

(अतएव) तनमन अक्ष न है शुद्ध जीव, विचार व ध्यान भी न (होता) शुद्ध जीव।
इन्हें स्व-स्वरूप मानना है मिथ्या, इनसे परे होता शुद्धात्मा।।

यह है परम आध्यात्मिक ज्ञान, इसे ही कहते है वीतराग-विज्ञान।
लौकिक-विज्ञान परे है सुज्ञान, 'कनक' का परम ध्येय आत्मज्ञान।।

आसपुर, दिनांक 06.05.2015, रात्रि 10.17

''मैं'' और ''हम'' का आध्यात्मिक रहस्य

(राग : छोटी-छोटी गैया....., भातुकली....., शत-शत वंदन....., सायोनारा.....)

मैं (स्वयं) को न जानते है अधिकांश जन, निरक्षरी से लेकर साक्षर जन।
दार्शनिक वैज्ञानिक धार्मिक जन, बुद्धिजीवी साधु-साध्वी आचार्य जन।। (1)

शरीरमय स्वयं को कोई मानता, माता-पिता से जन्मा ऐसा जानता।
इन्द्रिय-मन-जिनोममय सोचता, काम क्रोध मोह मायादि रूप मानता।। (2)

जन्म-मरण रोग शोकमय मानता, सत्ता संपत्ति प्रसिद्धि को स्व मानता।
शत्रु-मित्र-भाई-बंधु को स्व मानता, परिवार राष्ट्रादि को स्व मानता।। (3)

ये सब कर्मजनित विकार रूप, सूक्ष्म-भौतिक से लेकर स्थूल भौतिक।
यथा बादल वर्णादि न आकाश रूप, तथा शरीरादि नहीं है चैतन्य रूप।। (4)

सच्चिदानन्दमय है जीव स्वरूप, स्वयंभू सनातन व अमूर्त रूप।
यह स्वरूप ही है स्वयं (मैं) का रूप, स्व संवेदनामय चैतन्य रूप।। (5)

आध्यात्मिक दृष्टि से 'मैं' हूँ स्व-स्वरूप, 'हम' का व्यवहार है सामाजिक स्वरूप।
सेवा-परोपकार हेतु 'हम' चाहिए, आत्मकल्याण हेतु 'मैं' चाहिए।। (6)

उपगूहन स्थितिकरण वात्सल्य प्रभावना, सामूहिक रूप में होती 'हम' की भावना।
निःशंकित निःकांक्षित अमूढ़ दृष्टि, निर्विचिकित्सा में होती 'मैं' भावना।। (7)

यह है आध्यात्मिक रहस्य कर्म सिद्धांत, अज्ञानी मोही न जाने यथार्थ सत्य।
यह सब सर्वज्ञ व श्रद्धा प्रज्ञा-ज्ञात, 'कनकनन्दी' को चाहिए स्व (मैं) आत्म तत्त्व।। (8)

आसपुर, दिनांक 06.05.2015, अपराह्न 6.16

धर्म के अभाव व सद्भाव की समस्याएँ

(भोगभूमिजों से प्राप्त शिक्षाएँ व कर्मभूमिजों की विकृतियाँ)

(चाल : आत्मशक्ति से....., तुम दिल की धड़कन.....)

भोगभूमिज मानव-पशुओं से भी, मिलती है मुझे शिक्षा विभिन्न।
सहज-सरल भोले होने की प्राकृतिक व सामाजिक जीवन/(नियम)।।

वहाँ के मानव (सभी) पशु भी होते है भद्र व शांति-शालीन।
अन्याय-अत्याचार-हत्या-बलात्कार रिक्त शाकाहारी व सरल जीवन।।

आक्रमण युद्ध शोषण भ्रष्टाचार रिक्त, असंग्रह वृत्ति सादा जीवन।
धनी-गरीब व शोषक शोषित, मालिक-मजदूर रिक्त जीवन।।

असि मसि कृषि वाणिज्य व शिल्प, तथाहि नौकरी से रिक्त जीवन।
बहत्तर कला सहित नर-नारी तथापि, राजा-प्रजा रिक्त असामाजिक जीवन।।

ठगी-चोरी-मिलावट-जमाखोरी रहित, कल्पवृक्ष आधारित सुख सम्पन्न।
शिक्षा-संस्कृति-धर्म-कर्म से रहित, भेद-भाव विरहित सुखमय जीवन।।

वैर विरोध कलह विसंवाद द्वंद, संक्लेश रहित दीर्घ जीवन।
स्वस्थ सबल विशाल सुन्दर, अलंकार वस्त्रों से सज्जित तन।।

अंतिम समय में संतान जन्मति, तथाहि मरण होता सुखमय।
मरण अनन्तर स्वर्ग में जन्मते, स्वर्ग से च्युत होकर बनते मानव।।

भद्र भी मिथ्यादृष्टि जो आहार देते, अथवा अनुमोदना भी करते।
मानव या पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मर करके भोगभूमि में जन्मते।।

कर्मभूमि में जब धर्म प्रारंभ हुआ, धर्म से अनेक मानव हुए महान्।
तीर्थंकर गणधर सूरी पाठक साधु, राजा-महाराजा चिन्तक श्रीमान्।।

तीर्थंकर से साधु तक तो तद्भव में, पाते हैं केवल्य धाम/(परिनिर्वाण)।
कतिपय सूरी पाठक साधु, अल्प भव में पाते है कैवल्य धाम।।

दान-दया-सेवा-परोपकार सहित, कुछ जन पालते है गृहस्थ धर्म।
वे भी परम्परा से स्वर्ग-मोक्ष पाते, ऐसा महिमावन्त है धर्म।।

धर्म से ही सभ्यता-संस्कृति बनती, ज्ञान-विज्ञान का होता विकास।
नीति-नियम, सदाचार बनते, इह-परलोक में भी होता विकास।।

किन्तु हाय! कर्मभूमि में देखो!, धर्म के साथ (साथ) हुआ पाप विकास।
अन्याय-अत्याचार, भ्रष्टाचार सहित, ईर्ष्या द्वेष घृणा अति असंतोष।।

विभिन्न धर्म-मतों के कारण मानवों में, उत्पन्न हुए भेद-भाव विशेष।
पंथ-मत परंपराओं के कारण मानवों में, हुए ईर्ष्या द्वेष घृणा विध्वंस।।

धर्म के अभाव में भी जो भद्रता थी, तथाहि जो भी सहज-सरलता।
वह भी हाय! धर्म के सद्भाव में, हो गई क्रूरता व कुटिलता।।

प्रायः ऐसा ही पाया जाता है, जो कट्टर धार्मिक जन न होते।
वे प्रायः भद्र सरल सहज होते, धूर्तता-क्रूरतादि भी नहीं करते।।

इसी से विपरीत प्रायः कट्टर धार्मिक जनों के भाव व्यवहार भी होते।
कर्मभूमि के प्रारंभ से लेकर अभी तक प्रायः सर्वत्र भी होते।।

ऐसा ही ग्रामीण व निरक्षरी जन तथाहि, सामान्य जनगण जो होते।
वे भी प्रायः सरल-सहज होते बनिस्पत, जो कट्टर धार्मिक सत्ता वाले होते।।

इसी से मुझे शिक्षाएँ मिलती धार्मिक होना है तो सच्चा धार्मिक बनो।
ईर्ष्या-द्वेष-घृणा-संकीर्ण कट्टरता छोड़, सत्य-समता व शांति को वरो।।

धार्मिक विश्वास यदि न हुआ तो, सरल-सहज व भद्र बनो।
भोगभूमिज सम स्वयं तो जीओ, और को भी शांति से जीने दो।।

आगम पुराण व इतिहास से यह सब, मैंने शोध-बोध किया।
प्रायोगिक जीवन में भी (अनेक) अनुभव किया, 'कनक' काव्य में वर्णन किया।।

पारडा ईटीवार, दिनांक 23.05.2015, मध्याह्न 3.25

(यह कविता पारडा ईटीवार के भोले-भाले ग्रामीण जैन-हिन्दू आदिवासी जनों के भाव-व्यवहार से भी प्रेरित है।)

साधारण जनों के लिए अनसुलझे रहस्यों की कविता

चित्र-विचित्र परिणति व प्रवृत्ति

(विरोधाभासमय भाव-व्यवहार)

(चाल : देहाची तिजोरी.....(मराठी)....., दुनिया हँसे....., छोटी-छोटी गैया....., शत-शत.....)

विचित्र है कर्म...विचित्र है भाव...
विचित्र संसार...विचित्र व्यवहार...
ऊँच में नीच व्यवहार...नीच में उदार...
साक्षरी में राक्षस...गँवार में प्रेमाचार...

नगर में असंस्कारी...गाँवड़ा में संस्कारी/(दयालु)...
धनिक में क्रूरता...गरीब में प्रेमाचार...
रक्षक में भक्षक...सामान्य में सद्भाव...
प्रसिद्ध तो खोखले...अप्रसिद्ध महान्...

धार्मिक तो ढोंगाचारी...नास्तिक प्रामाणिक...
न्यायाधीश अन्यायकारी...भोले (भाले) न्यायवन्त...
सुंदर में असभ्यता...असुंदर में शालीन...
फैशनों में मूर्खता...सादा में ज्ञानवान्...

आधुनिक में नकलची...रूढ़ि में प्रज्ञावान्...
चकाचौंध में खोखला/(अंधेरा)...शांति में ज्ञानवान्...
कठोर तो मधुर...मृदुता में जहर/(बाहर में कठोर...अंदर मधुर)...
कीचड/(पंक) में कमल...गमला में काँटेदार...

महावीर क्षमाशील...दुर्बल क्रोधवान्...
परिग्रही तो आकुल...भिक्षुक निराकुल...
दूर से ढोल का शोर...लगता मधुर...
दूर के पहाड़...लगते सुंदर...

जीवित से दुर्व्यवहार...प्रेत/(मृत) से समादर...
सुगुणी से निरादर...कुगुणी सत्कार/(नमस्कार)...
धर्मरिक्त भोगभूमिज...जाते स्वर्गपुर...

तीर्थेश काल में भी...जीव/(मानव) जाते नर्कपुर...

पशु भी स्वर्ग जाते...चक्री यमपुर/(नर्कपुर)...

वृद्ध तो चञ्चल...युवक गंभीर...

विद्यमान (का) न उपयोग...अभाव में याद...

अमूल्य/(बहमूल्य) में तुच्छता...मूल्यहीन उच्च...

प्रचुरता में न उपयोग...न्यूनता में डिमाण्ड/(माँग)...

सुख में नहीं विकास...दुःख में उत्कर्ष...

असार में सारभाव...सार में असार...

सुख चाहते जीव...दुःख हेतु (में) चतुर...

सुख चाहे स्व हेतु...पर हेतु दुःख...

पर सुधार में आतुर...निज हेतु निरादर...

बुद्धिजीवी धूर्त/(स्वार्थी)...मंदबुद्धि उदार/(नम्र)...

धनी तो शोषक/(कंजूस)...निर्धनी पोषक/(सहायक)...

बंधुजन वैरी...परजन हितैषी...

बड़े तो घमण्डी...छोटे विनम्री/(सहकारी)...

भौतिकता में आदर...आत्मा से निरादर...

धार्मिकता में कठोर...नैतिकता कमजोर...

वाद-विवादे चतुर...दया-दाने निरादर...

गुणग्रहण में मच्छर...कृतज्ञता में भस्मासुर...

यथा राम-रावण-भरत-मंथरा-शकुन...

शबरी-निषाद-सुदामा व श्रीकृष्ण...

ग्वाला सुभग कौण्डेश-राजा उद्दायन...

मदर टेरेसा, नाइटेंगल, जोहन्सवर्क...

अपवाद सभी में तो...सर्वत्र होते...

राक्षसी लंका में भी...विभीषण होते...

जीवों की विभिन्न...अवस्थाएँ होती हैं...

पतित अवस्था से (भी)...पावनता आती है...

विचित्र (है) परिणति...(विचित्र) कर्म प्रकृति...

विचित्र क्षयोपशम...(विचित्र) गुणस्थान...
विचित्र जीवों की शक्ति...तथाहि प्रवृत्ति...
'कनकनन्दी' चाहे...शुद्धात्मा प्रवृत्ति...

पारडा ईटीवार, दिनांक 22.05.2015 (श्रुत पञ्चमी), रात्रि 12.15 (पारडा ईटीवार के भोले-भाले ग्रामीण जैन व हिन्दू एवं दुष्यन्त (पिंटू) धूलचन्द जैन आदि लोगों से प्रभावित व द्रवित होकर यह कविता बनी।)

कर्म सिद्धांत (बंध के कारण)

-आचार्य कनकनन्दी

संसार कारक होते (है) कर्म...द्रव्य कर्म व भावकर्म।
राग द्वेष मोह भावकर्म...कर्म परमाणु द्रव्यकर्म।
परस्पर कार्य कारण होते...अनादि शृंखला के बंधते।। ला-ला-ला...

1. ज्ञानावरणीय कर्मबंध

ज्ञानावरणीय ज्ञान को ढ़कता...इसी से (जीव) होते अल्पज्ञ।
ज्ञान-ज्ञानी से द्वेष (जो) करे...ज्ञानावरणीय कर्म को वरे।
ज्ञानदान जो नहीं करे...वे भी इस कर्म को वरे।। ला-ला-ला...

2. दर्शनावरणीय कर्मबंध

दर्शन को ढ़कता दर्शनावरणीय...दर्शन से वंचित होता जीव।
इसी के हेतु होते पूर्वोक्त...ज्ञानावरणीय कर्म में (जो) उक्त।
दर्शन पूर्वक होता (है) ज्ञान...सर्वज्ञ को दोनों युगपत (एक साथ)।।
(सर्वज्ञ के दर्शन उपयोग व ज्ञानोपयोग एक साथ होता)...ला-ला-ला...

3. मोहनीय कर्मबंध

अ. दर्शन मोहनीय कर्मबंध

मोहित करे सो मोहनीय...कर्म चक्री मोहनीय।
धर्म का करे जो अवर्णवाद...केवली-श्रुत-संघ अवर्णवाद।
उसको बंधता यह कर्म...निंदा अपमान घृणित कर्म।। ला-ला-ला...

ब. चारित्र मोहनीय कर्मबंध

चारित्र घातक मोहनीय...चारित्र करता प्रतिबंधन।

तीव्र कषाय परिणाम से...बंधता यह चारित्र मोह।
क्रोध मान माया लोभादि...परिणत जीव ये कर्म।। ला-ला-ला...

4. वेदनीय कर्मबंध

अ. असाता वेदनीय (पाप कर्म)

दुःख प्रदाता असाता कर्म...(इससे) संसारी पाते अशर्म (दुःख)।
स्व-पर को जो देते कष्ट...वे बांधते दुष्ट (ये) कर्म।
दुःख शोक व ताप बंध से...असाता बंधे अशुभ (भाव) से।।
ला-ला-ला...

ब. साता वेदनीय (पुण्य कर्मबंध)

सुख प्रदाता साता कर्म...संसारी पाते इसी से शर्म (सुख)।
दान दया सराग संयम...शौच से बंधे पुण्य कर्म।
पाप कर्म से ये विपरीत...स्व-पर को न देते दुःख।। ला-ला-ला...

5. आयु कर्मबंध

बहु आरंभ परिग्रह से...नरकायु का होता बंध।
माया से तिर्यंच आयु...मृदु संतोष से मनुष्यायु।
शुभ भाव से देवायु...लेश्या परिणाम से (बंधे) आयु।। ला-ला-ला...

6. नाम कर्मबंध

कुटिल भाव विसंवाद से...नाम कर्म बंधे अशुभ।
अविसंवाद सरलता से...नाम कर्म बंधे शुभ।
नाम कर्म से बने शरीर...कर्मानुसार शुभ-अशुभ।। ला-ला-ला...

7. गोत्र कर्मबंध

दूसरों की निंदा अहंकार से...नीच गोत्र का होता बंध।
निंदा रहित नम्र भाव से...उच्च गोत्र का होता बंध।
मोक्ष सहायक उच्च गोत्र...इसी से विपरीत नीच गोत्र।। ला-ला-ला...

8. अंतराय (विघ्नकारक) कर्मबंध

विघ्न उत्पादक अंतराय...शुभ कार्य बाधक (यह) विघ्न।
दान लाभ भोग उपभोग...ज्ञानार्जन (वीर्य) में डाले (जो) विघ्न।
उससे बंधता विघ्न कर्म...घाती रूपी अनिष्ट कर्म।। ला-ला-ला...

आसपुर, दिनांक 28.06.2015, प्रातः 8.15

अनुभवपरक मनोवैज्ञानिक व आध्यात्मिक शोधपरक कविता

मन के अस्थिर एवं स्थिर होने के कारण

(चाल : तुम दिल की धड़कन....., छोटी-छोटी गैया....., सायोनारा.....)

मन होता है अति चञ्चल...बिजुली समान अति चपल...
संकल्प-विकल्पात्मक मन...राग-द्वेष सहित जो मन...
क्षायोपशमिक होता मन...द्रव्य मन तथा भाव मन...
संज्ञी जीव ही होते सम्यक्त्वी...असंज्ञी जीव सभी मिथ्यात्वी...(1)...
मन चञ्चल के कारण सुनो...राग-द्वेष-मोह-कामादि मानो...
इनके अभाव से मन स्थिर...समता शुचि से होता स्थिर...
इन्द्रियों की प्रवृत्ति से भी अस्थिर...दोषों के कारण से मन चञ्चल होता...
वाद-विवाद व विकथाओं से...फैशनी-व्यसनी-दुर्जन संगति से...(2)...
पवन से जल में होता कलोल...पवन शांत से होता स्थिर...
अग्नि से जल में (यथा) उबाल आता...अग्नि शांत से उबाल शांत होता...
तरल जल में तरंगें आती...ठोस जल (बर्फ) में तरंगें नहीं उठती...
तथाहि राग-द्वेषादि रहित मन...शांत-स्थिर होता अचल मन...(3)...
ध्यान-अध्ययन व आत्मज्ञान से...आत्मविश्वास युक्त श्रेष्ठ लक्ष्य से...
सादा जीवन सह उच्च विचार से...मन स्थिर होता है साम्य भाव से...
धैर्य सहिष्णुता व संतोष से...क्षमा मृदुता व सरलता से...
निर्मल भाव व व्यवहार से...स्थिर मन होता है निर्दोष भाव से...(4)...
ईर्ष्या तृष्णा व घृणा रहित से...दीन-हीन-अहंकार रिक्त से...
निस्पृह निराडम्बर शुचि भाव से...स्थिर मन होता वीतरागता से...
लंद-फंद व द्वंद्व रिक्त से...पर निन्दा अपमान शून्य भाव से...
सु द्रव्य क्षेत्र व काल भाव से...'कनक' स्थिर होता मन आत्मध्यान से...(5)...

कतिसौर, दिनांक 03.07.2015, मध्याह्न 2.58

आत्मबल बिना अन्य बल पराभूत

(चाल : भातुकली (मराठी)....., तुम दिल की धड़कन में.....)

आत्मबल ही है अनंत बल...अनंत शक्ति युक्त होता है...
अन्य सभी सांसारिक बल...सीमित शक्ति युक्त होते है...(स्थायी)...

शरीर इन्द्रिय मन बल तथा...परिवार समाज बल आदि...
सीमित होते है कानून संविधान...सैनिक व पुण्य बल आदि...
आत्मा की शक्ति है सत्य समता...अहिंसा अचौर्य व ब्रह्मचर्य...
अपरिग्रह व क्षमा मार्दव आर्जव...शौच संतोष तप त्याग वैराग्य...(1)...
आत्मविश्वास व ज्ञान चारित्र...महान् उद्देश्य सह उदार भाव...
स्व-पर-विश्व कल्याण की भावना...आत्मविशुद्धि धैर्य स्वभाव...
आत्मा में होती है अनंत शक्ति...जो जीव इससे होता समृद्ध...
उसे न कोई पराजय कर पाता...भले (कोई) अन्य बल से हो समृद्ध...(2)...
यथा तीर्थंकर गणधर या ऋद्धि...सम्पन्न महाऋषिवर आदि...
किसी से भी पराभूत न होते...भले हो कोई राजा-महाराजा आदि...
तथाहि राम पाण्डव श्रीपाल...हनुमान आदि महामानव...
वे सभी न हुए पराभूत...भले शत्रु हो क्रूर मानव...(3)...
नैतिक आध्यात्मिक बल से...जब कोई हो जाता है च्युत...
अन्य बल भी हो जाते निर्बल...यथा विद्युत यंत्र विद्युत च्युत...
यथा रावण कंस जरासंध...हिटलर मुसोलिन या नेपोलियन...
सद्दाम हुसैन या लादेन जो हो...अन्याय अत्याचारी पापीजन...(4)...
कर्मसिद्धांत व मनोविज्ञान...नीति-नियम कानून संविधान...
सभी में ही समाहित आध्यात्मिक बल...आत्मबल बिन सभी न्यून...
विश्व साहित्यों में यह सब पढ़ा...प्रायोगिक में भी अनुभव किया...
इसी हेतु ही आत्मबल हेतु...'कनक' सदा ही प्रयास किया...(5)...

बड़ौदा ग्राम, दिनांक 01.07.2015, मध्याह्न 3.27

निर्णय क्षमता (न्याय करना) के विविध कारण

(चाल : अच्छा सिला दिया....., छोटी-छोटी गैया....., सायोनारा.....)

संवेदनशीलता व सत्यग्राहिता से...निर्णय क्षमता आती है अंतः प्रज्ञा से...
हिताहित विवेक व कर्म सिद्धांत से...निर्णय क्षमता आती मनोविज्ञान से...(1)...
अनेकांत तथा नय-प्रमाण से...दूरदृष्टि सम्पन्न अनुभवों से...
नीति-नियम तथा परंपराओं से...निर्णय क्षमता आती है दया भाव से...(2)...
महापुरुषों की आदर्श जीवनी से...उनके वचन व कार्य पद्धति से...

इतिहास पुराण व आगम ग्रंथों से...निर्णय क्षमता आती ज्ञान-वैराग्य से...(3)...
धैर्य सहिष्णुता व सरल भाव से...समता शुचिता व निस्पृह भाव से...
संक्लेश रहित व निरपेक्ष भाव से...निर्णय क्षमता आती सज्जन संगति से...(4)...
अहंकार शून्यता व निर्भय भाव से...शंका घृणा वैरत्व अभाव से...
मोह काम व निंदा की निवृत्ति से...निर्णय क्षमता आती माया रहित से...(5)...
संशय विभ्रम व अनध्यवसाय से...संकीर्ण हठाग्रह कूपमण्डूकता से...
प्रमाद आलस्य व दबाव रहित से...निर्णय क्षमता आती वीतरागता से...(6)...
महान् लक्ष्य व पवित्र भावना से...आध्यात्मिक अनुभव व जोड़ ज्ञान से...
सत्य-तथ्य-प्रमाण सहित ज्ञान से...निर्णय क्षमता आती है सत्य निष्ठा से...(7)...

कतिसौर, दिनांक 02.07.2015, मध्याह्न 3.33

(देश-विदेश के न्यायालयों के निर्णय के पहिले मेरे (आ. कनकनन्दी) दीर्घकालिक निर्णय सही सिद्ध क्यों होते है? उसके कुछ कारणों का वर्णन इस कविता में है।)

भोगासक्त गृहस्थ सुखी क्यों नहीं!?

(चाल : तुम दिल की धड़कन....., सायोनारा.....)

सत्ता-संपत्ति व प्रसिद्धि...सहित भी गृहस्थ न होते सुखी...
भोगोपभोग कामासक्त भी...गृहस्थ न होते हैं सुखी...

श्लोक- गृहवासे कुतः सोख्यमाशापाश विपाशिते।
विषयामिषलुब्धानां मोहदावाग्निदीपिते।। (5, ध्यानोपदेश कोष)...

हिन्दी- गृहवास में कहाँ सुख है...आशा पाश से परिवेष्टित...
विषय रूपी माँस लुब्धों के...मोह दावाग्नि से दग्ध जीवों के...

श्लोक- धनेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु भोजन वृत्तिषु।
अतृप्ता मानवाः सर्वे याता यास्यन्ति यान्तिच।। (252) स.श्लो.सं.

हिन्दी- धन में अतृप्त जीवन में...अतृप्त स्त्री व भोजन में...
अतृप्त सभी मानव गये...जा रहे हैं और भी जायेंगे...

श्लोक- सर्वसङ्ग विमुक्तानां सन्तोषामृत पायिनाम।
शमात्मकं सुखं यत्स्यात् कुतस्तद्भोग गृद्धितः।। (16) ध्या.को.

हिन्दी- सर्वपरिग्रह विमुक्तों के व...संतोषामृत पायियों के...

जो सुख होता है शमभावी के...वह सुख कहाँ है भोगगृद्धों के...

श्लोक- अध्यात्मजं निराबाधमात्मायत्तं भवेद् ध्रुवम्।
अनुपमं सुखं पुंसां तथा विषयात्मकम्।। (17) ध्या. को.

हिन्दी- आत्म उपज निराबाध...स्वाधीन सुख जो भोगता है...
वह सुख है अनुपम सुख...विषयासक्त न भोगता है...

श्लोक- कषायैरिन्द्रियैर्दुष्टै व्याकुलीक्रियते मनः।
ततः कर्तुं न पार्येत भावना गृहमेधिभिः।। (12) ध्या. को.

हिन्दी- दुष्ट इन्द्रिय व कषाय द्वारा...व्याकुल होता है गृहस्थ मन...
अतएव गृहस्थ न कर पाता है...भावनापूर्वक ध्यान...

श्लोक- जानन्नपि न जानाति पश्यन्नपि न पश्यति।
विषयेषु विषक्तात्मा शृण्वन्नपि न शृणोति।। (22) ध्या. को.

हिन्दी- जानता हुआ भी नहीं जानता...देखता हुआ भी नहीं देखता...
विषयों में आसक्त जीव...सुनता हुआ भी नहीं सुनता...

समीक्षा

सुख तो आत्मा का शुद्ध स्वभाव...जो आत्मा से ही उत्पन्न होता...
वह सुख है अव्याबाध सुख...जो अनुपम व स्वाधीन होता...(1)...
सांसारिक सुख तो पराधीन है...जो शरीर इन्द्रिय व मनाश्रित...
सत्ता-संपत्ति व भोगोपभोग आश्रित...तथाहि स्त्री-पुरुष आश्रित...(2)...
इसीलिये यह सुख होता पराधीन...न होता है स्वाधीन सुख...
बाधासहित भी होता यह सुख...बंधकारक-रोगकारक सुख...(3)...
श्रमसाध्य व अतृप्तकर...अनेक दुःखकारक यह सुख...
समता-शांति व संतोषनाशक...वैर-विरोध कारक सुख...(4)...
तथापि यह सुख नहीं शाश्वतिक...यह तो क्षणभंगुर आभासी सुख...
उत्तेजनाकारक विक्षुब्धकारक...संसारवर्द्धक या सांसारिक सुख...(5)...
इसीलिये तो चक्रवर्ती तक...सांसारिक सुख को करते त्याग...
आत्माधीन परम सुख हेतु...स्व-शुद्धात्मा का ही करते भोग...(6)...
अतएव गृहस्थ चक्रवर्ती भी...निर्ग्रंथ श्रमणों को करते प्रणाम...
आत्मिक सुख प्राप्ति के लिए...'कनकनन्दी' बना निस्पृह श्रमण...(7)...

पाड़वा, दिनांक 16.05.2015, मध्याह्न 3.30

चक्रवर्ती तक क्यों बनते हैं निस्पृह समताधारी साधु!?

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : आत्मशक्ति से ओतप्रोत....., क्या मिलिये.....)

एक प्रश्न मेरे मन-मस्तिष्क में, बार-बार उभरकर आता है...
क्यों राजा-महाराजा सेठ-साहूकार भी, साधु-श्रमण बन जाते हैं...(ध्रुव)...
इसी हेतु मैंने शोध-बोध किया, देश-विदेशों के ग्रंथों से...
इतिहास पुराण समाजशास्त्र व, मनोविज्ञान तथा आगमों से...
मैंने जो पाया व अनुभव किया, सुख न मिले सत्ता-संपत्ति से...
ख्याति-पूजा-लाभ-प्रसिद्धि से व, भोग-उपभोग-विभूति से...(1)...
इनसे तृष्णा तो बढ़ती जाती यथा, लवण युक्त पानी से प्यास की...
आकुलता-व्याकुलता अशांति बढ़ती, न मिलती तृप्ति-शांति भी...
यथा दिग्विजयी चक्री भरत को, अनंत सुख न मिला राज्य में...
श्रमण बनते ही अंतमुर्हूत में, अनंत सुख मिला स्व-आत्मा में...(2)...
दिग्विजयी चक्री या राजा-महाराजा, सिकन्दर चँगेज खाँ नेपोलियन...
रावण कंस जरासंध हिटलर को, नहीं मिला आध्यात्मिक सुख-चैन...
शांति कुंथु अरह थे तीर्थंकर कामदेव, चक्रवर्ती सम्राट षट्खण्ड के...
मुनि बनकर चौसठ ऋद्धि प्राप्त कर भी, अखण्ड मौन में साधनारत...(3)...
सर्वज्ञ बनने के अनन्तर ही, दिव्य ध्वनि से किये उपदेश...
राग-द्वेष-मोह-ख्याति-पूजा शून्य, निस्पृह भाव से दिये उपदेश...
इसी से यह भी शिक्षा मिलती, निस्पृह समता से ही मिलता सुख...
राग-द्वेष-मोह व ख्याति-पूजा से भी, नहीं मिलता है आत्मिक सुख...(4)...
सर्व कर्म से रहित अवस्था में, जीव बनता (है) सच्चिदानंदमय...
शुद्ध-बुद्ध-आनंदमय बनना ही, 'कनकनन्दी' का परम लक्ष्य...(5)...

पाड़वा, दिनांक 14.07.2015, अपराह्न 5.48

सर्वज्ञ-वीतरागी होते हैं भगवान्

(चाल : सायोनारा....., तुम दिल की धड़कन में.....)

जिनेन्द्र जित कर्मारि...जितमोह वीतरागी...
जिनवर वृषभ जितात्मा...जगत्बंधु जगत्गुरु...

सर्वज्ञ हो तुम समस्त ज्ञान से...तीन लोक तीन काल सर्व/(सत्य) ज्ञान से...
अणु से भी सूक्ष्म आत्म तत्त्व-ज्ञान से...लोक से परे अलोक के ज्ञान से...

घाति कर्म नाश से सर्वज्ञ बने...साम्य वीतरागी हितोपदेशी बने...
अनंत ज्ञान-दर्श-सुख-वीर्यवान् बने...परम अहिंसा व सत्य स्वरूप बने...(1)...

मानवीय दुर्बलताओं से परे बने...ईर्ष्या-द्वेष-घृणा-तृष्णा परे बने...
क्षुधा-तृषा-रोग से परे भी बने...कामुक प्रवृत्ति से परे भी बने...

अनेकान्त सिद्धांत (को) परम सत्य कहा...आत्म-शुद्धता को अहिंसा (धर्म) कहा...
आत्म वैभव को ही परम वैभव कहा...शुद्धात्म-स्वरूप को मोक्ष कहा...(2)...

आत्म विकास ही परम विकास है...आत्म-उपलब्धि ही परम उपलब्धि है...
आत्म-ज्ञान को ही परम विज्ञान कहा...आत्म-शिक्षा को ही परम शिक्षा कहा...

हर जीव स्व का कर्त्ता-धर्त्ता कहा...स्वभावतः हर द्रव्य को सत्य कहा...
अति सूक्ष्म-गहन-व्यापक आपका कथन...'कनक' अतः माने आपको भगवान्...(3)...

भगवान् हो तुम ज्ञानवान् होने से...भगवान् हो तुम कर्मनाशी होने से...
अनंत गुणधारी तुम्हीं हो भगवान्...सर्व दोष परे आत्मा ही हो भगवान्...(4)...

पाड़वा, दिनांक 15.07.2015, मध्याह्न 3.05

जीव का शुद्ध स्वरूप या परम विकास

(चाल : तुम दिल की धड़कन में....., छोटी-छोटी गैया....., सायोनारा.....)

शरीर-इन्द्रिय-मन से परे...होता है जीव का अस्तित्व...
द्रव्य-भाव-नोकर्म परे...होता है आत्मा का अस्तित्व...

क्रोध-मान-माया-लोभ परे...होता है जीव का अस्तित्व...
क्षुधा-तृषा व काम-मोह परे...होता है आत्मा का अस्तित्व...(1)...

डी.एन.ए., आर.एन.ए. व सेल्स से परे...होता है चेतना का अस्तित्व...
जाति-गोत्र व नाम से परे...होता है जीव का अस्तित्व...

धार्मिक पंथ-मत-रूढ़ि से परे...होता है आत्मा का अस्तित्व...
देश-भाषा व राजनीति से परे...होता है सोल का अस्तित्व...(2)...

सत्ता-संपत्ति व प्रसिद्धि परे...होता है चैतन्य अस्तित्व...

भाई-बंधु-कुटुम्ब-समाज परे...होता है रूह का अस्तित्व...
कानून-संविधान व राष्ट्र से परे...होता है आत्मा का अस्तित्व...
संकीर्ण शिक्षा व विज्ञान से परे...होता है जीव का अस्तित्व...(3)...

जीव है सच्चिदानंदमय...सत्य शिव सुंदर अविनाशी...
स्वयंभू सनातन स्वयंपूर्ण अमूर्तिक...अविभागी अनंतगुण मय...
शरीर आदि संपूर्ण उक्त विषय/(वर्णन)...कर्मजनित है विकारमय...
यथा बादल-विद्युत-वर्ण आदि...नहीं है आकाश ये तो पुद्गलमय/(भौतिकमय)...(4)...

जीव का शुद्ध स्वरूप परिनिर्वाण...जिसे कहते हैं शुद्ध-बुद्ध-आनंद...
इसे प्राप्त करना ही है परम विकास...'कनकनन्दी' चाहे परम विकास...(5)...

पाड़वा, दिनांक 06.07.2015, अपराह्न 6.10

समता परमो धर्म-ध्यान व शांति

(चाल : तुम दिल की धड़कन....., सायोनारा.....)

श्लोक- साम्यमेवादरात् भाव्य किमन्यै ग्रन्थ विस्तरैः।
प्रक्रिया मात्रमेवेदं वाङ्मयं विश्वमस्य हि।। (32) ध्यानोपदेश कोष

हिन्दी- समता को ही आदर से भाओ...ग्रंथ विस्तार से क्या प्रयोजन...
समता की ही प्रक्रिया मात्र है...समस्त जानो वाङ्मय...

श्लोक- साम्यमेव परं ध्यानं प्रणीतं विश्वदर्शिभिः।
तस्यैव वक्तुं ये नूनं मन्येऽयं शास्त्र विस्तरः।। (22/13) ज्ञानार्णव

हिन्दी- समता को ही परम ध्यान...कहा है विश्वदर्शी ने...
इसी के ही कथन के लिए...मानो शास्त्र विस्तार...

श्लोक- माध्यस्थ्यं समतोपेक्षा वैराग्यं साम्यमस्पृहा।
वैतृष्ण्यं प्रशमः शान्तिरित्येकार्थोऽपि धीयते।। (त.शा. 139)

हिन्दी- माध्यस्थ व समता उपेक्षा...वैराग्य व साम्य अस्पृहा...
वितृष्णा व प्रशम शांति...एकार्थ ही ज्ञातव्य...

श्लोक- चारित्तं खलु धम्मो धम्मो जो सो सम्मोत्ति णिद्दिट्ठो।
मोहक्खोह विहीणो परिणामो अप्पणो हि समो।। (प्र.सा. 7)

हिन्दी- चारित्र ही है परमो/(निश्चय) धर्म...जो होता है समतामय...
मोह-क्षोभ से विरहित परिणाम...आत्मा ही साम्यमय...

समीक्षा

सर्वज्ञ वीतरागी देव ने...समता को ही कहा परम धर्म...
समता में गर्भित है समस्त...आगम का भी मर्म...(1)...
राग-द्वेष-मोह-काम-क्रोध शून्य...होता है जीव का शुद्ध परिणाम...
शुद्ध परिणाम ही समता है जो...होता है जीव का निज परिणाम...(2)...
अतः समता में गर्भित सभी...व्रत-नियम-ध्यान-अध्ययन...
तप-त्याग व संयम-साधना...परीषहजय उत्तम दशधा धर्म...(3)...
वैराग्य-निस्पृहता-प्रशम-शांति...समता के ही हैं रूप विभिन्न...
समता बिना ये समस्त गुण...संभव नहीं है आगम प्रमाण...(4)...
रत्नत्रय भी है समतामय...समता बिन न होता रत्नत्रय...
मोक्षमार्ग संवर-निर्जरा-मोक्ष भी...होता है पूर्ण समतामय...(5)...
साम्यभाव बिन कठोर तप भी...पतन के लिए होता है कारण...
यथा द्वीपायन की कठोर तपस्या...बनी थी स्व-पर पतन के कारण...(6)...
सरल है बाह्य तप-त्याग करना...तथाहि शारीरिक कष्ट भी सहना...
पूजा-पाठ व तीर्थयात्रा करना...किन्तु कठिन है समता धरना...(7)...
यथा नारकी व पराधीन कैदी...सहन करते हैं विभिन्न कष्ट...
किन्तु समता से रहित होने से...नहीं होते हैं वे तपस्वी संत...(8)...
समता बिना न होती तपस्या...तथाहि आध्यात्मिक परिशुद्धता...
यथा जड़ शरीर (शव) में आत्मा बिना...नहीं होती है चेतना की सत्ता...(9)...
समता सहित न्यून भी ज्ञान...अल्प भी तप से मिल जाता है मोक्ष...
अतः समता ही सतत सेवनीय...'कनकनन्दी' चाहे परम साम्य...(10)...

पाड़वा, दिनांक 15.07.2015, रात्रि 10.40

प्रवचन व प्रवचनसम के 48 रूप

(चाल : क्या मिलिये ऐसे लोगों से....., तुम दिल की धड़कन में....., आत्मशक्ति.....)
'प्रवचन[1]' ही है 'आगम[2]' जो 'सत्यार्थ वचन[3]' होता है...

''सर्वज्ञ[4] द्वारा कथित सत्य'' ''गणधर[5] द्वारा रचित है''...

प्रकृष्ट[6] वचन को ही कहते है 'प्रवचन'...जो हित[7] सत्य-तथ्य होता (है)...(1)...

राग-द्वेष-मोह से रहित होता, जो ईर्ष्या-घृणा से भी रहित है...
निन्दा अपमान भेद-भाव शून्य, भेद[8]-विज्ञान से भी पूर्ण होता (है)...(2)...

अखिल विश्व के संपूर्ण सत्य को, जो सापेक्ष[9] दृष्टि से ही कहता है...
सम्पूर्ण जीवों के सर्वोदय हेतु, जो परम[10] सत्य-तथ्य कहता है...(3)...

इससे परे नहीं (कोई) श्रेष्ठ सिद्धांत, अतएव 'अनुत्तर[11]' भी कहलाता है...
नय-उपनयों का भी वर्णन होने से, 'नयविधि[12]' भी इसे कहते है...(4)...

'नयान्तर[13] विधि' व 'भंग[14] विधि' भी, 'भंग विविध[15] विशेष' भी कहते है...
'नयवाद[16]' 'हेतुवाद[17]' 'प्रवरवाद[18]', 'लौकिक[19]' 'लोकोत्तरवाद[20]' भी कहते हैं...(5)...

'भूत[21]' 'भव्य[22]' व 'भविष्यत[23]' 'अवितथ[24]', 'अविहत[25]' 'वेद[26]' 'न्याय[27]' 'शुद्ध[28]' 'श्रुतवाद[29]'...
'मार्गवाद[30]' 'अग्रज[31]' 'मार्ग[32]' 'पूर्व[33]', 'यथानुमार्ग[34]' 'पूर्व[35]' 'पूर्वातिपूर्व[36]'...(6)...

इसीलिये इसे 'प्रावचन[37]' भी कहते, 'प्रवचनीय[38]' 'प्रवचनार्थ[39]' 'आत्मा[40]'...
'गतियों में मार्गणता[41]' 'परम्परालब्धि[42]', 'प्रवचनी[43]' तथाहि 'प्रवचनाद्धा[44]'...(7)...

'प्रवचन[45] सन्निकर्ष' 'पृच्छाविधि[46]' 'विशेष[47]', प्रवचन के ही है अन्वयर्थ संज्ञा...
इसी के अनुसार आचार्यादि के वचन, होता है प्रचलित 'प्रवचन सम[48]'...(8)...

अन्यथा न होता है 'प्रवचन सम' भी, प्रवचन तो कदापि नहीं होता...
लोकानुरञ्जन व प्रलाप विकथा, जो ख्याति लाभ पूजा सहित है...(9)...

इसी से स्व-पर का न विकास होता, न होता सत्य-तथ्य का ज्ञान भी...
उदार सहिष्णुता व समन्वय न होता, न होता आध्यात्मिक लाभ भी...(10)...

स्व-पर प्रकाशी होता है प्रवचन, सही प्रभावना यह ज्ञानदान...
सर्वज्ञ-वीतरागी भी करते ये दान, 'कनकनन्दी' चाहे आत्म-प्रवचन...(11)...

पाड़वा, दिनांक 06.07.2015, प्रातः 9.30

(इस कविता संबंधी विशेष परिज्ञान हेतु ''धर्म-दर्शन-विज्ञान'' कृति का अध्ययन करें।)

ज्ञात से अज्ञात का ज्ञान व गहन विषयों का अनुसंधान = (मार्गणा) = (चुलिका)

(चाल : शत-शत वंदन....., भातुकली....., सायोनारा.....)

उक्त-अनुक्त व दुरुह को, कहा जाता है चुलिका।
कहा हुआ या नहीं कहा हआ, क्लिष्ट विषय है चुलिका।। (1)

उक्त से जानो अनुक्त को, उससे (जानो) क्लिष्ट विषय को।
(जिससे) ज्ञात से अज्ञात जानो, उससे पर भी दुरूह को।। (2)

अवग्रह से ईहा आवाय व, धारणा ज्ञान होता है।
श्रद्धा-प्रज्ञा व अनुसंधान (मार्गणा) से, परम सत्य ज्ञान होता है।। (3)

प्रत्यक्ष से होता अनुमान ज्ञान, जिसे कहते हैं तर्कज्ञान।
अन्यथा अनुत्पत्ति से होता, है यह तर्कज्ञान।। (4)

देशामर्शक से भी होता है, अनुक्त पूर्णज्ञान।
यथा हाथी की सुंड से, होता है हाथी का पूर्णज्ञान।। (5)

स्वप्न-शकुन अंगस्फूरण से, होता अनुक्त/(अव्यक्त) ज्ञान।
अष्टांग निमित्त से भी, होता है अनुक्त ज्ञान।। (6)

कोष्ट-बुद्धि, बीज-बुद्धि, पादानुसारी संभिन्न श्रोतृत्व।
स्वयं बुद्ध व प्रत्येक बुद्ध, बोधित बुद्ध ऋजुमतित्व।। (7)

विपुलमति व दशपूर्वी, चतुर्दश पूर्व ज्ञानधारी।
अविधज्ञानी, अनंतज्ञानी, होते है महान् ज्ञानी।। (8)

शोध-बोध नवीन आविष्कार, होते हैं इसी प्रकार।
ऐसे विद्यार्थी ही उत्तम विद्यार्थी, होते हैं ज्ञानी-प्रवर।। (9)

अन्य विद्यार्थी होते हैं, मध्यम से जघन्य प्रकार।
प्रतिभावान् बनने हेतु, 'कनक' मान्य 'चुलिका' प्रकार।। (10)

पाड़वा, दिनांक 08.07.2015, अपराह्न 6.47

दार्शनिक एवं वैज्ञानिक शोधपूर्ण कविता

लोक अयं नाट्यशाला-रचित सुरचना-प्रेक्षकों विश्वनाथ

(विश्व के परिणमनशील सिद्धांत-गति सिद्धांत-क्वांटम सिद्धांत एवं एकीकृत सिद्धांत)

(चाल : आत्मशक्ति से ओतप्रोत....., मेरा जूता है जापानी.....)

सदा षड्गुण हानि-वृद्धि होती रहती...
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य की होती है स्थिति...
हर शुद्ध द्रव्य में प्रक्रिया यह होती...
स्थानान्तरित गति जीव-पुद्गलों में होती...(1)...
शुद्ध जीव-पुद्गल व धर्म-अधर्म...
आकाश-काल में होते शुद्ध परिणमन...
शुद्ध द्रव्य में होती षड्गुण हानि-वृद्धि...
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य की यह परिणति...(2)...
अनंत[1] भाग वृद्धि असंख्यात[2] भाग वृद्धि...
संख्यात[3] भाग वृद्धिमय होती है वृद्धि...
संख्यात[4] गुण वृद्धि असंख्यात[5] गुण वृद्धि...
अनंत[6] गुण वृद्धिमय होती है वृद्धि...(3)...
अनंत[1] भाग हानि असंख्यात[2] भाग हानि...
संख्यात[3] भाग हानिमय होती है हानि...
संख्यात[4] गुण हानि असंख्यात[5] गुण हानि...
अनंत[6] गुण हानिमय होती है हानि...(4)...
शुद्ध-अशुद्ध जीव-पुद्गलों में गति होती...
चौदह राजू प्रतिसमय शुद्ध में होती...
मध्य की गति अनंत प्रकार की होती...
चौदह राजू प्रतिसमय सिद्ध (जीव) की होती...(5)...
संपूर्ण विश्व की यह होती स्थिति...
कर्मबंध (व) संसार-भ्रमण की स्थिति...
अणु से लेकर ब्रह्माण्ड में यह स्थिति...
सूक्ष्म से लेकर महास्कंध/(पिण्ड) की स्थिति...(6)...

क्वांटम सिद्धांत व एकीकृत सिद्धांत...
आंशिक रूप में सिद्ध करते यह सिद्धांत...
प्रलय उत्पाद स्थिति इसी से होते...
यह सब पूर्णतः सर्वज्ञ ही जानते...(7)...
स्थूल-पुद्गल व बादर (स्थूल) जीव मध्य में...
दृश्यमान होती है गति व परिणमन...
शुद्ध परिणमन व शुद्ध द्रव्यों की गति...
इन्द्रिय व यंत्रों से न दिखाई देती...(8)...
ये सभी विषय हैं सर्वज्ञ ज्ञान गम्य...
आगम व अनुभव से जाने छद्मस्थ जीव...
प्रयास कर रहा है आधुनिक विज्ञान...
आगम से 'कनक' को हो रहा है ज्ञान...(9)...

पाड़वा, दिनांक 10.07.2015, रात्रि 10.00

(यह कविता श्रमण मुनि सुविज्ञसागर जी की भावना एवं महान् वैज्ञानिक फ्रित्जॉफ काप्रा की महान् कृति ''भौतिकी का सतपथ'' (Tao of Physics) से प्रेरित व प्रभावित है।)

शरीर रहित हो मेरी उपलब्धि

(शरीर रहित होने से अनंत समस्याओं का नाश व अनंत उपलब्धि)

(चाल : अच्छा सिला दिया....., तुम दिल की धड़कन....., झिलमिल सितारों का.....)

कभी ये उपलब्धि मेरी महान् होगी...शरीर रहित दशा (मेरी) होगी...
समस्त समस्याओं से मुक्ति मिलेगी...सच्चिदानंद अवस्था होगी...(ध्रुवपद)...

शरीर रहित मैं तब बनूँगा...सर्व कर्मों से जब मुक्त होऊँगा...
अनंत गुण आत्मा के प्राप्त करूँगा...अनंत समस्याओं से मुक्त होऊँगा...(1)...

अनादि काल से मैं देह युक्त हूँ...अष्ट कर्मों से भी मैं युक्त हूँ...
इन्द्रियाँ व मन जिससे बनते...इनके कारण मैं दुःख भोगता...

शरीर के कारण मुझे लगती भूख...सर्दी-गर्मी-रोग व प्यास...
जन्म-मरण व बुढ़ापा रोग...विभिन्न आकृति-सुभग-दुर्भग...(2)...

विचित्र होती इन्द्रियों की कुप्रवृत्ति...भोग-उपभोग-काम में प्रवृत्ति...
जिससे अनेक समस्याएँ होती...पापों के कारण दुर्दशाएँ होती...

मन तो मनमानी करे अनेक...राग-द्वेष-मोह व कामासक्त...
संकल्प-विकल्प-संक्लेश करता...मन को वश करना दुरूह होता...(3)...

इन सब कारणों से विविध काम होते...असि मसि कृषि वाणिज्य होते...
शिल्प-सेवा व पशुपालन होते...चोरी-ठगी व मिलावट होते...

हिंसा झूठ कुशील परिग्रह होते...आक्रमण युद्ध बलात्कार होते...
क्रोध मान माया लोभ मोह आदि...दुःख शोक दैन्य रोग भयादि...(4)...

माता-पिता भाई बंधु शत्रु मित्रादि...अपना-पराया भेद-भाव घृणादि...
लेन-देन धनी-गरीब मालिक-दास...सर्व समस्या का जनक शरीरादि...

इनसे कर्मबंध होते अनंत...जिससे मिलते हैं दुःख अनंत...
शरीर अभाव से इनका होगा अंत...आत्मा/(कनक) को मिलेगा सुख अनंत...(5)...

पाड़वा, दिनांक 11.07.2015, मध्याह्न 2.05

परम पॉजिटिव थिंकिंग की कविता

मोक्षमार्ग एवं मोक्षमार्गी ही सर्वश्रेष्ठ-सर्वज्येष्ठ

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : आत्मशक्ति से ओतप्रोत....., तुम दिल की धड़कन में....., शायद मेरी.....)

मोक्षमार्ग है अनुत्तर...इससे श्रेष्ठ कुछ भी नहीं...
इसीलिए ही मोक्षमार्गी सम...अन्य कोई श्रेष्ठ नहीं...

धार्मिक बिना न धर्म होता...अतएव मोक्षमार्गी होते धर्म...
इसीलिए सूरी पाठक साधु...होते हैं जीवन्त धर्म...(1)...

अरिहन्त-सिद्ध दोनों होते हैं...साक्षात् ही मोक्ष स्वरूप...
अरिहन्त तो भाव-मोक्ष स्वरूप...सिद्ध होते साक्षात् मोक्ष...

मोक्षमार्ग व मोक्ष दोनों...होते है कार्य स्वरूप...
मोक्षमार्गी व अरिहन्त-सिद्ध...होते हैं कर्त्ता स्वरूप...(2)...

मोक्षमार्ग है परिपूर्ण व...नैकायिक व सामायिक...
संसुद्ध व शल्य रहित...सिद्धिमार्ग व शांतिमार्ग...

श्रेणीमार्ग व मुक्तिमार्ग...प्रमुक्तिमार्ग निर्जरामार्ग...
निर्वाणमार्ग व सर्वदुःख...परिहारमार्ग व सौख्यमार्ग...(3)...

अवितथमार्ग यह उत्तममार्ग...मान-माया व मिथ्या रहित...
हिंसा परिग्रह व चोरी रहित...ब्रह्मचर्य गुण सहित...

क्षमा-मार्दव-आर्जव युक्त...तप त्याग व संयम सहित...
अनंत ज्ञान दर्शन सुख...वीर्यादि अनंत गुण युक्त...(4)...

स्व-पर-विश्व सहित...अतएव ही मंगलभूत...
आध्यात्मिक उच्चता युक्त...अतएव ही सर्वश्रेष्ठ...

राजा-महाराजा व चक्री से...सेवित अतएव सर्वज्येष्ठ...
मोक्षमार्ग व मोक्षमार्गी...अतएव ही सर्वश्रेष्ठ-ज्येष्ठ...(5)...

मुमुक्षु श्रमण होते हैं...विश्वहितकारी व विश्वसंत...
उदार पावन समता युक्त...आध्यात्मिक वैभव सहित...

दीन-हीन व अहंकार रिक्त...आत्मगौरव व सोऽहं युक्त...
अतएव ही 'कनकनन्दी'...बना है श्रमण आध्यात्म युक्त...(6)...

नन्दौड़, दिनांक 24.07.2015, अपराह्न 6.25

(यह कविता गौतम गणधर रचित वृहत् यति प्रतिक्रमण से भी प्रेरित है।)
सन्दर्भ-गौतम गणधर सृजित वृहत् यति प्रतिक्रमण से.....

इच्छामि भंते! इमं णिग्गंथं पवयणं अणुत्तरं, केवलियं, पडिपुण्णं, णेगाइयं, सामाइय, संसुद्धं, सल्लघट्टाणं, सल्लघत्ताणं, सिद्धिमग्गं, सेढिमग्गं, खंतिमग्गं, मुत्तिमग्गं, पमुत्तिमग्गं, मोक्खमग्गं, पमोक्खमग्गं, णिज्जाणमग्गं, णिव्वाणमग्गं, सव्वदुक्खपरिहाणिमग्गं, सुचरियपरिणिव्वाण-मग्गं, अवित्तहं, अविसंति-पवयणं, उत्तमं तं सद्दहामि, तं पत्तियामि, तं रोचेमि, तं फासेमि, इदोत्तरं अण्णं णत्थि, ण भूदं, ण भविस्सदि, णाणेण वा, दंसणेण वा, चरित्तेण वा, सुत्तेण वा, इदो जीवा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिणिव्वाणयंति, सव्वदुक्खाणमंतं करेंति, पडि-वियाणंति, समणोमि, संजदोमि, उवरदोमि, उवसंतोमि, उवहि-णियडि-माण-माया-मोस-मिच्छाणाण-मिच्छादंसण-मिच्छाचरित्त च पडिविरदोमि, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेमि, जं जिणवरेहिं पण्णत्तं.....

पञ्चम काल में अधिकांश जन होते हैं अज्ञानी-मोही

(चाल : तुम दिल की धड़कन....., सायोनारा.....)

अनंत ज्ञान यदि होता है सर्वज्ञों में...
अनंत अज्ञानी भी होते हैं विश्व में...
प्रतिपक्षी द्रव्य-गुण-पर्यायें होते...
श्रेष्ठ-ज्येष्ठ-कनिष्ठ व निकृष्ट होते...(1)...
अस्ति होने पर नास्ति अवश्य होगा...
सत्य होने पर असत्य अवश्य होगा...
सुज्ञानी होने पर कुज्ञानी भी होते...
बहुज्ञानी होने पर अल्पज्ञानी भी होते...(2)...
पूजक होने पर पूज्य होंगे अवश्य...
संसार होने पर मोक्ष होगा अवश्य...
पुण्य-पाप व भव्य-अभव्य होते...
विरोधी गुण युक्त विचित्र द्रव्य भी होते...(3)...
कुछ अधिक आठ वर्ष में कोई होते सर्वज्ञ...
तीन लोक के गुरु होते हैं सर्वज्ञ...
अस्सी वर्ष में भी कोई न जाने स्वयं को...
हिताहित विवेक शून्य न जाने सत्य को...(4)...
साक्षरी भी निरक्षरी से (कोई) होता अज्ञानी...
धनी-मानी-प्रसिद्ध भी (कोई) होता कुज्ञानी...
स्वस्थ-सुन्दर-बलवान् भी (कोई) होता है मूर्ख...
आधुनिक फैशनी भी (कोई) होते हैं मूर्ख...(5)...
मूर्ख कालिदास समान (कोई) होना संभव...
स्व-पर-अहितकारी बुद्धिजीवी (होना) संभव...
नीति-नियम-सदाचार रहित भी होते...
ज्ञान का दिखावा करे, अज्ञानी भी होते...(6)...
अल्पज्ञ सदाचारी-नीतिवान् भी होते...
सामान्य ज्ञानी होकर भी उचित कार्य करते...
दैनिक जीवनचर्या में भी आदर्श होते...

अनुभव ज्ञान से सच्चा-अच्छा काम करते...(7)...
आगम में वर्णन है (इस) पञ्चम काल में...
अज्ञानी-मोही जीव होंगे अधिसंख्य में...
अनुभव में भी यह सत्य (होता) प्रतीत...
'कनक' को इसी से शिक्षा मिले सतत...(8)...

पाड़वा, दिनांक 09.07.2015, रात्रि 10.35

''स्वस्थ भाव से स्वस्थ तन व मन''

(राग : छोटी-छोटी गैया.....)

शरीर स्वस्थ हेतु मन स्वस्थ चाहिए, मन स्वस्थ हेतु भाव स्वस्थ चाहिए।
सम्यक् आहार विहार निवास चाहिए, योगासन ध्यान व श्रम चाहिए।। (1)

उत्तम भाव से मन होता है स्वस्थ, स्व-पर सम्मान से भाव उत्तम।
उत्तम गुणों का सम्मान आत्मसम्मान, पर उत्तम गुणों का सम्मान पर सम्मान।। (2)

इसी से स्व उत्तम गुणों का होता विकास, जिससे अनुभव होता सुखद व उल्लास।
(जिससे) उदासीनता तनाव होते है दूर, पॉजिटिव थिंकिंग का भी होता संचार।। (3)

स्व-दोषों का भी परिष्कार करे अवश्य, दोषों को लेकर तनाव न करे विशेष।
दूसरों का उपकार भी अवश्य करे, सेवा सहयोग व दान भी करे।। (4)

आध्यात्मिक उपलब्धियों का गौरव करे, उसके विकास हेतु भी प्रयत्न करे।
अन्य की प्रगति से भी प्रसन्न बने, ईर्ष्या द्वेष घृणा व तृष्णा न करे।। (5)

सादा जीवन व उच्च विचार करे, शाकाहार शुद्ध स्वास्थ्यकर भोजन करे।
स्वच्छ प्राकृतिक स्थान में निवास करे, शारीरिक श्रम भ्रमण व ध्यान भी करे।। (6)

निन्दा झगड़ा विवाद कभी न करे, हित-मित-प्रिय सत्य वचन बोले।
धन्यवाद दे व क्षमा-ऋजुता धरे, 'कनक' स्वास्थ्य सुखकारी जीवन जीये।। (7)

पाड़वा, दिनांक 19.07.2015, अपराह्न 5.21

इस विषय के विशेष परिज्ञान हेतु कविकृत कृतियाँ-

1. धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान (1988)।
2. आदर्श विचार-आहार-विहार (1992)।
3. शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक स्वास्थ्य के विविध आयाम (2006)।

4. स्वास्थ्य गीताञ्जलि (2012) आदि कृतियों का अध्ययन करें।
5. I.Q. < E.Q. < S.Q. विभिन्न क्रम विकासवाद एवं परम आध्यात्मिक विकासवाद।

आदर्श स्वस्थ सुखमय जीवन

(चाल : तुम दिल की धड़कन....., चन्दा मामा दूर के.....)

कितना प्यारा है सादा जीवन...हँसी-खुशी का स्वस्थ जीवन...
सरल-सहज व शांत जीवन...महान् लक्ष्य से युक्त जीवन...(स्थायी)...

शरीर-इन्द्रिय-मन व आत्मा...जब ये सबल व होते साता...
तब ही जीवन होता है प्यारा...अन्यथा जीवन होता दुश्वारा...

शरीर से इन्द्रियाँ श्रेष्ठ होती...इन्द्रियों से मन की अधिक शक्ति...
मन से अधिक है आत्मशक्ति...परस्पर सहयोगी होती ये शक्ति...(1)

आत्मा अस्वस्थ तो मन अस्वस्थ...जिससे इन्द्रियाँ होती अस्वस्थ...
इन सबसे होता तन अस्वस्थ...जीवन होता अस्वस्थ-त्रस्त...

आत्मा स्वस्थ होता सत्य समता से...महान् लक्ष्य सह उदारता से...
क्षमा सहिष्णुता व शुचि दया से...दान सेवा सहयोग त्याग से...(2)...

इसी से मन भी होता शांत...संकल्प-विकल्प-संक्लेश अंत...
मन की एकाग्रता-क्षमता बढ़ती...जिससे इन्द्रियाँ भी शांत होती...

फैशन-व्यसनों से भी हो दूर...सादा जीवन होता उच्च विचार...
स्वास्थ्यकर शुद्ध शाकाहार होवे...प्राकृतिक शांत निवास होवे...(3)...

स्वावलंबन व श्रमशील जीवन...आडम्बर रहित सरल जीवन...
भ्रमण-प्राणायाम व योगासन...यम-नियम व ध्यान-अध्ययन...

प्राकृतिक जीवन आहार निवास...स्वावलंबनशील सक्रिय जीवन...
सादा जीवन सह उच्च विचार...सुखमय जीवन के होते आधार...(4)...

इनसे शरीर स्वस्थ सबल होता...महान् कार्य हेतु सहयोगी बनता...
जीवन सुखमय आदर्श होता...'कनक' आत्मिक सुख चाहता...(5)...

पाड़वा, दिनांक 13.07.2015, मध्याह्न 1.27 व 3.20

मैं आडम्बर क्यों नहीं करता?!

(चाल : छोटी-छोटी गैया....., तुम दिल की धड़कन में.....)

कुछ भी न करना (है) मुझे बाह्य आडम्बर...
जिससे उत्पन्न होते है बहु बवण्डर...
समता-शांति का भी होता विनाश...
ध्यान-अध्ययन भी न होता विशेष...(1)...

धर्म तो आत्मा का निज शुद्ध-स्वभाव...जो है समतामय शांति स्वभाव...
आडम्बर है अशुद्ध अनात्म काम...जिससे होते उत्पन्न दुःख विभिन्न...
आडम्बर का अंतरंग कारण (होता) दंभ...दंभ प्रदर्शन हेतु (होता) बाह्य आडम्बर...
इसी हेतु धन-जन-साधन चाहिए...समय-शक्ति-बुद्धि व श्रम चाहिए...(2)...

मञ्च माईक पण्डाल व माला चाहिए...विज्ञापन होर्डिंग व पत्रिका चाहिए...
यान-वाहन-भोजन-सम्मान चाहिए...आत्मदर्शन बिन प्रदर्शन चाहिए...
मैं हूँ वीतरागी निर्ग्रंथ श्रमण...अंतरंग-बहिरंग परिग्रह शून्य...
आडम्बर हेतु दोनों परिग्रह चाहिए...अतः मुझे आडम्बर नहीं चाहिए...(3)...

आडम्बर हेतु याचना दबाव होता...धनी-गरीब में भेद-भाव भी होता...
अपेक्षा-उपेक्षा व प्रतीक्षा भी होती...अशांति-विषमता-विकथा भी होती...
संकल्प-विकल्प व संक्लेश होते...ध्यान-अध्ययन-चिन्तन न होते...
नवीन शोध-बोध-लेखन न होते...'कनकनन्दी' अतः आडम्बर से बचते...(4)...

पाड़वा, दिनांक 08.07.2015, मध्याह्न 2.55

आचार्य कनकनन्दी जी ससंघ के आदर्श

आचार्य कनकनन्दी गुरुदेव की स्व-प्रवृत्ति/संघ पद्धति

रचयित्री-श्रमणी आर्यिका सुवत्सलमती

(चाल : ओ रात के मुसाफिर....., परवर दिगारे आलम....., मधुवन के मंदिरों में....., मुझे इश्क है तुझी से.....)

कनकनन्दी गुरुवर...जग से हैं ये निराले...
उनके अनुभवों से...लाभान्वित है सारे...(ध्रुवपद)...

संक्लेश-मनमुटाव को...संघ में न है स्थान...

ख्याति-प्रसिद्धि-याचना...लाभ का न है काम...
सहज-सरल वृत्ति...न विभावों में प्रवृत्ति...
शांत-गंभीर वृत्ति...गुरुदेव की प्रकृति...कनकनन्दी...(1)...

कोई आये तो है स्वागत...जाये तो है आशीष...
विपरीत में तटस्थ...समता का भाव नित्य...

अध्यात्म की है चर्चा...मैं को पाने की वार्ता...
किसी का न मैं हूँ कर्त्ता...स्व-कर्म का ही भर्ता...कनकनन्दी...(2)...

बड़े-छोटे का न भेद...मत-पंथ का न भेद...
क्षुद्र भावों का उच्छेद...वसुधैव कुटुम्बकम्...

वैज्ञानिक हैं संत...नित शोध-बोध करते...
विश्लेषण आत्मा का ही...दुःख-शोक-क्लेश हरते...कनकनन्दी...(3)...

चक्री से भी महान्...देवेन्द्र से भी पूज्य...
सुवत्सल भाव मुख्य/(सत्वेषु मैत्री भाव)...मुक्ति सुख ही लक्ष्य...

गुरुवर मेरी मुस्कान...गुरुदेव ही आधार...
स्वाभिमान आप ही हो...मम प्राण प्यारे गुरुवर...कनकनन्दी...(4)...

पाड़वा, दिनांक 06.07.2015, प्रातः 6.36

मैं पापी-दोषी की भी निन्दा न करूँ

(चाल : छोटी-छोटी गैया....., तुम दिल की धड़कन.....)

पापी से भी पापी जीवों की, निन्दा न करूँ मैं किसी की।
यथा सर्वज्ञ हितोपदेशी तीर्थंकर, न निन्दा करते है किसी की।।

जानते हैं सभी ज्ञेयों को, बोलते है यथार्थ सत्य को।
सभी भाषा में भी वे बोलते, राग द्वेष मोह रिक्त ही बोलते।।

यथायोग्य मैं (तथा) करूँ प्रवृत्ति, ईर्ष्या द्वेष घृणा से होकर निवृत्ति।
सुधार हेतु मैं करूँ भी उपदेश, विधेयक परक ही हो विशेष।।

अयोग्य को भी न करूँ उपदेश, जो न माने कभी हितोपदेश।
अन्य के कारण न बनूँ मैं दोषी, डॉक्टर न बने रोगी सम रोगी।।

निन्दा में होता है अहंकार, स्वयं को श्रेष्ठ बनाने का विचार।
अन्य प्रति होती (है) ईर्ष्या व घृणा, जिससे होती पापों की रचना।।

वाद-विवाद व कलह होते, संक्लेश व द्वंद्व भी चलते।
भेदभाव, विघटन होते, स्व-पर भी अहित हो जाते।।

सुधार न पापी (दोषी) का भी होता, स्वयं का अहित भी होता।
समता-शांति भी नशती, गंभीरता-शालीनता लोप होती।।

मन में अस्थिरता भी हो जाती, शरीर में पीड़ा उत्पन्न होती।
ध्यान-अध्ययन लेखन न होते, आत्मविश्वास-धैर्य घट जाते।।

निन्दा भी है असत्य व हिंसा, पर पृष्ठ माँस भक्षण सम हिंसा।
मेरा शुद्ध स्वभाव नहीं पर निन्दा, अतः 'कनक' न करे परनिन्दा।।

पाड़वा, दिनांक 18.07.2015, रात्रि 10.12

आचार्यश्री कनकनन्दी जी के प्रबुद्ध/श्रेष्ठ शिष्य-वर्ग

श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव द्वारा सृजित ''बगिया की फुलवारी''

(तर्ज : दुनिया बनाने वाले, क्या तेरे मन में समाई.....)

अनुभवदानी/अनुभवधारी गुरुवर, होऽऽऽ 2
क्या तुमने रचना रचाई...
विज्ञानी की बगिया सजाई...
तूने ज्ञान की ज्योति जलाई/तूने ज्ञान की ज्योत जगाई।।टेक।।

सोहनराज जैसे ज्ञानी है शिष्य
पारसमलजी तेरे आध्यात्मिक शिष्य
प्रभात जैसे विज्ञानी शिष्य-2
सुशीलजी जैसे सरल शिष्य
धीरे से मुस्काते, देखो...2 कच्छारा विज्ञानी भाई
विज्ञानी की बगिया सजाई...
तूने...ज्ञान की भक्ति जगाई
तूने ज्ञान की ज्योत जलाई...।।अनुभवदानी।।...(1)

श्यामलाल जी गोदावत नम्र विज्ञानी
निर्मला देवी भी है, सरल सुज्ञानी
अनुवाद का काम कराये प्रद्युम्न भाई...2
जिनोम पे काम कराये शैलेन्द्र भाई
वैयावृत्ति में ही देखो...2 खेतानी ने संपत्ति लगाई
ज्ञान की भक्ति जगाई/तूने ज्ञान...अनुभवधारी गुरुवर...(2)
आहारदानी आशा खुशपाल भाई
मणिभद्र दीपेश मयंक सेवाभावी
संजय मुकेश निःस्वार्थ सेवी...2
दर्शना अजय व सोहन भाई
खेतानी परिवार करे, हाँ...2 साधु चिकित्सा सारी
विज्ञानी की बगिया सजाई
तूने ज्ञान की ज्योत जलाई
तूने विज्ञानी...अनुभवधारी ऋषिवर होऽऽऽ 2
क्या तुमने रचना रचाई...
तूने...विज्ञानी की बगिया सजाई...(3)

श्रमण गुरुवरश्री कनकनन्दी जी की सत्यवाणी

सृजयित्री-श्रमणी आर्यिका सुवत्सलमती

(चाल : छोड़ों कल की बातें.....)

छोड़ों अज्ञान की बातें...अज्ञान की बात अनादि...
श्रमण गुरुवर कनक की...सुनो सत्यवाणी...
हे! वैश्विकवासी...हे! जगत्वासी...(ध्रुव)...
अपने पुरातन भ्रमों को...हम तोड़ चुके हैं...
क्यों देखे वह भूतकाल...जो छोड़ चुके हैं...
चाँद मंगल तक जा पहुँचा है...आज जमाना...
हमें तो मोक्ष महल तक...है पहुँचना...
नया शोध है, नया बोध है...बनना है आतमज्ञानी...हे! वैश्विक...(1)...
कनक सूरी मन से परे...सत्य ही सोचे...

वाद-विवाद-संक्लेश...सब छोड़ चुके है...
विभाव भावों से भी इनका...नहीं है नाता...
आत्म स्वभाव में ही सतत...रमण करे है...
सरल स्वभावी वैज्ञानिक है...ये गुरु उदारभावी...गुरु आतमज्ञानी...(2)...

आओ हम सब आत्म तत्त्व...'मैं' को ही जाने...
अपने द्वारा अपने में ही...'मैं' को पाये...
आदिनाथ से वीर प्रभु की...इस भूमि पर...
अपनी अनंत आत्मशक्ति...को जगाये...
नवाचार है नव दृष्टि है...बनेंगे आतमज्ञानी...हे! वैश्विकवासी...(3)...

कतिसौर, दिनांक 03.07.2015, मध्याह्न

कनक गुरुकुल की शिक्षा पद्धति...

-श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

(चाल : मेरे देश की धरती.....)

श्रीसंघ कनक की शिक्षा पद्धति...बनाती ज्ञानी-गुणी...श्रीसंघ कनक की...(स्थायी)...

यहाँ नित स्वाध्याय चलता है...जिससे होता मौलिक ज्ञान...
संस्कार-संस्कृति-आध्यात्मिक...आगम-गणित-विज्ञान...

प्राचीन से लेकर आधुनिक...शोध-बोध-नवाचार ज्ञान...
तन-मन-आत्मा के स्वास्थ्य का...होता है निरन्तर लाभ...श्रीसंघ...(1)...

देश-विदेश के विज्ञानीजन...जिज्ञासा लेकर आते हैं...
जो प्रश्न कहीं पर सुलझे ना...यहाँ शीघ्र समाधान पाते हैं...

चर्चा-वार्ता-संगोष्ठी आदि से...ज्ञान/(बोध) विशिष्ट पाते हैं...
यहाँ से प्रस्थान करके...वैश्विक प्रभावना करते हैं...श्रीसंघ...(2)...

वैश्विक गुरु का चलता-फिरता...विश्व-विद्यालय-गुरुकुल है...
जिसके कुलाधिपति 'कनकनन्दी'...गुरु अभिप्रेरक अनुमोदक है...

अरबों के जन समूह में जो...आध्यात्मिक/(अद्वितीय) श्रुतज्ञानी है...
आनंददायी शिक्षा पद्धति से...'सुविज्ञ' जन-मन रञ्जित है...श्रीसंघ...(3)...

पाड़वा, दिनांक 14.07.2015, रात्रि 9.10

लघु ग्राम नन्दौड़ में एक परिवार द्वारा आचार्यश्री कनकनन्दी जी ससंघ के अपूर्व चातुर्मास की मंगल बेला में हार्दिक स्वागत/वन्दन

रचयित्री-श्रमणी आर्यिका सुवत्सलमती

(चाल : म्हारा हिवड़ा में नाचे मोर.....)

भक्तों ने..किया जयकार...जय हो गुरुदेवा...
बच्चों ने..किया जयकार...जय हो गुरुदेवा...
बदली छाई घनघोर...चमकी बिजुलिया...
आया मौसम..धर्म-ध्यान का...चौमासा है आया/(पाया)...भक्तों ने...(ध्रुव)...

कनकनन्दी श्रीसंघ का...मंगल प्रवेश हुआ है...
चतुर्विध संघ भी देखो...इनके संग है आया...
सुविज्ञ श्रमण आध्यात्मनंदी...सुवत्सल-सुवीक्ष माता...भक्तों ने...(1)...

प्रकृति भी देखो प्रमुदित हुई...हरियाली है छाई...
पर्यावरण ने हरित वर्ण का...दुशाला है ओढ़ा...
आओ भैया..आओ बहना...गाँव के सब जन आओ...भक्तों ने...(2)...

नैसर्गिक है जीवन गुरु का...बाह्य दिखावे से दूर...
पण्डाल-पत्रिका-विज्ञापन...ख्याति-पूजा से दूर...
मौन-साधना..वैश्विक काम...वन-उपवन है भाता...भक्तों ने...(3)...

शांति-समता-सहिष्णुता...दया-क्षमा हैं बहनें...
मृदुता-सरलता-आगमनिष्ठा...आकिञ्चन क्या कहने...
ग्रामों में रहते..मंगल करते...विश्व गुरु कहलाते...भक्तों ने...(4)...

सरल मूर्ति..गंभीर वृत्ति...सामान्य जन न समझे...
अलौकिक इनकी (कनक) प्रवृत्ति...कोई सहज न समझे...
सर्व विधा/(विद्या) के आचार्य है...तो भी विद्यार्थी बने हैं...भक्तों ने...(5)...

नन्दा देवी-प्रवीण कुमार ने...शुभ भाव हैं बनाये...
मनीष-नेहा-जिनेन्द्र-दृष्टि (भी)...मन में अति हर्षाये...
अक्षत भैया..चयन ने भी...अनुमोदना है कीनी...भक्तों ने...(6)...

मीना-जिगना-निशा बहना...पुण्यार्जन हेतु आये...
बाल-गोपाल..ग्रामवासी भी...मन में अति हर्षाये...
देशी-विदेशी शिष्य-भक्त भी...सहयोगी बन आये...भक्तों ने...(7)...

पाड़वा, दिनांक 16.07.2015, मध्याह्न 12.20

वर्ष 2015 के चातुर्मास हेतु नन्दौड़ में मंगल प्रवेश एवं वर्ष 2016 के सीपुर चातुर्मास हेतु आशीर्वाद प्रदान

सत्य-साम्य-सुखामृत 22.07.2015

वैज्ञानिक धर्माचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव का ससंघ मंगल प्रवेश

22 जुलाई, 2015 नन्दौड़ (डूँगरपुर)

अरावली की उपत्यकाओं में अवस्थित वाग्वर अंचल के डूँगरपुर जनपद के ग्राम नन्दौड़ में वैज्ञानिक जैन धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी ने ससंघ मंगल प्रवेश किया। पुनर्वास कॉलोनी, सागवाड़ा से प्रातः विहार कर आचार्यश्री ने रणछोड़धाम की पावन भूमि नन्दौड़ में जैसे ही प्रवेश किया सागवाड़ा क्षेत्र के जैन समाज सहित ग्राम के समस्त समाजों के धर्मानुरागी ग्रामजन, विद्यार्थियों ने पारंपरिक वाद्य यंत्रों एवं मंगल घोष के साथ आचार्य सहित अन्य मुनिवर एवं साध्वियों का अभिनंदन-वंदन करते हुए भावभिना स्वागत किया। प्रकृति ने भी बादलों की हल्की फुंहारों से आचार्यवर का स्वागत किया। आचार्यवर का यहाँ वर्षायोग में मंगल प्रवेश अद्वितीय, अनूठा एवं आडम्बर विहीन है। ग्राम में बसे एकमात्र श्री प्रवीण चन्द्र जैन-नन्दा बेन जैन के परिवार के निमंत्रण को स्वीकार कर आचार्यश्री ने अपने मन में समाहित अन्त्योदय, सर्वजन उत्थान की उदात्त भावना का परिचय दिया।

मंगलाचरण, शब्द सुमन से स्वागत रस्म के पश्चात् आचार्यवर ने धर्मसभा में भारतीय जीवन में ग्रामों के योगदान को रेखांकित करते हुए ग्राम के शुद्ध प्राकृतिक पर्यावरण एवं विशुद्ध संस्कृति को भी विशेष रूप से वर्षायोग में इस ग्राम के चयन का आधार बताया।

आचार्यवर के साथ सागवाड़ा, चितरी, ओबरी, ठाकरड़ा, वरदा सहित अन्य

गाँवों एवं मेवाड़ अंचल से भी गुरुवर के शिष्य-अनुयायी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। ब्रह्मचारीजी ने धर्मसभा का संचालन किया।

ग्रामवासी ग्राम की ही बेटी को आचार्यश्री के संग के साथ एक साध्वी के रूप में देखकर पुलकित हो उठे। सभी ने श्री प्रवीण चन्द्र जैन, मनीष जैन एवं उनके परिवार को वर्षायोग के सफल आयोजन में यथेष्ठ सहकार का आश्वासन दिया।

अंत में आरती एवं आचार्यश्री के आशीर्वाद के साथ धर्मसभा का विराम हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेव द्वारा रचित, संस्कृति-विकृति गीताञ्जली-धारा-34 का विमोचन भी हुआ।

प्रस्तुति

श्री हेमेन्द्र जी भट्ट, भू.पू. अध्यापक

महीपाल विद्यालय, सागवाड़ा

इस मंगलमय चातुर्मास के मंगल प्रवेश के दिन ही गुरुभक्त समर्पित, स्वैच्छिक कार्यकर्त्ता एवं सीपुर अतिशय क्षेत्र के व्यवस्थापक एवं उन्नायक नीतिन जैन का भी नन्दौड़ ग्राम में आगमन हुआ, उनकी प्रबल भावना के कारण वर्ष 2010 में सानंद प्रभावना पूर्वक चातुर्मास हुआ था, तब से लेकर अब तक प्रायः 200 बार से अधिक बार 21 चातुर्मास के लिए निवेदन करते आ रहे है एवं आज 2016 के चातुर्मास हेतु आचार्य श्रीसंघ से स्वीकृति प्राप्त की।

आचार्यश्री ने कहा कि आपकी तीव्र भावना के कारण आपके अतिशय क्षेत्र में विशेष परिस्थिति को छोड़कर 2016 का चातुर्मास होना निश्चित है।

जैन श्रमण का त्याग होता है सांसारिक कुटुम्ब

-आचार्य कनकनन्दी

(चाल : तुम दिल की धड़कन....., आत्मशक्ति से.....)

माता-पिता व भाई-बंधु...होते है सांसारिक कुटुम्बीजन...
स्व-आत्मा ही निश्चय से...होता है आध्यात्मिक जन...(स्थायी)...

भले शरीर के माता-पितादि...होते हैं व्यवहार से...
आत्मा के वे न होते माता-पिता...आत्मा तो है अनादि से...

शरीर के तो हो गये माता...पिता अनादि से अनंत...
अनादि की इसी परंपरा को...अभी तो करना है अंत...(1)...

सचित्त-अचित्त-मिश्र परिग्रह...से भी निवृत्त होते है श्रमण...
श्रमण बनकर पुनः इसी में...जो प्रवृत्त होता वह भ्रष्ट श्रमण...

नवकोटि से जो होता त्याग...वह ही होता यथार्थ त्याग...
त्यागे हुए विषयों में ममत्व करना...नहीं होता है यथार्थ त्याग...(2)...

इसीलिये पूर्व आचार्यों ने...स्व-रचि ग्रंथों में न किया वर्णन...
माता-पितादि के नाम नहीं है...गुरु-शिष्यों का किया वर्णन...

'कनकनन्दी' भी इसी परंपरा को...कर रहा है सदा निर्वहण...
आत्मोपलब्धि निमित्त ही...हो रहा है सदा प्रयत्नवान्...(3)...

सन्दर्भ :-

1. **कथमपि तपश्चरणे गृहीतेऽपि यदि गोत्रादि ममत्वं-करोति तदा तपोधन एव न भवति।** (प्र. सार टीका)
   जब किसी तरह से तप ग्रहण करते हुए अपने संबंधी आदि से ममता भाव करे, तब कोई तपस्वी ही नहीं हो सकता। कहा भी है-
2. **जो सकलणयररज्जं पुव्वं चइऊण कुणई यममत्तिं।**
   सो णवरि लिंगधारी संजमसारेण णिस्सारो।। (प्र. सार क्षेपक)
   जो पहले सर्व नगर व राज्य छोड़ के फिर ममता करे, वह मात्र भेषधारी है, संयम की अपेक्षा से रहित है अर्थात् संयमी नहीं है।

नन्दौड़, दिनांक 25.07.2015, अपराह्न 5.20

निराडम्बर चातुर्मास-छोटागाँव के एक परिवार में!

(आध्यात्मिक श्रमणाचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ का वर्षायोग नन्दौड़ ग्राम में...)

प्रस्तुति-श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

अरावली की सुरम्य उपत्यकाओं में स्थित वाग्वर अञ्चल के लघु ग्राम नन्दौड़ जो कि सरल-सहज-सरस-मधुर-श्रद्धावन्त आबाल वृद्धों से सुशोभित प्राकृतिक

छटाओं से युक्त मनोहर ग्राम है, ऐसे ग्राम के सरल स्वभावी समर्पित धार्मिक दंपत्ति श्री प्रवीण कुमार जी शाह व ध.प. नन्दा देवी परिवार द्वारा वर्ष 2015 का ऐतिहासिक व स्वर्णाक्षरों से लिखने योग्य चातुर्मास कराया जा रहा है जो कि भीड़-आडम्बर-दिखावा के घोर अंधकार में प्रकाश स्तंभ बन पड़ा है। ऐसे शांत-शालीन-समतायुक्त वातावरण में वर्षायोग करने हेतु प.पू. निस्पृही आध्यात्मिक संत प्रवर वैज्ञानिक श्रमणाचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ विराजित है। जिनकी प्रज्ञा-समता-ममता-वात्सल्य से युक्त साधना व ज्ञान-विज्ञान से यह विश्वधरा पुलकित व गौरवान्वित हुई है, ऐसे माँ सरस्वती के वरद पुत्र वैश्विक दृष्टिधारी आचार्यश्री ने चातुर्मास कर्त्ता श्री प्रवीण कुमार व ध.प. नन्दा देवी को यह प्रतिज्ञा कराई कि मेरे श्रीसंघ के पूर्व के नियमानुसार इस चातुर्मास को आडम्बर, दिखावा, भीड़, आमंत्रण, औपचारिकता, पण्डाल, पत्रिका आदि फिजूलखर्ची रहित आदर्श दृष्टि से सम्पन्न कराना है। वर्षायोग स्थापना के दिन ही अञ्चल के 15-20 गाँवों के प्रायः 400 लोग प्रातःकाल से लेकर रात्रि 10.30 तक आसपास के 20-25 कि.मी. की परिधि से पधारे थे, जिनमें कुछ 2 से 3 बार आहारदान, स्वाध्याय निमित्त कार्यक्रम में आये। इस आडम्बर विहीन कार्यक्रम में माला, सम्मान, बोलियाँ आदि न होने से कार्यक्रम समयानुबद्ध, अनुशासित, प्रभावनाकारी, आनंददायी व शिक्षाप्रद रहा। ग्राम नन्दौड़ के अजैन बच्चे-बच्चियाँ नियमित रूप से पढ़ने आ रहे हैं। गुरुदेव सृजित गीत व कविताओं की प्रभावशील प्रस्तुति पाड़वा व नन्दौड़ ग्राम की बच्चियों द्वारा की गई। आचार्यश्री ने स्व-रचित साहित्य आदि देकर पुरस्कार व आशीर्वाद प्रदान किया। ग्राम पाड़वा से लेकर कॉलोनी व नन्दौड़ में गुरुदेव द्वारा सृजित 4 ग्रंथों का विमोचन हुआ।

गुरु पूर्णिमा के निमित्त पधारे कृषि वैज्ञानिक डॉ. एस.एल. गोदावत ने गुरुदेव के व्यापक व्यक्तित्व व कृतित्व पर वक्तव्य देते हुए उनके उदारता, निराडम्बरता, निस्पृहता, अनाग्रहिता आदि गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा व अनुमोदना की। साथ में लंदन से पधारे प्रवासी दंपत्ति के साथ विदेश के नैतिक प्रामाणिक सत्यग्राही प्रगतिशील आदि गुणों की समीक्षात्मक चर्चा वार्ता की। डॉ. कैलाशचन्द्र जैन ने कहा कि गुरुदेव ने अपने जीवन में पूर्व से ही जो वैज्ञानिक दृष्टि से सत्य-तथ्य का शोध करते हुए वृहत लेखन चिन्तन आदि किया है उसे जानने एवं समीक्षार्थे ही आप विदेशी

वैज्ञानिक चैनलों को देखकर निरंतर नवोन्मेष कर प्रगतिशील हैं। मैं स्वयं 1997 से आचार्यश्री का भक्त हूँ, तो भी मैं आचार्यश्री के व्यापक दृष्टिकोण को सही नहीं समझ पाया अपितु कुछ दृष्टि से गलत भी समझा, जो कि मैं पूर्णतः 101% गलत था एवं गुरुदेव 101% सही है। ऐसे ही आचार्यश्री की इस अलौकिक वृत्ति को अन्य जन आरंभ में समझ नहीं पाते, यही हम लोगों की कमी है। आचार्य श्रीसंघ की स्वैच्छिक व्यवस्था करने वाले उदार दानी मणिभद्र ने कहा-आचार्यश्री की अयाचक निस्पृह वृत्ति से प्रभावित व भक्तिवन्त होकर हमें व्यवस्था करने में आनंद व शांति प्राप्त होती है। पुनर्वास कॉलोनी के दिनेश जांगा व यशवन्त ने भी आचार्यश्री के प्रति अपनी श्रद्धा व आस्था प्रगट करते हुए अनेक जिज्ञासाएँ व प्रश्न पूछे जिनका योग्य समाधान पाकर वे संतुष्ट हुए एवं आचार्य श्रीसंघ की तन-मन-धन-श्रम-समय से सेवा आहारदान आदि कर धन्यता का अनुभव कर रहे हैं। इसी प्रकार अन्य भी शिष्य भक्त यथायोग्य शक्ति व भक्ति से आचार्य श्रीसंघ की सेवा व्यवस्था में स्वैच्छिक प्रवृत्त हो रहे है जो कि अत्यंत श्लाघनीय, अनुकरणीय, अनुमोदनीय है। जिसके फलस्वरूप धर्म-जिनवाणी-गुरु की प्रभावना हो रही है।

अपने क्रांतिकारी व ओजस्वी प्रबोधन में आचार्यश्री ने उपस्थित शिष्य भक्तों को कहा कि ''झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए शक्ति सुप्त है जागृत करना चाहिए'' यदि हम एक कदम आगे बढ़ाते है तो परमात्मा सौ कदम आगे बढ़ाते है। गुरुदेव ने सभा के माध्यम से समस्त भारतीयों को आह्वान करते हुए कहा कि हमें भीड़-भेड़ व भेड़ियाचाल को छोड़कर मौलिक स्वतंत्र प्रगतिशील बनना है तभी हम वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ सकते हैं। गुरुदेव ने कहा कि यह नन्दौड़ ग्राम नंदनवन बनेगा क्योंकि यहाँ श्रद्धा-भक्ति-ज्ञान-विज्ञान का महायज्ञ चल रहा है। धर्म व समाज में व्याप्त विकृतियों के निरसन हेतु यह प्रायोगिक निराडम्बर चातुर्मास हो रहा है। रूढ़िवादिता छोड़ने का बोध देते हुए श्री गुरु ने कहा कि-

लीक-लीक गाड़ी चले...लीक ही चले कपूत...

लीक छोड़ तीनों चले...शेर-शायर-सपूत...

गुरुदेव ने कहा मैं हर कार्य प्रायोगिक करना चाहता हूँ। हम दाता है भिखारी

नहीं। पद्मिनी स्त्री, राजहंस व दिगम्बर साधु जहाँ विचरण करते हैं, वहाँ सुभिक्ष होता है।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरुदेव ने सिकन्दर व उनके गुरु अरस्तू का उदाहरण बताते हुए गुरु की महिमा व उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए ज्ञान व आत्मशक्ति को पहिचानने हेतु प्रेरित किया एवं सच्चे आध्यात्मिक गुरु का आश्रय लेकर आत्मा से परमात्मा बनने हेतु प्रेरित किया। आचार्यश्री ने कहा विश्व को जीरो देने वाला भारत आज जीरो बना हुआ है एवं आधुनिक विज्ञान आध्यात्म के समीप जा पहुँचा है। विश्व को भरण-पोषण व ज्ञान-विज्ञान-आध्यात्मिक विद्या प्रदान करने वाला भारत आज दीन-हीन-कायर व परमुखापेक्षी बना हुआ है। अतः हमें प्राचीन गौरव से प्रेरणा प्राप्त कर विश्वगुरु की प्राचीन परंपरा का समन्वयात्मक प्रयास करना वर्तमान युग की महती आवश्यकता है। इस दिशा में यह वर्षायोग अपनी ऐतिहासिक भूमिका निर्वहन करेगा ऐसी आशा व भावना करता हूँ। कार्यक्रम में अञ्चल के लोगों की गैदरिंग-जिज्ञासा-उत्साह-भक्ति-प्रभाव आदि से इस आदर्श स्वरूप चातुर्मास की अपूर्व सफलता के लक्षणों को देखकर आचार्य श्रीसंघ अत्यंत अभिभूत व आह्लादित है।

शुभाकांक्षा सह-
श्रमण मुनि सुविज्ञसागर
संघस्थ, आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव
नन्दौड़ (राज.) वर्षायोग, 2015